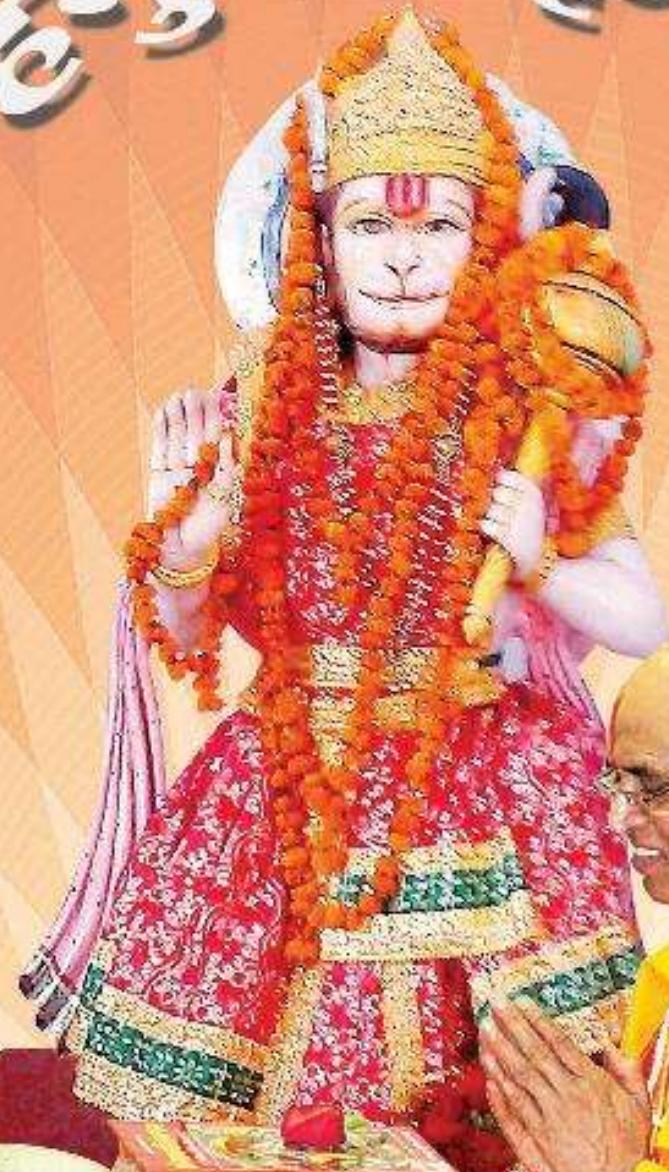


स्मारिका

सिद्ध श्रीयंकरमोहन ऊँ हनुमान मन्दिर पीठ

हनुमत कृष्ण



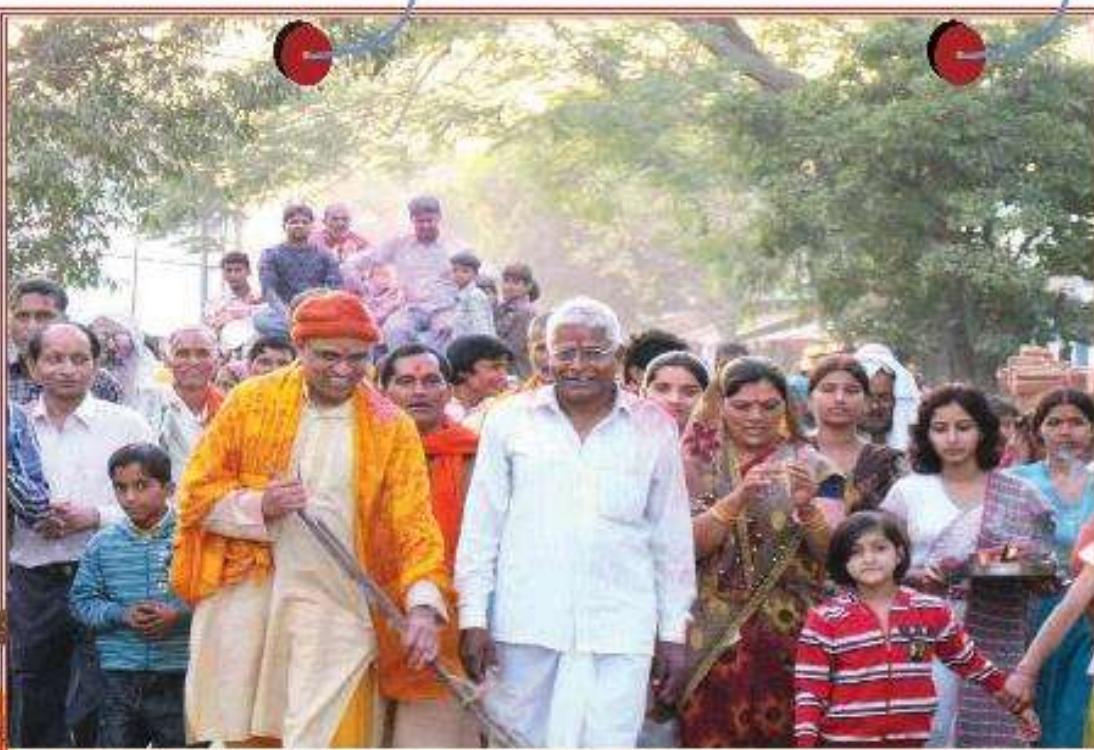
कवन सो काज कठिन जग माही।
जो नहि होइ तात तुम्ह पाही॥

खंडनी प्राज्ञान एवं विद्या

हनुमतपुरम में
बैठे स्वामी
रामदेव, डॉ.
रमाशंकर द्विवेदी,
महाशवित पीठ
के पीठाधीश्वर
स्वामी सर्वानंद
और प्रेमदास
रामायणी महाराज
(बाएं से दाएं)



मंदिर में राम
दरबार की
मूर्ति स्थापना
के अवसर
पर निकाली
गई शोभा
यात्रा के
दौरान
भवितभाव
में लीन
डॉ. रमाशंकर
द्विवेदी



सिद्ध श्री संकटमोहन हनुमान मंदिर पीठ स्मारिका

संरचक
 स्वामी रामानंद सरस्वती
विशेष सहयोग
 डॉ. उमाशंकर
 एके डिवेंटी
 दिलेश पांडेह
 अनुराग डिवेंटी
 ईमेंट सर्वसेना
 पृष्ठ सज्जा
 रंजीत सिंह
 प्रकाशक
 संकटमोहन ट्रस्ट
 हनुमतपुरम्, सुलतानपुर
मुद्रक
 लैंटेंट एंड क्रिएशन, लखनऊ

सहयोगी संस्था:

International Society for Spiritual
 Advancement (ISSA)
 11201 Minstrel Tune Dr. Germantown
 MD, 20876 (USA)
<http://www.sfsai.org>
 Phone: (847) 877-4258
 E-mail: issa.ramanand@gmail.com

अनुमतिका

○ संदेश : न्यायमूर्ति डीपी सिंह	4-5
○ हनुमान मंदिर पौठ : एक परिचय	6-11
○ वैज्ञानिक संत डॉ. रमाशंकर डिवेंटी	12-15
○ आशीर्वचन	16-19
सर्वानंद सरस्वती जी महाराज अद्वैतानंद जी महाराज महंत नृत्यगोपाल दास जी महाराज ○ भक्तों के अनुभव	20-49
दिलेश पांडेह, डॉ. उमाशंकर, जय नाराहण तिवारी,	

आमुख

आज की आपाधापी की जिदगी व गौतिकतावाद की पराकाशा के दीर गे आध्यात्मिकता के प्रति लोगों का सज्जान कम होता जा रहा है। जबकि सब यह है कि ज्यों-ज्यों मनुष्य अध्यात्म से जुड़ा जाता है, त्यों-त्यों उसकी सोच सारांश की नश्वर वस्तुओं व व्यवित्रियों से दूर होती जाती है और यह देखत वही ओर अग्रसर हो जाता है। दुनिया में ऐसे विलो लोग हैं जिन्हें ईश्वर ने इस नजरिये से साक्षम बनाया है। सामान्य तौर पर सम्पन्नज्ञा यीं जिदगी जीने वाले लोग भगवान को करीब-करीब गुला सा देते हैं। उन्हें ईश्वर की याद तभी आती है जब वह स्वयं या उनके परिजन संकट ने होते हैं। कलियुग के इस दीर में कबीरदास का यह दोहा, 'दुर्घ ने सुमिरन सब करै, सुख ने करै न कोय/ जो सुख ने सुमिरन करे, दुख काहे क्व सोय...' पूरी तरह सब साधित होता दिखाई देता है। कोई अकृत भन संगपटा का गालिक बनकर अपने को भट्टी का सबसे शक्तिशाली व्यक्ति मान बैठा है तो कोई अपनी हैसियत करेंगे। अरबों में करने के लिए कोई भी हथकंडा अपनाने से परहेजा नहीं कर रहा है। ऐसे ने यदि किसी व्यक्ति ने मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम (बड़े सरकार) और भगवत शिरोगणी हनुमान को अपना साथ जीवन समर्पित कर उनके दिखाए सास्ते पर चलना ही अपना जीवन दर्शन मान लिया हो ऐसे व्यक्तित्व को देखत वही संज्ञा देता अविदायोवित न होगा।

उत्तर प्रदेश के सुलतानपुर जनपद ने जन्मे तथा राजधानी लखनऊ ने उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाट आज अमेरिकी सरकार के वैज्ञानिक डॉ. रमाशंकर डिवेंटी पर भगवान सम व हनुमान जी की बधाई दी ही कृपा ही है। राम भक्त हनुमान जी ने प्रति छात्र जीवन से शुद्ध हुई उनकी निकटता आज चरण पर है। वे अमेरिका ने इसे हुए भी शुद्ध शाकाहारी हैं और न सिर्फ रोज सुंदरकाण्ड का पाठ करते हैं बल्कि लाखों लोगों को भी हनुमान जी की आशधन करने व हर नंगलपार को सुंदरकाण्ड का पाठ करने के लिए प्रेरित करते हैं। डॉ. डिवेंटी ईश्वर की भक्ति में इतना लीन है कि उन्हें अमेरिकी वकारीध मी अस्यात्मा के पश्च से न डिगा सकती। अपनी जन्मगृही से बेहट लगाय सखने वाले डॉ. डिवेंटी ने करीब 12 साल पहले पैरुक गांव पिपरी साईनाथपुर (डनुगतपुर) सुलतानपुर में श्री संकटमोहन डनुमान मंदिर की स्थापना करवाई थी जिसमें देशभाव के दर्जनों सत एवं गहाला भी शामिल हुए थे। उनकी इच्छा के अनुरूप इस हनुमान मंदिर से जुड़े रानी पहलुओं व हनुमान नवतों के विवारों को समाहित करते हुए हनुमत कृपा स्मारिका प्रकाशित की जा रही है। आशा है कि गणतजनों को स्मारिका ने प्रकाशित सामग्री से प्रेरणा मिलेगी और वे जीवन को सफल बनाएंगे।

○ अनिल डिवेंटी, अशोक डिवेंटी, आराधना, अनुराग डिवेंटी, ईमेंट सर्वसेना, शेष नारायण पांडेह, दधाराम अटल, डॉ. पंके सेठ, डॉ. एसएन श्रीवास्तव, डॉ. एससी राध, डॉ. विनोद जैन, डॉ. वीबी प्रताप, रमेश वादव, इंद्रजीत सिंह, मिहिलेश शर्मा, डॉ. प्रकाश चंद्र जोशी, जटप्रकाश बालाकृष्णन, अपूर्व शंकर डिवेंटी, अभीष्ट शंकर डिवेंटी	50-53
○ अमेरिका में सुंदरकाण्ड की गूंज	



MESSAGE

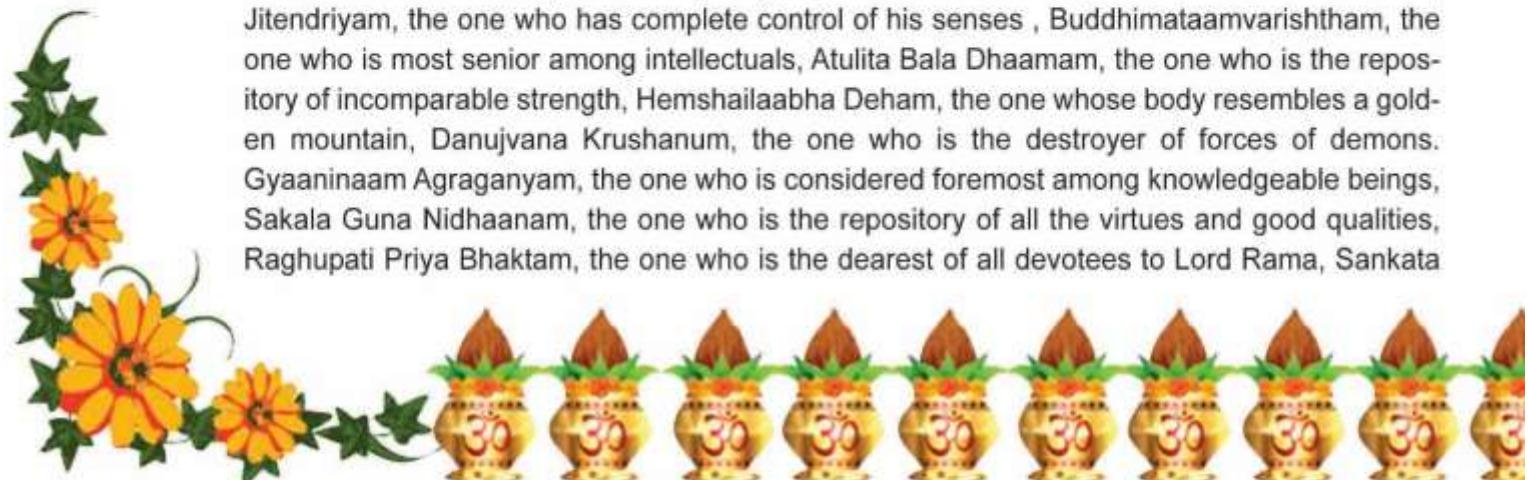
Shri R. S. Dwivedi, a childhood friend of mine is a spiritual person serving in United States Food and Drug Administration (USFDA). His native place is Hanumat Puram, District. Sultanpur in the Uttar Pradesh (India). His wife, Smt Aruna Dwivedi is also a true Indian lady not only in behavior, but also in quality. As I recollect while I was studying in Government Inter College, Faizabad (Uttar Pradesh), Shri Dwivedi was an assertive, clear minded, intelligent, sharp and laborious student having religious sentiments. Hanuman Ji is known as Protector of Ayodhya. Lord Rama while leaving to take a final dip in the River Sarayu, put his crown on the head of Hanuman Ji and requested to look after Ayodhya. It is stated that after Shri Ram's departure Sree Hanuman Ji became the guardian of Ayodhya. Being studied at Faizabad/Ayodhya Shri R. S. Dwivedi got faith in Hanuman Ji. I felt proud when I came to know that he is installing a deity of Hanuman Ji at his native place. He in true spirit believe in..."sukha dukhe same' kritva labha labhou jaya jayou tatho yuddhaya yujyasva naivam papam avapsyasi".... May God Bless him with all good quality and success and pray to Hanuman Ji to help him and his family with all prospects and peace in life.

Needless to say that Sree Hanuman Ji is the Central character in the Epic Ramayana. When Indra by his Vazra struck Hanuman Ji's jaw during his childhood (being called Hanu 'Jaw') means a person one with disjaw. In some text it is mentioned as Hanuruha. He took birth with the Blessings of Lord Shiva. He is also known as Rudra Avatar, i.e. part and parcel of Lord Shiva. Keshri, the father fought along with Rama against Ravana.

In different texts different names have been given, Sree Hanuman Ji viz. Manojavam, the one who is swift as wind, Maarutatulyavegam, the one who has a speed equal to the wind God, Jitendriyam, the one who has complete control of his senses , Buddhimataamvarishtham, the one who is most senior among intellectuals, Atulita Bala Dhaamam, the one who is the repository of incomparable strength, Hemshailaabha Deham, the one whose body resembles a golden mountain, Danujvana Krushanum, the one who is the destroyer of forces of demons. Gyaaninaam Agraganyam, the one who is considered foremost among knowledgeable beings, Sakala Guna Nidhaanam, the one who is the repository of all the virtues and good qualities, Raghupati Priya Bhaktam, the one who is the dearest of all devotees to Lord Rama, Sankata



JUSTICE DEVI PRASAD SINGH



Mochana, the one who liberates from dangers/troubles.

In the 3rd chapter of Kishkindha Kaanda of Valmiki Ramayana, Rama describes many attributes of Hanuman's personality and set him Ablest sentence maker, Knower of all Vedas and Scriptures, Scholar in nine schools of grammars, possessing faultless speech and facial features.

In Rigveda the word 'Vrsakapi' used as an epithet for Hanuman. The orientalist theorized that Hanuman was a proto-Dravidian deity, and the name "Hanuman" is a Sanskritization of the Old Tamil word Aan-mandhi ("male monkey"). Hanuman is mentioned as an avatar of Shiva or Rudra.

Hanuman became more important and came to be portrayed as the ideal devotee (bhakta) of Rama. His characterization as a lifelong brahmachari (celibate). The belief that Hanuman Ji's celibacy is the source of his strength became popular among the wrestlers in India. Anjana and Kesari performed intense prayers to Shiva to get a child. Pleased with their devotion, Shiva granted them the boon they sought. Hanuman Ji, in another interpretation, is the incarnation or reflection of Shiva himself. Hanuman Ji is often called the son of the deity Vayu; several different traditions account for the Vayu's role in Hanuman's birth. One story that when Anjana was worshiping Shiva, the King Dasharatha of Ayodhya was also performing the ritual of Putrakama yagna in order to have children. As a result, he received some sacred payasam "kheer" to be shared by his three wives, leading to the births of Lord Rama and his three brothers. Another part of the story is that by divine ordinance, a kite snatched a fragment of that payasam and dropped it while flying over the forest where Anjana was engaged in worship. Vayu, the Hindu deity of the wind, delivered the falling payasam to the outstretched hands of Anjana, who consumed it. Hanuman Ji was born to her as a result. Another tradition says that Anjana and her husband Kesari prayed Shiva for a child. By Shiva's direction, Vayu transferred his male energy to Anjana's womb. Accordingly, Hanuman Ji is identified as the son of the Vayu or Vayu Putra. Hanuman Ji is still to be a living deity for all times to come. Apart from Blessing of Maa Sita in the Asoka Vihar, he himself made a prayer to Lord Rama to remain alive so that he may look after his Bhaktas and keep on worshiping Lord Rama round the clock. Hanumanji may not be narrated in few pages or words. The fact remains that he is a living God to Bless His devotees and devotees of Lord Rama for all times to come.

The installation of the deity of such a God like Hanuman Ji by Shri R. S. Dwivedi is a welcome event and I congratulate him and his Wife for the great cause.

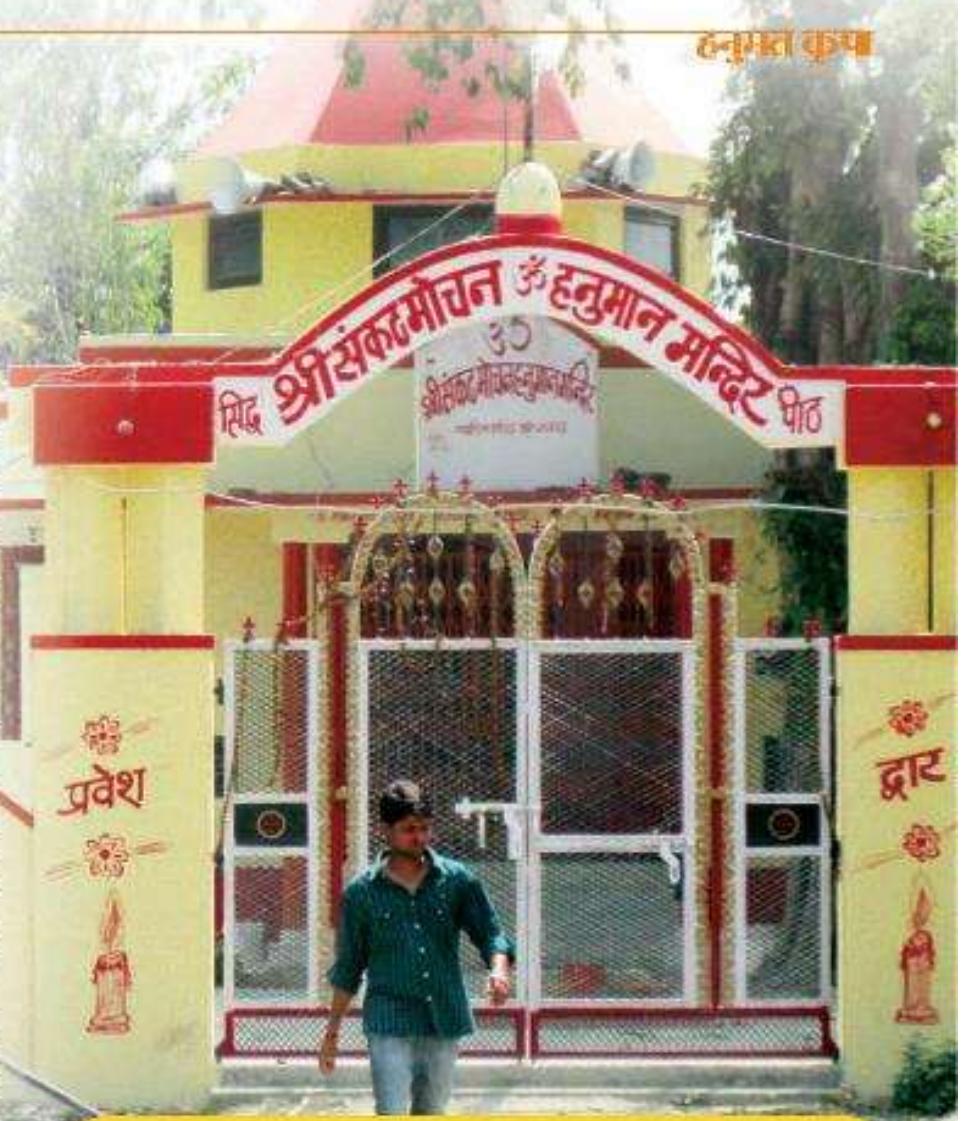
KOLKATA

16-05-2015

JUSTICE DEVI PRASAD SINGH
MEMBER (JUDICIAL) & HEAD OF DEPARTMENT
ARMED FORCES TRIBUNAL, REGIONAL BENCH
KOLKATA



पूरे विश्व में हनुमान जी के लाखों मंदिर हैं। हर मंदिर की कोई न कोई विशेषता है। हनुमतभवत इनका निर्माण कराने में अपने को गौरवांशित अनुभव करते हैं। उत्तर प्रदेश के सुलतानपुर जिले के हनुमतपुरम में स्थापित सिद्ध श्री संकटमोचन हनुमान मंदिर पीठ भी इनी मंदिरों की शृंखला की एक कड़ी है। इसका निर्माण डॉ. रमाशंकर द्विवेदी ने अपने पूज्य पिताजी श्री राजनारायण द्विवेदी की स्मृति में कराया है। बहुत ही कम समय में मंदिर की ख्याति आसपास के क्षेत्र में फैल गयी है और दूर-दूर से लोग यहां आते हैं। यहां आने वाले भक्तजनों का दावा है कि सच्चे मन से मांगी गयी हर मनोकामना पूरी होती है।



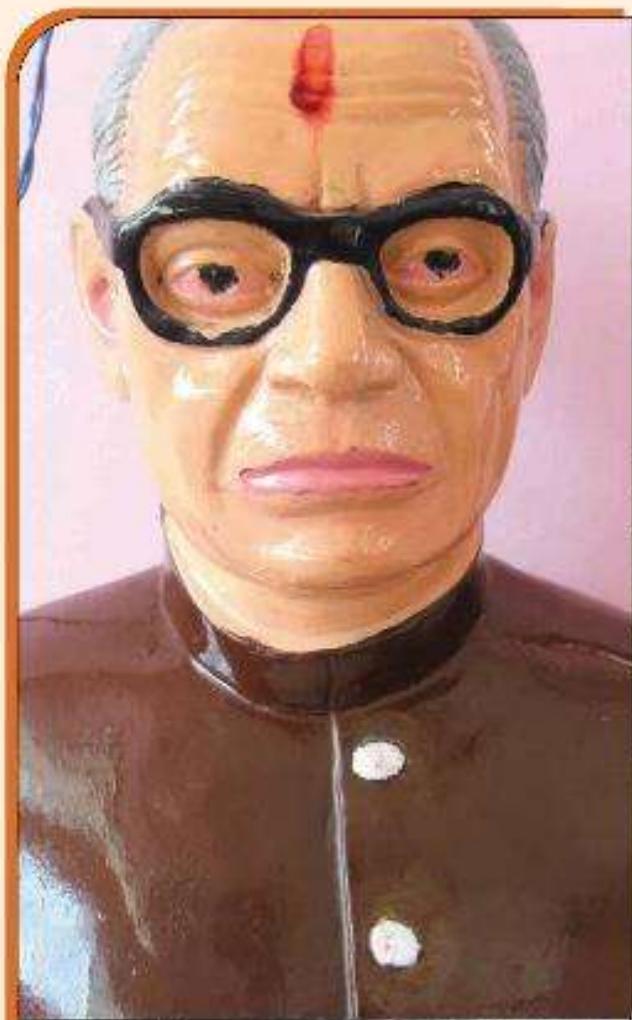
नवरात्र में हुआ भूमि पूजन

वर्ष २००२ में शारदीय नवमात्र के शुभ दिनों में हनुमान जी की प्रतिमा को स्थापना हेतु मंदिर का भूमि पूजन पंडित रविमणि शास्त्री जी द्वारा सम्पन्न हुआ। मंदिर गांव के पूर्व में स्थित है और उसी समय से गांव का नाम 'पूरे तिहोता' से बदलकर 'हनुमतपुरम' के रूप में कर दिया गया। गजस्व अंभलेखों में यह पिपरी साइनाथ (हनुमतपुरम) दब्जे हैं।

भौगोलिक स्थिति

यह गांव सुलतानपुर शहर से २५ किलोमीटर दूर उत्तर में विकासग्रन्थ भनपतंगज में स्थित है, जो क्रमशः ब्लाक धनपतंगज एवं ब्लाक कुरेपार ने पक्की मढ़कों द्वारा जुड़ा है। मंदिर तक पहुंचने के लिए सुलतानपुर-फैजाबाद गजमार्ग पर स्थित चौर बाजार से चौर कनावों मार्ग पर जाना होता है। यहां पहुंचने के लिए चौर बाजार से आँटो भी चलते हैं लेकिन निजी माध्यन द्वारा और भी सहजता से जाना जा सकता है।





**श्री संकट मोचन हनुमान मन्दिर के प्रेरणास्त्रोत
स्व. राजनारायण द्विवेदी
(निमाण लिथि 12 सितम्बर 2005)
की प्रतिस्पृश को अनाचारणा
श्री श्री 108 प्रेमदास रामायणी जी
प्रयाग राज छारा
दिनांक 13 जून 05 को सम्पन्न हुआ।**

प्रेरणास्त्रोत

इस मंदिर के प्रेरणास्त्रोत डॉ. रमाशंकर द्विवेदी के पूज्यनोय पिता श्री राजनारायण द्विवेदी थे। इन्हाँने जी उनके परम इष्ट थे और उनकी इच्छा थी कि पवनपुत्र का भव्य मंदिर गांव में बने। दरअसल द्विवेदी परिवार परम्परागत रूप से हनुमान भक्त रहा है। श्री राजनारायण द्विवेदी के पितामह श्री भगवानदीन दुबे जिनकी अंजनिपुत्र में अद्भुत आस्था एवं किञ्चास था, ने शब्द से करीब १०० साल पहले अपने बेहद भीमित संसाधनों से अपने घर में ही हनुमान जी की विग्रह प्रतिमा स्थापित की थी। इन्हीं जन्मजात संस्कारों और अपने पूज्य पिता श्री राजनारायण जी की इच्छा के अनुरूप डॉ. रमाशंकर द्विवेदी ने अन्य परिवारीजनों के साथ निर्णय लिया कि पवनसूत का भव्य मंदिर गांव में बनेगा। इसके लिए श्री दिनेश कुमार पांडेय को मंदिर की डिजाइन तैयार करने और एड्विसर अशोक कुमार द्विवेदी को निर्माण कार्य का दफ्तिल सौंपा गया।





नौ माह में पूर्ण हुआ निर्माण

यह मंदिर लगभग नौ माह के निरंतर निर्माण कार्य से बनकर तैयार हुआ है। इसका क्षेत्रफल लगभग २०० एकड़ियां आधा एकड़ियां हैं। मंदिर का भव्य उद्घाटन समारोह एक सप्ताह तक लगातार अयोध्या एवं काशी के प्रकांड पंडितों द्वारा हवन-पूजन-अर्चन के बाद शुक्रवार १३ जून २००३ को दिन में ११ बजे रामजन्मभूमि टाट के तत्कालीन उपाध्यक्ष एवं वर्तमान अध्यक्ष महंत नृत्य गोपालदास के कर कमलों द्वारा किया गया। इस दैरान हजारों लोगों के लिए विशाल भंडारे का श्री आयोजन किया गया। साथ ही आम लोगों के लिए लखनऊ के किंग जार्ज मैडिकल विश्वविद्यालय (केजीएमयू) में नेत्र विभाग के डॉ. वी. बी प्रताप के नेतृत्व ने निशुल्क नेत्र चरीक्षण कैप्स का श्री आयोजन हुआ। कार्यक्रम के दैरान विशिष्ट अतिथियों में डॉ. एससी राय (मेडर, लखनऊ), डॉ. उमाशंकर श्रीबास्तव (वैज्ञानिक, आईटीआरनी), डॉ. विनोद जैन (प्रोफेसर, सर्जरी विभाग, केजीएमयू), अयोध्या के जाला कौशलदास जो फलाहारी जी महाराज, उत्थान के प्रेमदास जी रामायणी जी महाराज, काशी के शम्भूनाथ व्यास जो महाराज, ऋषिकेश के स्वामी अद्वैतानंद जी महाराज (शिवानंद आश्रम), वंदेश्वर के अखिल जी महाराज, जयनारायण तिवारी (मंत्री, उपरेक्षक), डॉ. सीताशरण त्रिपाठी आदि शामिल थे। यह भव्य सनारोह मुख्य आयोजक डॉ. रमाशंकर द्विवेदी और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती अहणा द्विवेदी (अध्यक्षा, इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर स्थितुअल एंड वॉर्समेंट) की गरिमामयी उपस्थिति में समाप्त हुआ। मंदिर हरे-भरे पेड़-पौधों से आच्छादित एक रमणीय स्थल है। यहां आम, अनार, बेल, आंवला, करंदा, पपीता आदि के पेढ़-पौधे लोगों को लुभाते हैं। साथ ही वरदान गौशाला भी दर्शनार्थियों का ध्यान लरवान खाँच लेती है।



अन्य देव प्रतिमाओं की प्राण-प्रतिष्ठा

मंदिर के अस्तित्व में आने के कुछ वर्षों बाद महाशिवरात्रि के अवसर पर शिवालिंग की स्थापना १२ फरवरी २०१० को की गयी। एक माह बाद वार्षिक नवरात्रि में माँ दुर्गा की प्रतिमा की स्थापना १६ मार्च २०१० को की गयी। इसी कही में डॉ. रमाशंकर द्विवेदी के मन में विचार आया कि हनुमान जी के परम इष्ट भगवान राम उनके हृदय में तो विराजमान हैं लेकिन मंदिर में अलग से उनकी कोई मूर्ति नहीं है। डॉवर साहब ने इसके सम्बन्ध में नवी दिल्ली के स्वामी सर्वानंद जी महराज से सम्पर्क किया। स्वामी जी ने जयपुर में डॉ. द्विवेदी को मूर्तियों के निर्माण के लिए आमंत्रित किया। इस प्रकार स्वामी जी, डॉ. द्विवेदी और एडब्लूकॉट अशोक कुमार द्विवेदी पहले गणराज्य के सालासर की यात्रा पर गये। वहाँ पवनपुत्र के दर्शनों के उपरांत जयपुर आकर रामदरबार एवं राधा-कृष्ण की दिव्य प्रतिमाएँ धिजनाने का आदेश दिया। तदोपरांत एक सप्ताह के भव्य धार्मिक अनुष्ठान के दौरान अगहन कृष्णपक्ष चतुर्दशी (१६ नवंबर २०११) को रामदरबार एवं राधा कृष्ण की

बिघ्रह प्रतिमाओं
की स्थापना
स्वामी
सर्वानंदजी
महराज के
आशीष से की
गयी। वाराणसी
के डॉ. प्रभाकर
पांडेय के
माननंदशीन में
आचार्यजनों ने
यह शुभ कार्य
सम्पन्न कराया।



माँ दुर्गा



श्री राम दरबार



राधा-कृष्ण



भोलेनाथ



मंदिर में दैनिक, सासाहिक

गर्भियों में मंदिर प्रातः साढ़े चार बजे और सर्दियों में साढ़े पाँच बजे खुलता है। प्रातः कालीन आराधना, हवन-पूजन, आरती सात बजे तक चलती है। मंदिर दर्शनार्थी ११ बजे तक खुला रहता है। मंदिर के कपाट दोपहर ११ बजे से सायं ५ बजे तक लंद रहते हैं। तदोपर्यात सायं चार बजे से भक्तजनों के लिए मंदिर खोल दिया जाता है। रात आठ बजे आस्ती होती है और नौ बजे मंदिर के कपाट बंद हो जाते हैं।

मंदिर में प्रत्येक मंगलवार को सुंदरकाण्ड का पाठ होता है। वार्षिक आयोजनों में हनुमान जयंती, महाशिवरात्रि, शारदीय व वासर्तिक नवरात्रि, रामनवमी, कृष्ण जन्माष्टमी, होली, दीपावली, दशहरा और रक्षाबंधन पर विशेष कार्यक्रम होते हैं। मंदिर के समस्त कार्यक्रम संकटमोचन फाउंडेशन द्वारा संचालित होते हैं। नवरात्रि में दुर्गा शासनाती का नियमित पाठ होता है। मंदिर में

▲ रामकथा सुनाते डॉ. प्रभाकर पांडेय

पंडाल में कथा का रसास्वादन करते श्रोतागण



और वार्षिक कार्यक्रम

१३ जून (स्थापना दिवस) को संत समागम होता है, जिसमें देश-विदेश के महात्मा भाग लेते हैं। इसके साथ ही मंदिर में लगभग प्रत्येक वर्ष सत्ताह भर चलने वाली राम कथा का भी आयोजन होता है जो निर्धारित समय पर आयोजित की जाती है।

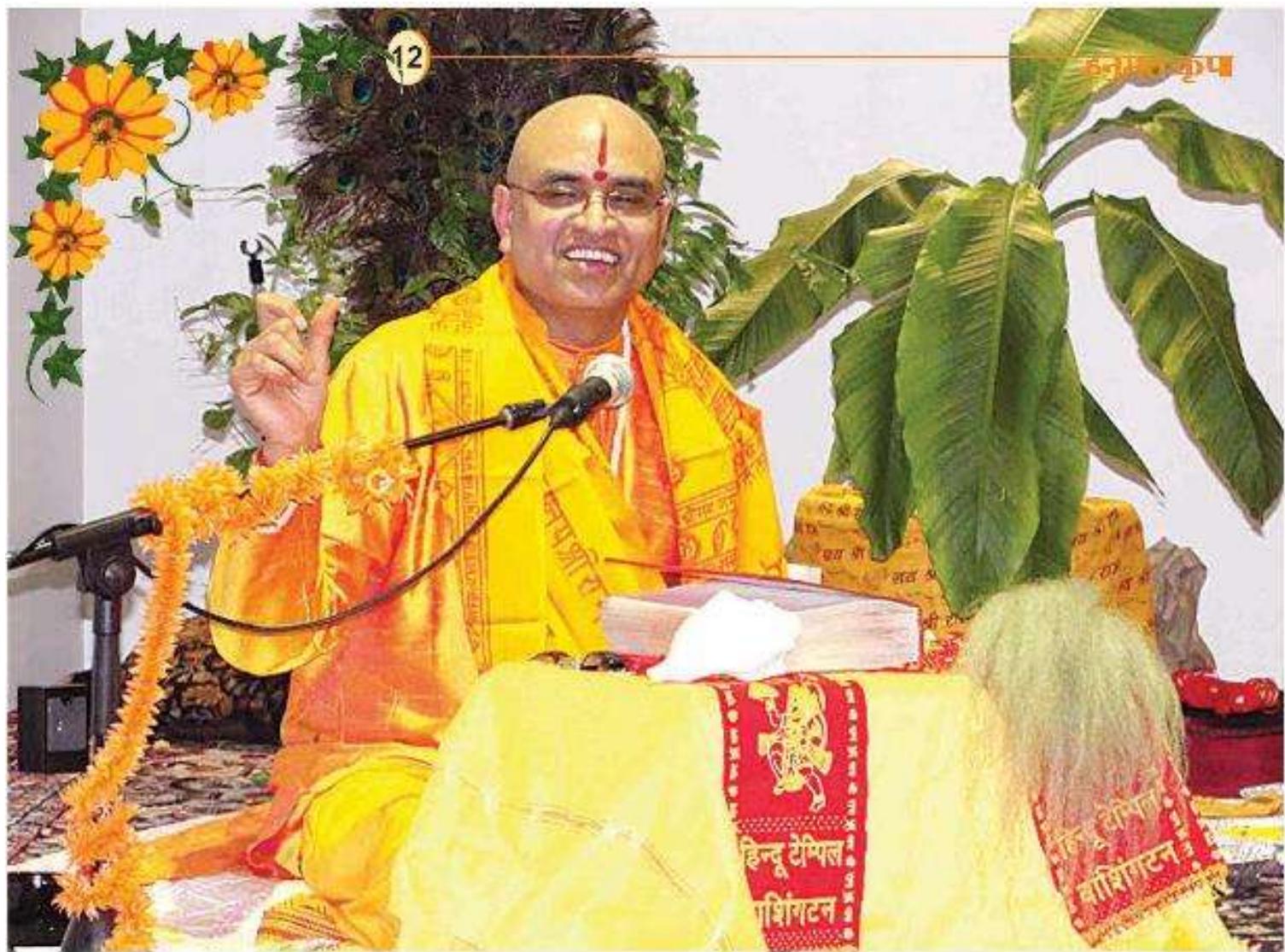
अब तक प्रथाग के राम कथा मर्मज प्रेमदास जी महाराज, बाराणसी के डॉ. प्रभाकर पांडेय और बागणसी के ही शंभूनाथ जो व्यास अपने श्रीमुख से विभिन्न अवसरों पर भक्तों को रामकथा का रसास्वादन करा चुके हैं। विशेष अवसरों पर मंदिर में विशाल गढ़रे का भी आयोजन होता है जिसमें हजारों श्रद्धालु प्रसाद ग्रहण करते हैं। मंदिर में हवनकुण्ड भी है जहां श्रद्धालु समय-समय पर हवन-पूजन करते हैं। नयी फसल होने पर क्षेत्र के लोग इसे सबसे पहले यहाँ हनुमान जी को समर्पित करते हैं। इनके बाद घर ले जाते हैं।



सुंदरकाण्ड का पाठ करते श्रद्धालु

आरती में लीन भवतगण





वैज्ञानिक संत हैं डॉ. रमाशंकर द्विवेदी

विज्ञान और धर्म का जब संगम हो जाता है तो दोनों मिलकर परम कल्याणकारी हो जाते हैं। हमारी सनातन संस्कृति के ऋषि-मुनि ऐसे ही तो थे जिन्होंने आध्यात्मिक जगत के साथ भौतिक जगत में कल्याण के लिए भी रास्ता दिखाया है। वर्तमान समय में उसी परंपरा के वाहक हैं डॉ. रमाशंकर द्विवेदी, जो एक ओर अमेरिकी सरकार में वरिष्ठ वैज्ञानिक का उत्तरदायित्व सफलता पूर्वक निभा रहे हैं तो दूसरी ओर स्वामी रामानन्द सरस्वती के रूप में सनातन धर्म की अलख जगाकर करोड़ों लोगों को जीवन का सही मार्ग दिखा रहे हैं...

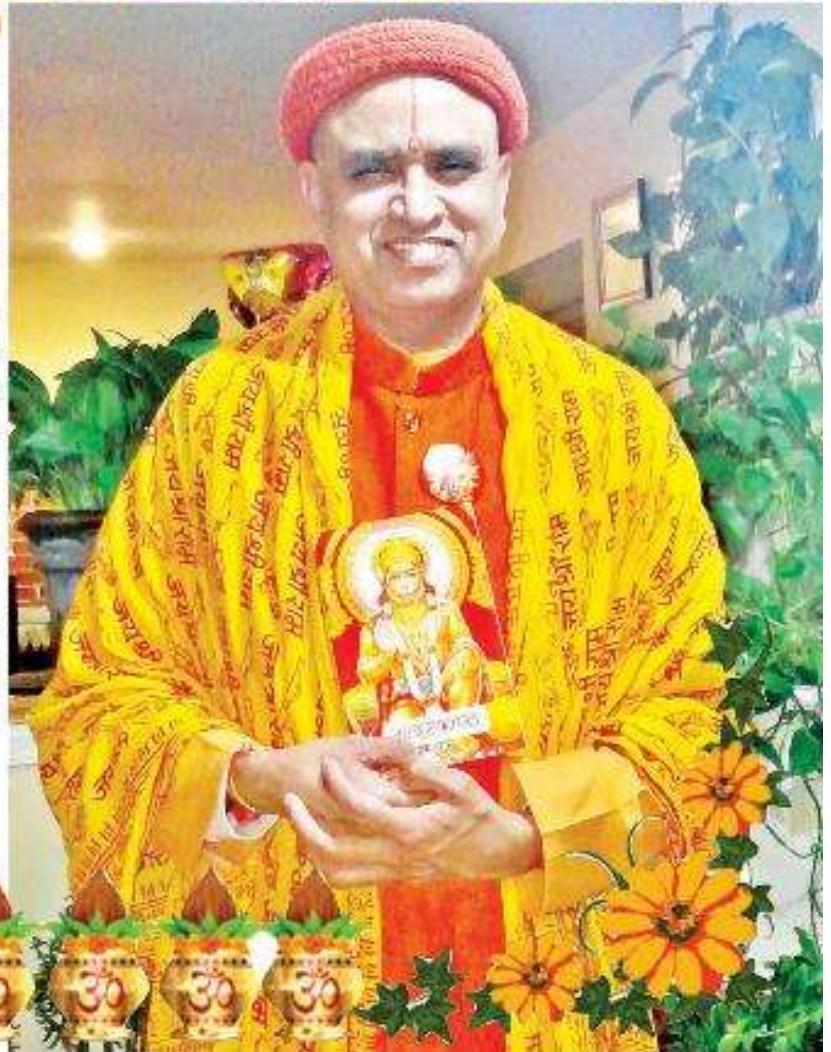




अमेरिका में भक्तजनों के बीच स्वामी रामानंद सरस्वती

डॉ. रमाशंकर द्विवेदी ही सही अर्थों में इस मंदिर को मूर्ति रूप देने वाले हैं। २३ मार्च १९५४ को जन्मे डॉ. द्विवेदी जिन्हें अब लोग स्वामी रामानंद सरस्वती के रूप में अधिक जानते हैं, सही अर्थों में वैज्ञानिक-संत हैं। वैसे तो वह बात विरोधाभासी लग सकती है क्योंकि बहुत से लोग विज्ञान और धर्म को एक दूसरे का विरोधी मानते हैं लेकिन यथार्थ में दोनों के बीच कोई विरोधाभास नहीं है। तभी तो डॉ. द्विवेदी एक और अमेरिका सरकार में एक वरिएट वैज्ञानिक का उत्तरदायित्व सफलता पूर्वक निभा रहे हैं तो दूसरी ओर स्वामी रामानंद सरस्वती के रूप में करोड़ों लोगों को धर्म और अध्यात्म द्वारा जीवन का सही गार्ग दिखा रहे हैं।

डॉक्टर साहब का जन्म श्री राजनारायण द्विवेदी व श्रीमती शुभरन देवी के बहाँ उत्तर प्रदेश के जिला सुलतानपुर में ग्राम पिपरी साईनाथपुर में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा गांव के ही प्राथमिक विद्यालय में हुई। हाइस्कूल जबालपुर लाल नेहरू स्मारक उत्तर प्राध्यायिक विद्यालय खजुरहट, फैजाबाद एवं इंटरनॉडिएट गवर्नमेंट इंटर कॉलेज (जीआईसी), फैजाबाद से किया। डॉ.एससी. लखनऊ क्रिश्चियन कॉलेज और एम.एससी.



(बायोकेमिस्टी) लग्ननक विश्वविद्यालय से की। इसके बाद पीट्र.डी. की डिशी इंडस्ट्रियल स्टीम्सकॉलेजी रिसर्च सेंटर, (ज्ञानान ममय में इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ यॉक्सिमकॉलेजिकल रिसर्च) लग्ननक से लो।

तदेपरांत आईटीआरसी में ही वैज्ञानिक रूप में नियुक्त हुए। वहाँ कई सालों तक काम किया और इमी दौरान सिंगापुर, थाईलैंड, जापान सहित कई देशों को यात्राएँ की। वर्ष १९८०

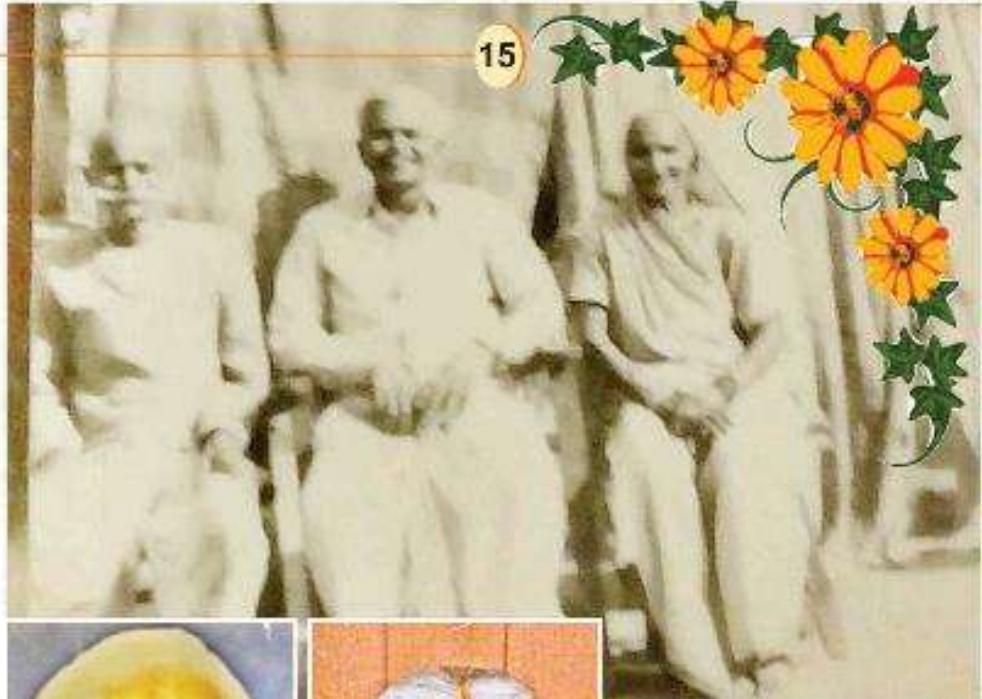
में अमेरिका जाने के बाद संप्रति अमेरिका जर्कार के फूड एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन (एफडीए) में कार्यरत हैं। डॉ. रमाशंकर द्विवेदी की पत्नी श्रीमती अरुणा द्विवेदी गृहिणी होने के साथ-साथ समाज सेविका भी हैं और इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर डिव्युअल एट्वारेसमेंट (आईएसएसए) की अध्यक्ष हैं। अरुणा जी यह पर अपने पति का साथ निभाती हैं। वे दशा और

धर्मपत्नी अरुणाजी के साथ स्वामी रामानंद सरस्वती



की प्रतिमूर्ति हैं। वे किसी को साचार नहीं देख सकते, भले ही उनकी झाली खाली हो जाए। द्विवेदी दंपती के दो पुत्र अश्वेर और अधीष्ठ हैं जो अपनी पत्नियों और बच्चों सहित अमेरिका में ही कार्यरत हैं। डॉ. द्विवेदी स्वामी रामानंद सरस्वती के रूप में अमेरिका में रहते हुए उपने भक्तजनों के बीच समाता धर्म की गंगा बहा रहे हैं। वहाँ वे नियमित

रूप से रामकथा, सुंदरकाण्ड और रामचरित मानस का अवधारण पाठ आदि कार्यक्रम बड़े स्तर पर आयोजित करते रहते हैं। डॉ. द्विवेदी के आराध्य देव भगवान गम और इष्टदेव हनुमान जी हैं। उनका मानना है कि वे स्वयं निर्मित मात्र हैं और उनका हर कार्य हनुमान जी ही करते हैं। वे अत्यधिक भावना प्रधान व्यक्ति हैं और सिफ़े सन्नाई का यास्ता उन्हें आता है। वे लोगों को सदैव धर्मपार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं। उनकी नज़रों के सामने यदि कोई व्यक्ति लाचार है, भूखा है, दुखी है तो वे उसकी सहायता सबसे पहले करते हैं। भले स्वयं का कोई महत्वपूर्ण कार्य ही व्यक्ति न रख जाए। उनकी हगेशा इच्छा रहती है जितना ही सके निर्बलों को मदद की जाए। वे मानते हैं कि जो कुछ उनके पास है, वह सबकुछ परमात्मा प्रदत्त है। सादगी एवं सरलता उनके व्यक्तित्व का अभिन्न अंग है। अमेरिकावासी होते हुए भी जब वे अपने गांव पहुंचते हैं तो लगता ही नहीं कि कोई बाहर का व्यक्ति आया है। बच्चे, बूढ़े, जवान सभी से वे इस तरह बुल-मिल जाते हैं जैसे सालों से उन्होंके बीच रह रहे हों। वे विशद् शाकाहारी हैं और यहाँ तक कि लहसुन-व्याज तक नहीं खाते।

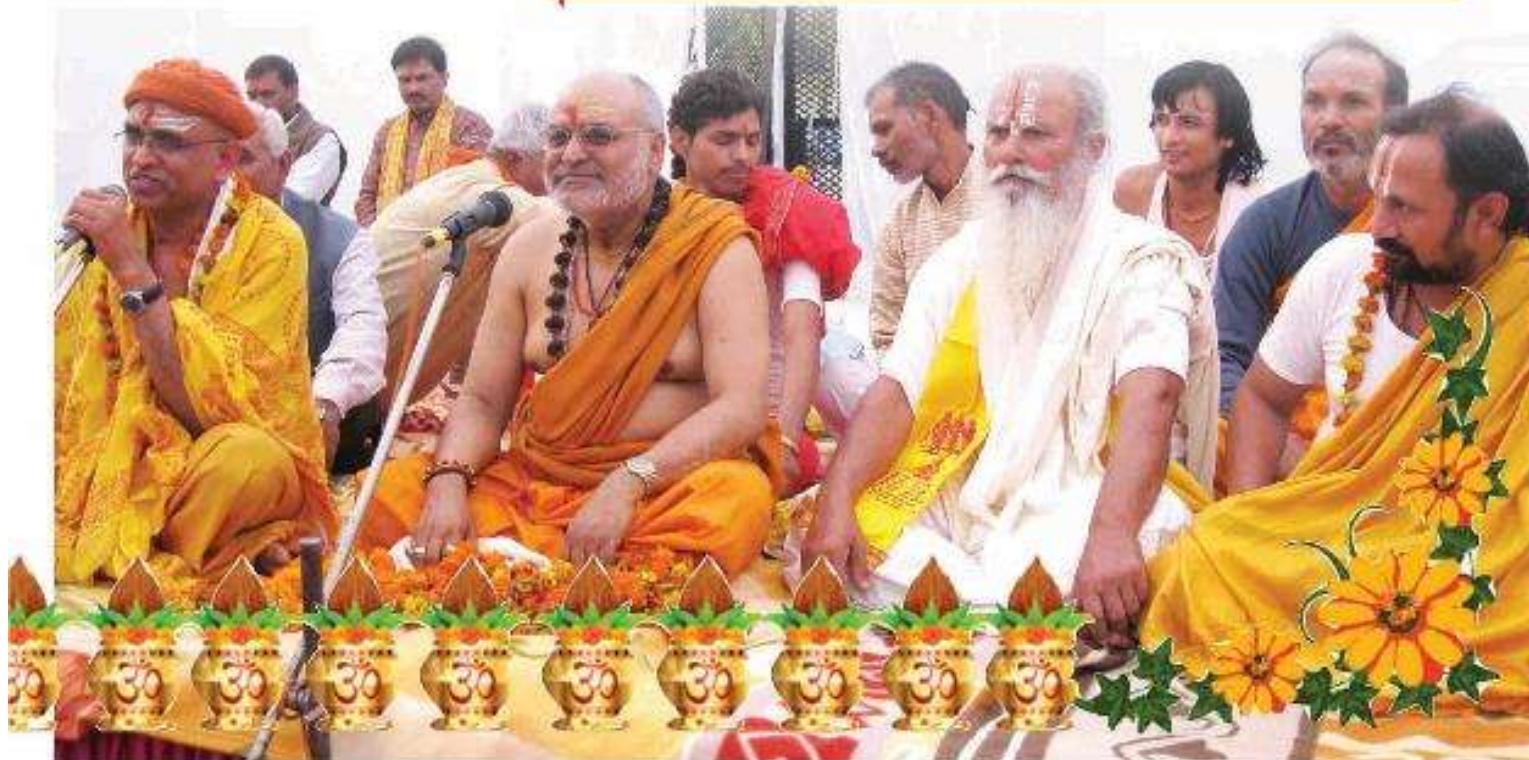


बाएं से- रामनरेश दुबे(बाबा) राजनारायण दुबे(पिता) और रामदुलारी(दादी)

डॉ. रामांकर द्विवेदी का परिवार

बाएं से- पिताजी राजनारायण दुबे और माताजी मुबरन देवी

हनुमतपुरम में प्रवचन करते स्वामी रामानंद सरस्वती, स्वामी मार्वानंद महाराज, प्रेमदासजी व डॉ. प्रभाकर पांडेय



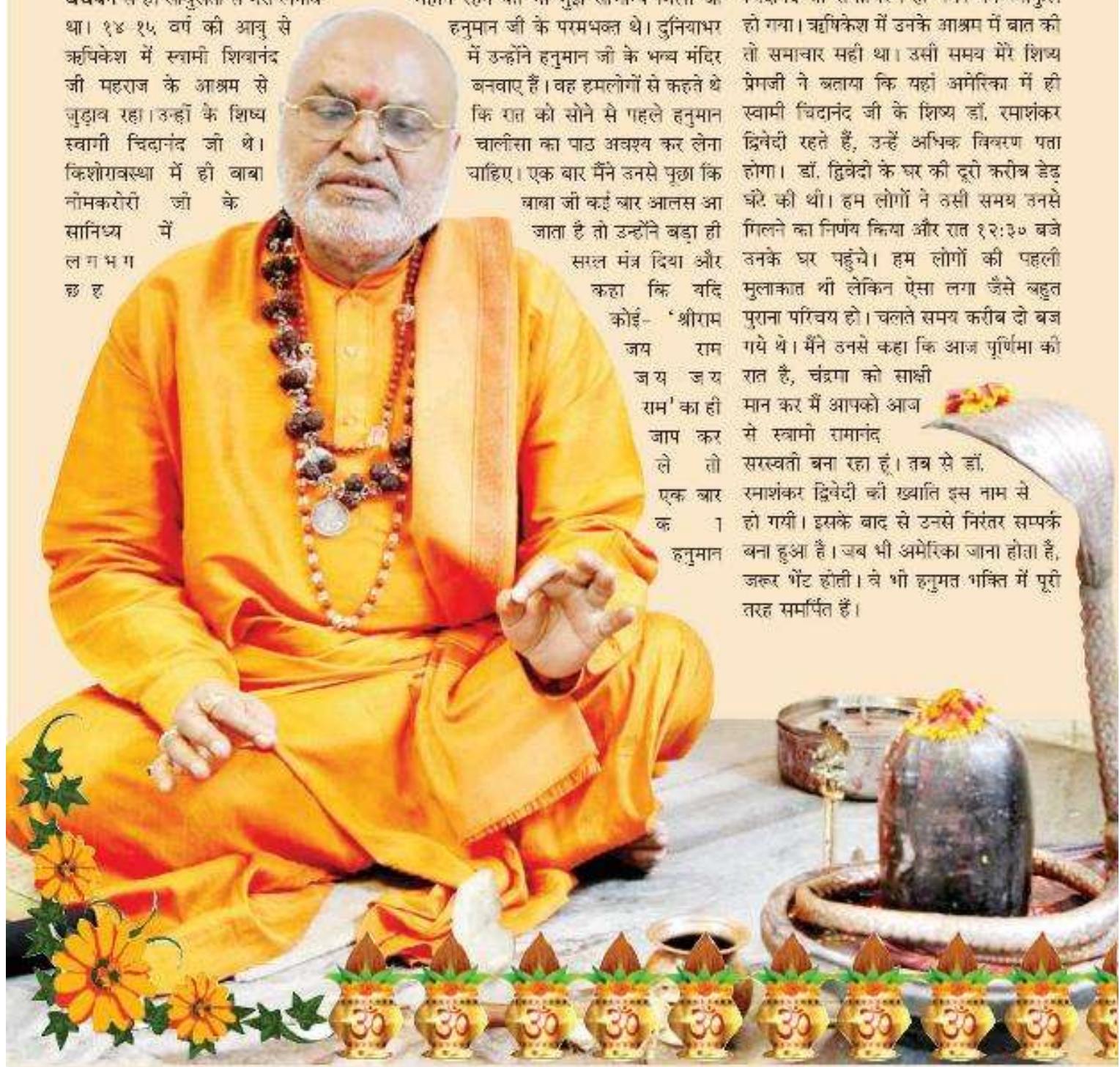
सुख श्री के दाता हैं हनुमान जी : स्वामी सर्वनन्द सरस्वती

बचपन से हो साखुसंतों से मेरा लगाव था। १४-१५ वर्ष की आय से क्रष्णिकेश में स्वामी शिवानंद जी महराज के आश्रम से बुढ़ाव रहा। उन्होंके शिष्य स्वामी चिदानंद जी थे। किशोगवस्था में ही बाबा नोमकरोरों जी के सानिध्य में लगभग ३५

महीने रहने का भी मुझे सौभाग्य मिला जो हनुमान जी के परमधज्जल थे। दुर्नियाभर में उन्होंने हनुमान जी के भन्न्य मंदिर बनवाए हैं। वह हमलोगों से कहते थे कि रात को सोने से गहले हनुमान चालीसा का पाठ अवश्य कर लेना चाहिए। एक बार उन्हें उनसे पूछा कि बाबा जी कई बार आलस आ जाता है तो उन्होंने बड़ा ही सरल मंत्र दिया और कहा कि यदि कोई—‘श्रीगम जय राम जय जय राम’ का ही जाप कर ले तो एक बार क १ हनुमान

चालीसा पूरा हो जाता है। काशी के प्रोफेसर सुधांशु शेखर मिश्र से मैं श्री परंपरा में दीक्षित हुआ। श्री विद्या के प्रथम आचार्य लक्षण जी थे। इसी कड़ी में हनुमान जी, रावण, आदि शंकराचार्य, आनंदमयी मां आदि आते हैं।

एक बार जब मैं अमेरिका में था, उसी दीगम सुबना मिली कि ब्रह्मिकेश में स्वामी चिदानंद जी समाधिस्थ हो गये। मन व्याकुल हो गया। ब्रह्मिकेश में उनके आश्रम पर बात की तो समाचार मही था। उसी समय मेरे शिष्य प्रेमजी ने बताया कि यहां अमेरिका में ही स्वामी चिदानंद जी के शिष्य डॉ. रमाशंकर द्विवेदी रहते हैं, उन्हें अधिक विवरण पता होगा। डॉ. द्विवेदी के घर की दूरी करीब डेढ़ घण्टे की थी। हम लोगों ने उसी समय उनसे गिलने का नियंत्रण किया और रात १२:३० बजे उनके घर पहुंचे। हम लोगों की पहली मुलाकात यों लेकिन ऐसा लगा जैसे बहुत पुराना परिचय हो। चलते समय करीब दो बजे गये थे। मैंने उनसे कहा कि आज पूर्णिमा की रात है, चंद्रपा को साक्षी मान कर मैं आपको आज से स्वामी रामानंद सरस्वती बन रहा हूं। तब से डॉ. रमाशंकर द्विवेदी की ख्याति इस नाम से हो गयी। इसके बाद से उनसे निरंतर सप्तके बना हुआ है। जब भी अमेरिका जाना होता है, जरूर भौंट होती। वे भी हनुमत ग्रहित में पूरी तरह समर्पित हैं।





ब्यूयॉक के एक हनुमान मंदिर में स्वामी रामानंद सरस्वती के साथ स्वामी सर्वानंद जी महाराज

जब रामानंद जी ने अपने गोंद में बजरंगबलों का मंदिर बनवाया तो उसमें पूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा और चज आदि अनुष्ठानों के लिए भूमि भी आभिन्नत किया गया। वहाँ गुजे पता चला कि आमपास के क्षेत्र में अक्सर प्राकृतिक प्रकोणों से लोग परेशान रहते हैं लेकिन मंदिर स्थापना के बाद वह

हनुमान जी की कृपा है कि अब वहाँ ऐसा

कुछ घटित नहीं होता है।

इसी लिए उस मंदिर को

मैंने सिद्ध हनुमत धाम कहा। आज वह एक पवित्र जगह है और आर-आर वहाँ जाने को मन करता है। मैं चाहता हूँ कि शीघ्र ही इस मंदिर में स्वामी रामानंद जी के माता-पिता की पूर्ति स्थापित हो जाए। सनातन संरक्षित में माता पिता का स्थान भगवान और गुरु से भीऊपर है। भगवान राम ने माता-पिता का आदर्श हमारे सामने रखा है। हनुमान जो को भी प्रथम गुरु भी अंजना ही थी।

मेरा मानना है कि हनुमान जी दृख निवारक ही नहीं, सुख श्री के दाता भी हैं। हमें भगवान के प्रति अहोभाव रखना चाहिए। भगवान की आराधना हमें स्वांतः सुखाय के लिए करनी

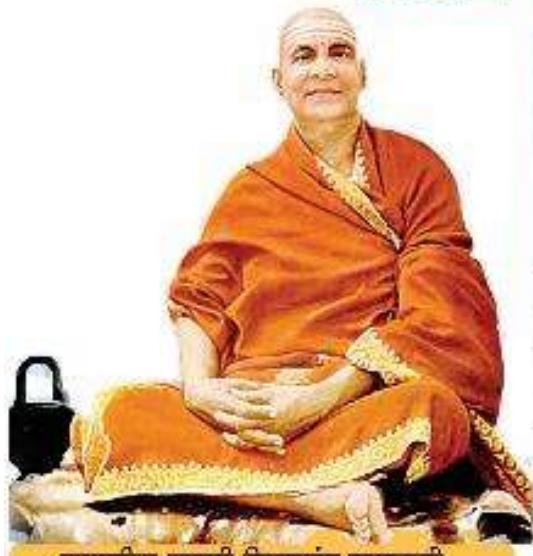
चाहिए। हुलसीदाम ने हनुमान जी की कृपा से रवांतः सुखाय राम चरित मानस को रचना की। आज गम चरित मानस ऐसा ग्रंथ है जिसमें हर प्रकार की समस्या का समाधान है। चाहे वह सागरस्या व्यक्तिगत हो, पारिवारिक हो, सामाजिक हो, गृष्णीय हो या अंतरराष्ट्रीय। आज धर्म का व्यापारीकरण सबसे अधिक चिंता का विषय है। ढोंगी साधु खंत अपने निजी लाभ के लिए धर्म का सहाय ले रहे हैं। वे भगवान को बेचते हैं। यह सब बंद होना चाहिए।

(स्वामी सर्वानंद सरस्वती इंटरनेशनल भजन सुखसेक्षा पिण्डान यानी आईबीएसएम के फाउंडर प्रेसीडेंट हैं)

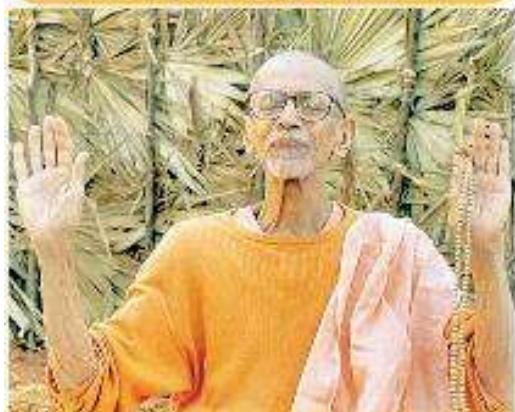


हर कष्ट दूर करते हैं

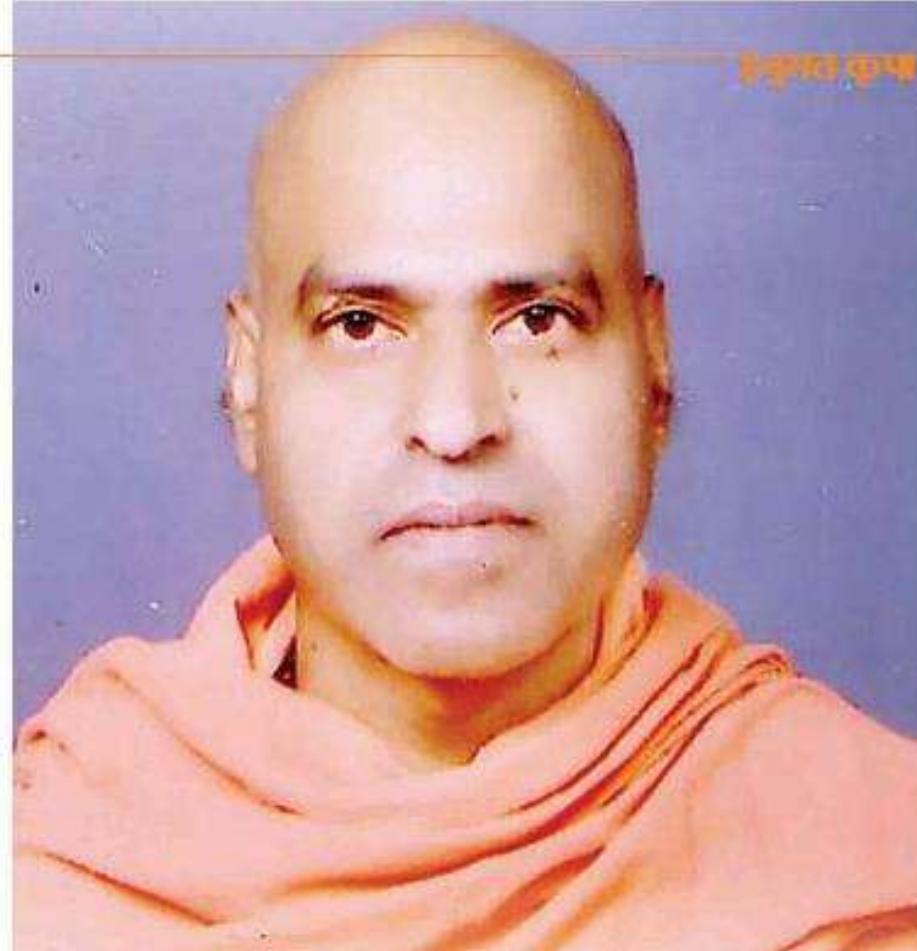
पवनसुतः स्वामी अद्वैतानन्द जी महाराज



ब्रह्मलीन स्वामी शिवानन्द सरस्वती



ब्रह्मलीन स्वामी चिदानन्द सरस्वती



डॉ. रमाशंकर द्विवेदी यानी स्वामी रामानन्द मरस्कती मेरे गुरुभाई हैं। वे भी शिवानन्द आश्रम के स्वामी चिदानन्द जी महाराज से दीक्षित हैं और मैंने भी चिदानन्द जी महगण से ही दीक्षा ली है। स्वामी रामानन्द जी के गांव में बना हनुमान मंदिर जब पूर्ण आस्तित्व में आया तो उन्होंने स्वामी चिदानन्द जी को वहां होने वाले धार्मिक अनुष्ठान में आने का नियंत्रण दिया लेकिन अस्वस्थता के चलते वे उम मार्याद्रि में नहीं जा पा रहे थे। अतः उन्होंने मुझे यह दायित्व दिया। इस प्रकार मैं इस मंदिर के समारोह में शामिल हुआ। बहुत ही भव्य आयोजन था। अनेक साधु-संत उस कार्यक्रम में शामिल हुए थे। अर्थात् के महंत गृत्यगोपाल दास जो भी इनमें शामिल थे। मुझे लगता है कि इस मंदिर निर्माण से हजारों लोगों का कल्याण हो रहा है। बजरंगबली लोगों के हर प्रकार के कष्टों से मुक्ति दिलाते हैं। हनुमान जी ऐसे देवता हैं जिनकी भक्ति करने से

भगवान राम भी प्रसन्न होते हैं। तुलसीदास जो ने लिखा था है—तुम्हरे भवन राम को पावे, जगम जनम के दुख बिसरावै....। वैसे भी इस युग में भगवान के नाम की ही महिमा है.... कालियुग के बल नाम अधारा, सुमिर सुमिर नर उतरहि पारा।

हमारा वैदिक धर्म यानी सनातन धर्म मानव सेवा को ही गाधव सेवा गमता है। चार पुरुषार्थी में धर्म पहले है और मोक्ष आदि ये। धर्म के अनुसार चलने पर मोक्ष की प्राप्ति होती है। त्रिषिकेश में स्वामी शिवानन्द जी ने शिवानन्द आश्रम की स्थापना की थी। आज इसकी देशधर में लगभग ३५० शास्त्रार्द्ध हैं जो नर सेवा-नारावण सेवा के मूल मंत्र को आगे रखकर कार्य कर रहे हैं। आश्रम स्नातक छात्रों के लिए योग वेदांत को शिक्षा का पाठ्यक्रम भी संचालित करता है। आश्रम के कल्याणकारी कार्यक्रम 'द डिवाइन लाइफ सोसाइटी' के माध्यम से संचालित होते हैं।



अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता हैं हनुमान जी : महंत नृत्यगोपाल दास

डॉ. रमाशंकर द्विवेदी के गांव हनुमतपुरम में श्रीहनुमान जी के मंदिर में जाने का मुझे अवसर मिला, इसे मैं अपना सौभाग्य मानता हूँ। श्रीहनुमानजी बल के अधिकारी देवता हैं। विश्व में भगवान राम से ज्यादा श्रीहनुमानजी को मानने वाले लोग हैं। जिन उनकी कृपा से रापजी तक पहुँचन कर्दिन हैं। जैसा कि तुलसीदास जी ने लिखा है—रामदुआरे तुम रखवारे। श्रीहनुमान जी को प्रसन्न करने के लिए श्रीरामचरित मानस के सुंदरकाण्ड और हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए। भगवान श्रीराम का गुणगम सुनकर भी हनुमानजी प्रसन्न होते हैं...प्रभु चरित्र सुनिष्ठे को रसिया, राम लखन सीता गन बसिया...। भगवान श्रीराम का कीर्तन सुनने के लिए हनुमान जी सदैव तत्पर रहते हैं। वहाँ श्रीराम हनुमानजी की सेवाओं से इन्हें प्रभावित हैं कि अपने को उनका झण्डा मानते हैं। हनुमान जी के साथ जगत-जननी मां जानकी का भी आशीर्वाद है...अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता, अस बर दीन जानकी माता...। भगवान श्रीराम ने कहा है कि मैं ही नहीं मेरा पूरा चरित्र तुन्हारे कृत्यों से उज्ज्वल होता है। श्रीराम के चरणों में चढ़ि अकिञ्चन चाहिए तो सबसे पहले हनुमान जी की आश्रिता, उपासना आवश्यक है।

जिस प्रकार भगवान राम को भक्तों से कुछ नहैं चाहिए, रामहि केवल प्रेम विद्या...उसी प्रकार हनुमान जी भी अपने भक्तों से कुछ नहीं चाहते, प्रभु राम के नृणाम मात्र से वे प्रसन्न हो जाते हैं। लंका विजय के बाद जब श्रीराम अयोध्या आए, तो उन्होंने अपने सभी सेवकों, रहयोगियों को विदा न्व दिया लेकिन हनुमान जी को वहीं रोक लिया। आज भी अयोध्या जी में हनुमानगढ़ी इसी क्ष प्रतीक है। हनुमानगढ़ी में हनुमान जो व्य विराजमान होता भगवान राम के प्रति उनकी सेवा का प्रतिफल है। हजारों लोग वहाँ रामलला के दर्शन करने आते हैं लेकिन उनकी आश्रिता तभी पूरी मानी जाती है जब वे हनुमानगढ़ी में श्रीहनुमानजी के दर्शन कर लेते हैं। कई लोगों के बोच यह धारणा है कि स्त्रियों हनुमान जी की उपासना नहीं कर सकतीं जबकि यह गलत है। स्त्रियों को भी हनुमान जी की उपासना करने का एक अधिकार है। शास्त्रों में कहा गया है कि पहले हम देवता बनें तब देवता की आश्रिता करें। इसका अर्थ है कि मनुष्य को पहले वे सद्गुण विकसित करने चाहिए, जो उसे पूजा करने के योग्य बनाएं।

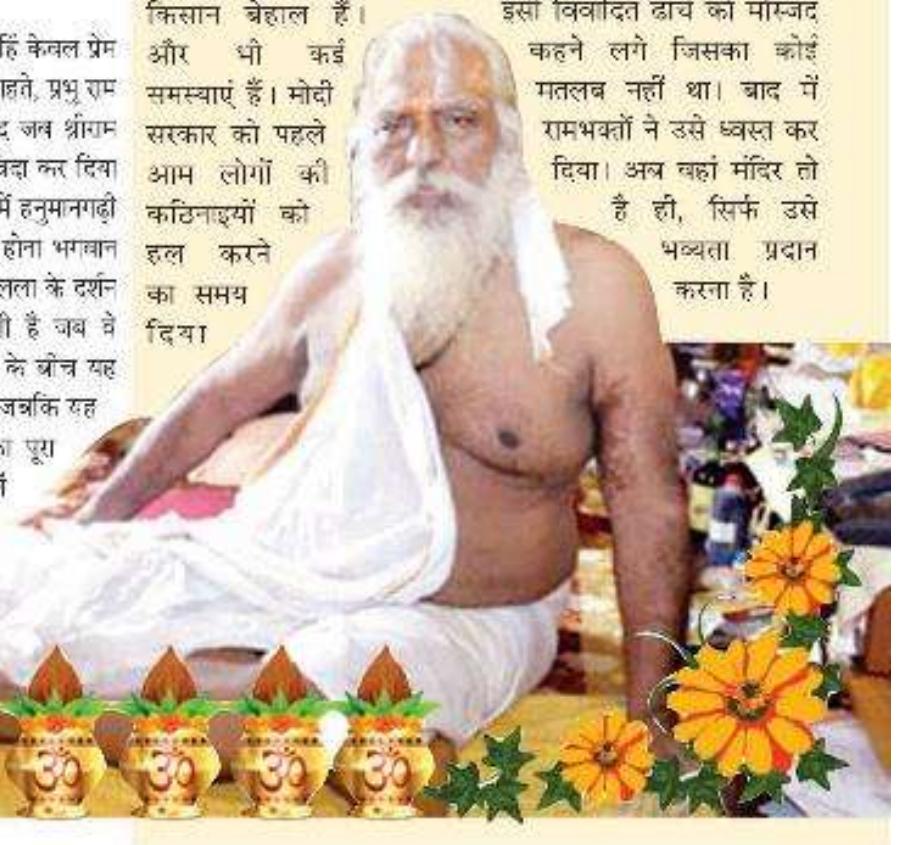
‘मोदी की सरकार के रहते बन जाएगा श्रीराम जन्मभूमि मंदिर’

महंत नृत्यगोपाल दास जी श्रीरामजन्मभूमि न्यास के अध्यक्ष भी हैं। अयोध्या में श्री स्वामी मणिदास जी को छावनी स्थित उनके निवास पर ‘हनुमत कृपा’ स्मारिका के संपादक मंडल की ओर से जब उनसे पूछा गया कि तथाकथित विवादित स्थल पर भगवान राम के शब्द मंदिर का निर्माण कब तक हो जाएगा तो उन्होंने स्पष्ट कहा कि केंद्र की मोदी सरकार के इसी कार्यकाल में यह कार्य हो जाएगा। उन्होंने कहा कि अभी केंद्र सरकार के सामने कई चुनौतियाँ हैं। बेमौसम वरसात और ओलावृष्टि से किसान बेहाल हैं।

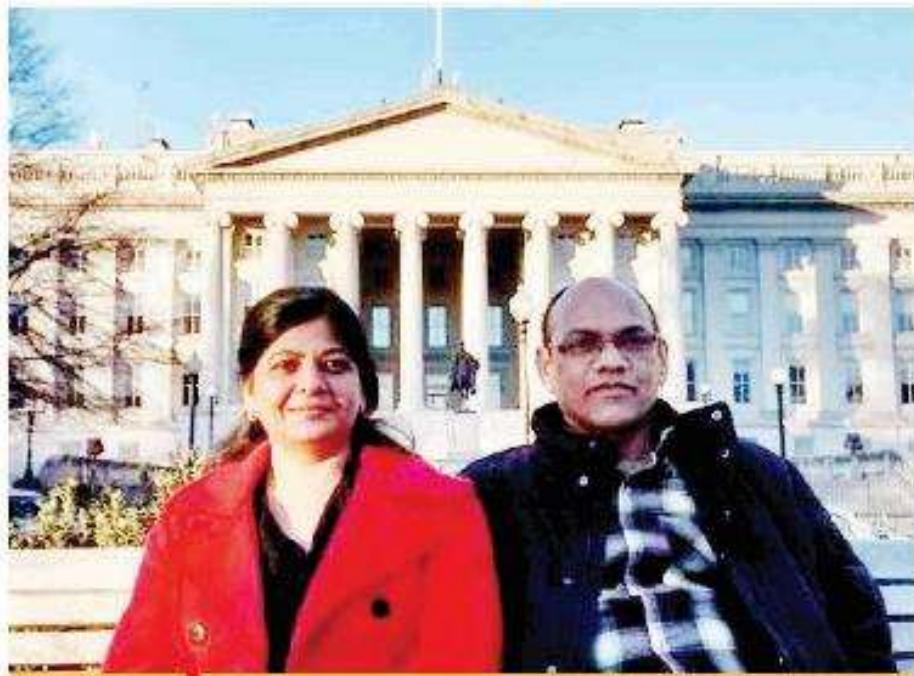
और भी कई समस्याएँ हैं। मोदी सरकार को पहले आम लोगों की कठिनाइयों को हल करने का समय दिया

जाना चाहिए। इसलिए राम मंदिर के बारे में तात्कालिक रूप से सामू-संत इस सरकार पर कोई दबाव नहीं बनाना चाहते। जब महंत जी से पूछा गया कि कुछ लोग समझते की बात कर रहे हैं तो उन्होंने साफ शब्दों में प्रति प्रश्न किया कि समझौता किस बात का? राम जन्मभूमि स्थल पर सिंक और सिंक मंदिर की बात होनी चाहिए और किसी धार्मिक स्थल की नहीं। लाखों वर्ष पूर्व रामलला का यहाँ जन्म हुआ। कई कारणों से मुगलों का भारत वर्ष में शासन स्थापित हो गया। बाबर ने रामजन्मभूमि स्थल पर मस्जिद बनाने का पूरा प्रयास किया किंतु सफल नहीं हो सका। यहाँ जो ढांचा खड़ा था तसमें मस्जिद का कोई प्रतीक चिन्ह था हो नहीं। कुछ लोग इसी विवादित ढांचे को मस्जिद

कहने लगे जिसका कोई मतलब नहीं था। बाद में रामभक्तों ने उसे ध्वस्त कर दिया। अब वहाँ मंदिर तो है ही, सिंक उसे ध्वता प्रदान करना है।



हनुमान जी ने बदल दिया जीवन : दिनेश कुमार पांडेय



प्रम्पली सुषमा जी के साथ दिनेश कुमार पांडेय

भक्तों के अनुमत

इस मंदिर पर आने वाले ऐसे बहुत भक्त हैं जिनका मानना है कि यहां पूजा-अर्चना करने के बाद उनके जीवन में सुखद बदलाव आया है। कई का दावा है कि अनेक भक्तों को चमत्कारिक लाभ हुआ है...

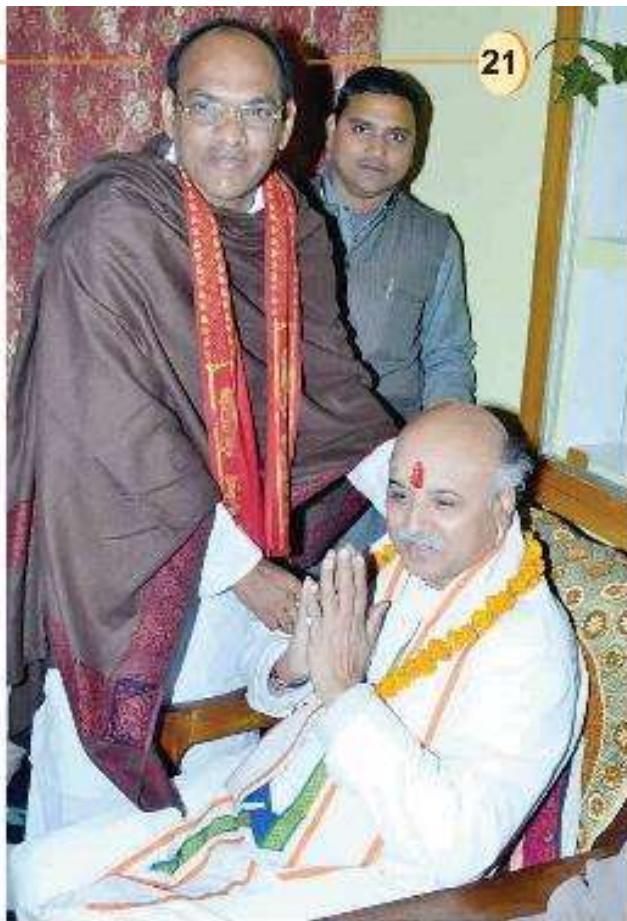
डॉ. रमाशंकर द्विवेदी के मन में जब इस प्रतिमा मंगाया जाना तय हुआ। मंदिर निर्माण का विचार आशा तो इसके कंस्ट्रक्शन और डिजाइन का जिम्मा दिनेश कुमार पांडेय को सौंपा गया। दिनेश जी को इस क्षेत्र का लंबा अनुभव था। लक्खनऊ में रहते हुए भी हर सप्ताह उन्होंने निर्माण स्थल का निरीक्षण किया। एटचेकेट एके द्विवेदी की मदद से उन्होंने इस कार्य को आगे बढ़ाया। दरअसल दिनेश जी ने ही अमेरिका में डॉ. द्विवेदी और उनके सुलतानपुर स्थित गांव के बीच कड़ी की भूमिका निभाई। हनुमान जी की मूर्ति का नयन भी आमान काम नहो था। उन्होंने इसके लिए कई जगह बात की। अंततः जयपुर से

प्रतिमा मंगाया जाना तय हुआ। इस प्रतिमा के बारे में दिनेश जी बताते हैं कि इसका डिजाइन खास तौर से तैयार करवाया गया। इस मूर्ति में हनुमन जी दाहिने हाथ से आशीर्वाद की मुद्रा में हैं, गदा (जो पूर्णार्थ का प्रतीक है) कंधे पर है और हृदय में राम-सीता का बास है। इस मुद्रा में मूर्ति को तैयार करताने में गहीनों लगे। इस मूर्ति का बजन मात्र कुतल है। उनका कहना है कि अगर कोई सच्चे मन से हृदय में भगवान का नाम लेकर कार्य प्रारंभ करे तो उसे अंजनीपुत्र का आशीर्वाद अवश्य मिलेगा और उसका यनोरथ अवश्य पूरा होगा।



दिनेश जी बताते हैं कि मंदिर स्थापना के बाद उनके मन में हर सत्राह सुंदरकाण्ड का पाठ करने की इच्छा जागृत हुई। इसकी शुरुआत लखनऊ के चिवेणी-नगर स्थित घर से की। फिर धीरे-धीरे पूरे लखनऊ में हर शनिवार को घर-घर जाकर निशुल्क यह कार्यक्रम किया जाने लगा। धीरे-धीरे कई दीक्षियों गठित हो गयी जो निरेसर इस पुण्य बगड़ में तन-मन-धन से लगो हैं।

सनातन धर्म से लगाव उनका इतना गहरा है कि उसके प्रचार-प्रसार में पूर्ण समर्पण में जुटे हैं। न लिंग भारत में बल्कि दिवेशों में भी विभिन्न माध्यमों से इस कार्य को आगे बढ़ा रहे हैं। आप विश्व हिंदू परिषद से भी सक्रिय रूप से जुड़े रहे हैं। अमेरिका के लिए सुंदरकाण्ड की १० हजार किलों भिजवा चुके हैं। वहाँ के लिए खास तौर से अंग्रेजी (रामन लिपि में डायग्नल साइन के साथ) में उन्होंने सुंदरकाण्ड की पुस्तकें बेची हैं। इसके अलावा अंग्रेजी में ही अर्थ सहित रामचरित मानस की आठ कुलत फूलके अमेरिका भिजवा चुके हैं। हनुमान जी को कृषा से रामनामे गम्भे, तुलसी की जपमाला, भगवा ध्वज आदि सामग्री का वितरण भी निरंतर करते रहते हैं। इतना ही नहीं, अनेकवा जाकर भी उन्होंने सुंदरकाण्ड, रामचरित मानस पाठ आदि अनेक धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन बहां विभिन्न स्थानों पर कराया है। दिनेश जी बताते हैं इस मंदिर से जुड़ने के बाद उनका पूरा जीवन ही बदल गया। उन्होंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि वे स्वयं या उनका परिवार अमेरिका में रहेगा। आज हनुमान जी की कृषा से उनका परिवार अमेरिका में स्थायी रूप से रहने चला गया है। बेटी बहां मेडिकल की पढ़ाई कर रही है तो बेटा १२वीं में अध्ययनरत है और वे स्वयं भारत संचार निगम लिमिटेड (बोएसएनएल) से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेकर अमेरिका जाने की तैयारी में हैं।



सनातन धर्म से दिनेश जी का लगाव इतना गहरा है कि उसके प्रचार और प्रसार में पूर्ण समर्पण से जुटे हैं। न सिर्फ भारत में बल्कि विदेशों में भी विभिन्न माध्यमों से इस कार्य को आगे बढ़ा रहे हैं। आप विश्व हिंदू परिषद से भी सक्रिय रूप से जुड़े रहे हैं...

► विश्व हिंदू परिषद के शीर्ष लेता प्रवीण तोगड़िया का सम्मान करते दिनेश कुमार पांडेय

▼ वाशिंगटन डीसी में एक टीवी चैनल के कार्यक्रम में स्वामी रामकमल वेतांती टीवी रिपोर्टर लीलिमा मित्तल और सातीश मिश्र के साथ दिनेश कुमार पांडेय



छाग्रजीवन से ही मिलने लगी थी हनुमत कृपा : डॉ. उमाशंकर



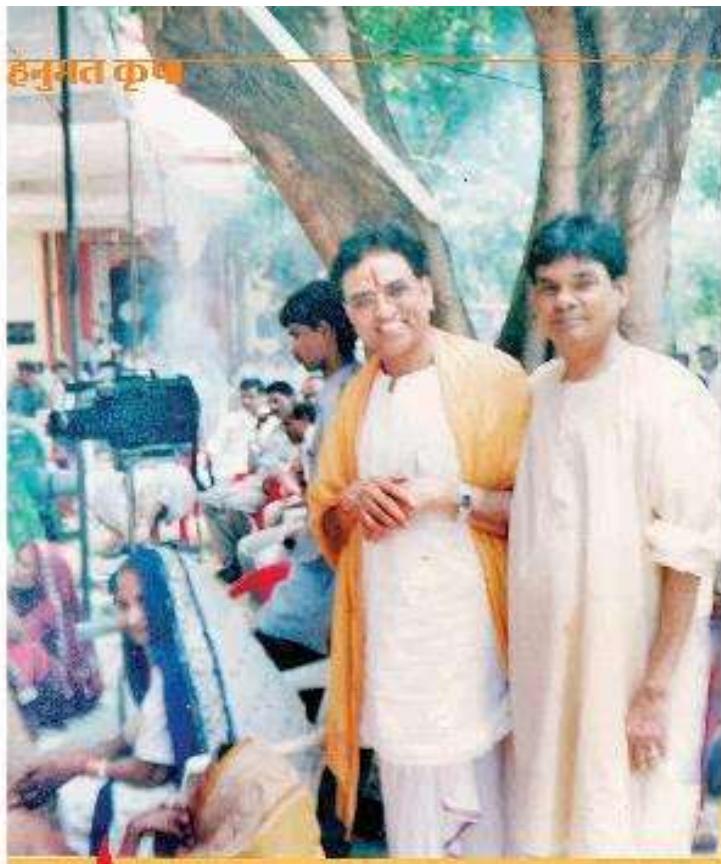
हनुमतपुरम में स्वामी सर्वानंद जी महाराज व प्रेमदास रामायणी के साथ बैठे वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. उमाशंकर। साथ में बाईं ओर खड़े अशोक द्विवेदी व दाईं ओर खड़े श्याम बलदुर द्विवेदी

लखनऊ स्थित बायोटेक यार्क के सलाहकार वैज्ञानिक एवं पूर्व वरिष्ठ वैज्ञानिक औद्योगिक विष विज्ञान अनुसंधान केंद्र (आईटीआरसी) डॉक्टर उमाशंकर श्रीवास्तव का कहना है कि उनपर छात्र जीवन से ही हनुमानजी की कृपा है। जीवन में कई बार ऐसे मौके आएं जब उन्हें लगा कि शब संमार में जीवित रहने के साथे मकसद खत्म हो गए हैं लेकिन

हनुमानजी ने ऐसी प्रेरणा दी कि मैं उनके निर्देश पर फिर काम करने लगा। वर्ष १९६४ में जब मैं इंटरमीडियर की परीक्षा में असफल हुआ तो लताशा ने गुड़े चुरी तरह घेर लिया। न जाने कहाँ से मेरे मन में हनुमानजी की आराधना का निचार आया और मैं मंगलवार का व्रत रखने लगा। इतना ही नहीं, मंगलवार को रात में तीन बजे स्नान करके १५ किलोमीटर साइकिल चलाकर राजेन्द्र नगर से अलीगंज के पुराने

मंदिर में आकर हनुमानजी की आराधना करना मेरा नियम बन गया। थीर थीर ऐसो आदत पड़ी कि रामचरित मानस के अखण्ड गाठ में सुनरकाण्ड का पाठ करते गें गुड़े विशेष रूचि आने लगी। डॉ. श्रीवास्तव ने बताया कि हनुमानजी कृपा से ही वर्ष १९६९ में मुझे कैटीय शीघ्र अनुसंधान केंद्र (सीडीआरआई) में नैकरी मिली और इस प्रकार मेरा मन हनुमानजी को पूजा-अर्चना में पूरी तरह रप





हनुमतपुरम में स्वामी रामानंद सरस्वती के साथ तथा अपने हर में परिवार के साथ डॉ. उमाशंकर

गया। उन्होंने कृपा से वर्ष १९७३ में पेर तबादला औद्योगिक विव विज्ञान अनुसंधान केंद्र (आईटीआरसी) में हो गया और मैंने वहीं रहकर एमएससी (जन्तविज्ञान) किया। व मीएच. डी. की उपाधि ग्रहण की। इसी दौरान वर्ष १९७६ में वहाँ पर मेरी गुलाकात डॉ. रमाशंकर द्विवेदी से हुई जो हनुमानजी के परमभक्त थे। चूंकि हम दोनों हनुमानजी के भक्त थे इसलिए तब से अबतक हम लोगों की जननिष्टता बढ़ती गई। उन्होंने बताया कि वर्ष १९८४ में जल डॉ. द्विवेदी अमेरिका जा रहे थे तभी उन्होंने तय किया कि वह पूँछ भी अमेरिका जलूर चुनाएंगे लेकिन उन्होंने कहा कि मैं हनुमानजी को आराध्या न छोड़। वर्ष २००२ में जब डॉ. द्विवेदी के पैतृक गांव पिपरी साईनाथपुर (सुलतानपुर) में संकटमोचन हनुमान मंदिर की नींव पड़ी तभी से इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर स्प्रिंगुअल एडवांसमेंट (आईसी) से जुड़ गया है।

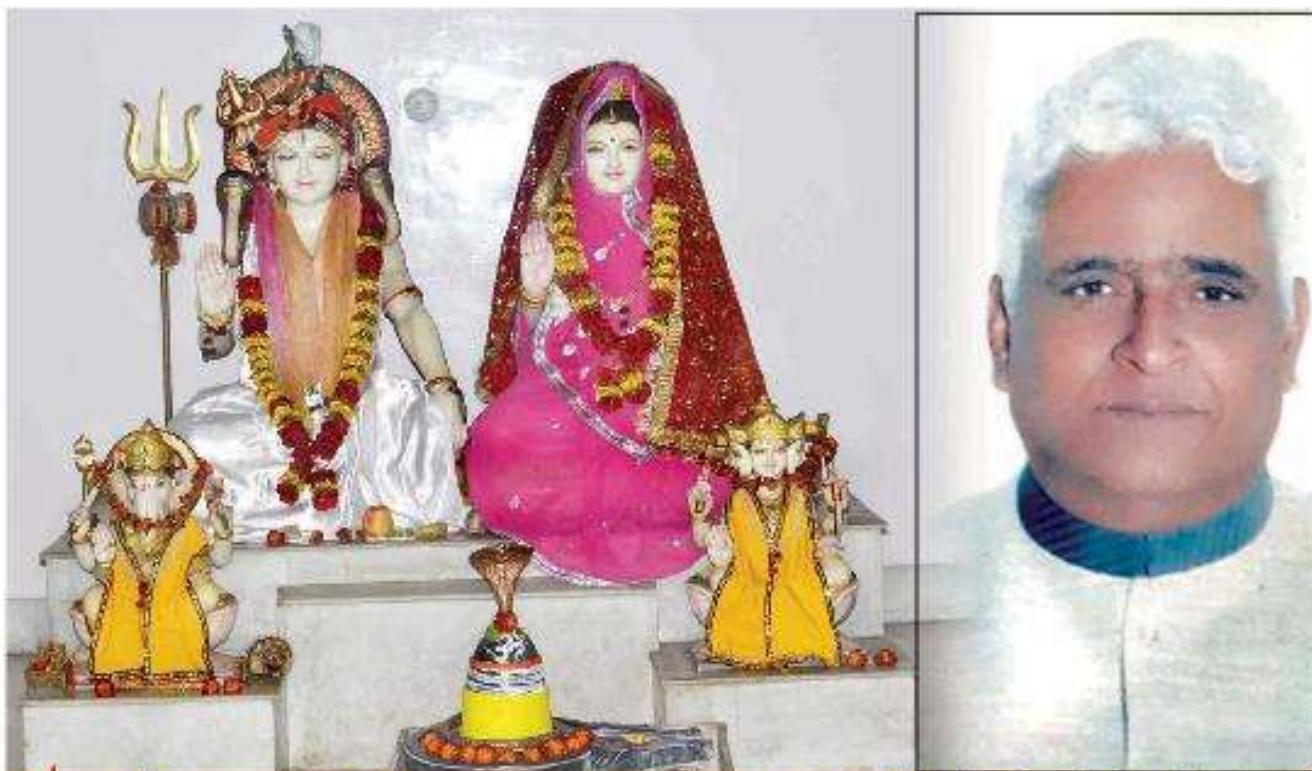


प्रभु की कृपा से दोबारा जीवन मिला

डॉ. उमाशंकर ने बताया कि 2005 में अमेरिका से लौटने के बाद मैं उम्मीद लग से लौमार हो गया था। डॉक्टरों वे जवाब दे दिया था। उस गम्भीर डॉ. उमाशंकर द्विवेदी से जाना अमेरिका से फोन करके हनुमानजी की आरटी के बाद मुझे आशीर्वाद देते रहे और कहते रहे कि मैं हनुमानजी का निरंतर व्यान करता रहूँ। हनुमानजी मुझे अवश्य ही जीववदाव देंगे। इससे नेरे मज में बहुत आज्ञाविश्वाश पैदा हुआ। प्रभु की प्रेरणा से एसजीपीजीआई के पिल्यात डॉक्टर गैरा चौधरी व डॉ. राजन सक्सेना ने गेटा इलाज किया और मैं पूरी तरह स्वस्थ हो गया। तब से मैंने अपने आप को पूरी तरह से हनुमानजी को समर्पित कर दिया। हनुमानजी ने भी मेरी प्रार्थना स्वीकार की और प्रभु के प्रति मेरी भक्ति बढ़ी गई। मेरी बीमारी के दौरान मेरी पत्नी निर्मल की भूमिका साहित्री की तरह थी जो अपने पति सत्प्रयान को यमराज के यहाँ से बाप्स लायी थी। मेरे पुत्र अंशुल और पुत्री एकता व दानाद हॉस्पिट ने दुइ जीने का साहस दिया। डॉ. श्रीवास्तव कहते हैं कि जीवन के उत्तरार्ध में हनुमानजी से एक ही प्रार्थना है कि 'प्रभु, मेरे अवगुन चित न परो'। हनुमानजी का व्यान करते समय जबसे सीधे बाह्यीत लगते हैं तबसे ज्यादा आवंट आता है। प्रभु जिवा माणे जबकुछ देते हैं। उनसे कभी कुछ नहीं गांगला याहिए। डॉ. श्रीवास्तव ने बताया कि उनके पास हनुमानजी का ऐसा सुंदर चित्र है, जिसको देखते मात्र से नव आवंटित हो जाता है। वह इल चित्र को विशुल्क हर हनुमान भजन को देना चाहते हैं।



भावना ही कराती है भगवान का अवतरण : जय नारायण तिवारी



▲ उत्तर प्रदेश सरकार के पूर्व मंत्री जय नारायण तिवारी (दाएं) द्वारा भवं भवानी धाम मंदिर में स्थापित देव प्रतिमाएं

विधि का विधान मानव, दानव यहाँ तक कि देवों के भी समझ से परे होता है, किन्तु यदि बुद्धि में सात्त्विकता है और जिचारों में आध्यात्मिकता, तो कभी-कभी उसकी अनुभूति को सम्भावना रहती है। यह विधि का विधान ही है कि वह हर परिवार में एक ऐसा व्यक्ति अवश्य रोजता है जो कि स्वयं तक ही संमित नहीं रहता बल्कि उसके कर्मक्षेत्र में पूरा परिवार और समाज परिलक्षित होता है। यहाँ मैं जिस

हैं 'भारतीय मूल' के अमेरिकी प्रवासी डॉ. रामांशंकर द्विवेदी, जो हागारी कर्मभूगि पिपरी साईनाथपुर के दूबे के पुरवा के निवासी हैं। 'श्री हनुमत धाम' पिपरी साईनाथपुर उन्हों के पुरुषार्थ का अमृतफल है जिसका स्वाद आज पूरा समाज लेख रहा है। इसका निर्माण डॉ. द्विवेदी के जनक प्रातः स्मरणीय स्वर्गीय श्री राजनारायण द्विवेदी की सदइच्छा का मूर्तेरूप है।

भावना ही भगवान का अवतरण करती है और उनके अस्तित्व को इस मरणशोल

संसार में शाश्वत रखती है। विशुद्ध भावना को केवल भावों के तल पर अनुभव किया जा सकता है किन्तु बुद्धि के द्वारा नहीं जाना जा सकता। वह तो केवल भावना से ही जाना जा सकता है। इंश्वर का न तो आदि है और न अंत। इसलिए वह अनंत है। उसका न तो कोई आकार है और न ही रूप है। जिसमें वह निराकार और निरूपाधि है। अतः स्पष्ट है कि भावना ही मात्रमात्र में भगवान का अवतरण करती है और उसके अस्तित्व को संखारती है। इस जगत में यदि



भावना न होती तो भगवान् न होते और भगवान् न होते तो सृष्टि न होती। आखिर इस सृष्टि का सृष्टा तो भगवान् ही है। वही सृष्टि जब सृष्टि की रचना करता है और उस सृष्टि में मानव उद्भूत होता है तो उसके हृदय में भाव यह जानने का उपक्रम करते हैं कि मैं कौन हूँ? किसने, कैसे उद्भूत किया? वही से भगवान् का अस्तित्व जन्म लेता है। इस संसार में जो कुछ दिखाई देता है वह सब माया है और जो दिखाई नहीं देता है, जिसके कारण संसार है और संमार का वैभव है, वही भगवान् है। भगवान् की जब स्वयं कृपा होती है तो अपने भक्त को वह अपनी अनुभूति करता है। कभी-कभी यह अनुभूति इतनी गहरी होती है कि भक्त भाव तरंगों में डूब कर भगवान् में लोन हो जाता है। कबोर दास जी के साथ वही तो हुआ-

**उठा बबूला प्रेम का, तिनका यथा आकाश
तिनका-तिनके से मिला, तिनका-तिनके
यास**

भगवान् भावना के आधार पर तपामना का विषय बनता है और समर्पण से अनुभूति की धारी चन जाता है। किसी वस्तु या व्यक्ति के प्रति जब अतिशय लगाव होता है और उससे पृथक् न होने की इच्छा होती है तो इसको आसक्ति कहा जाता है। परन्तु यही आसक्ति जब भगवान् के प्रति होती है तो महान् भक्ति का उदाहरण बन जाती है। गोरक्षामी तुलसीदाम जी ने वही वरदान अपने प्रभु से मांगा है और उन्हें मिला भी है।

**कामिहि नारि पियारि जिमि, लोभिहि
प्रिय जिमि दाम।
तिमि रथुनाथ निरंतर, प्रिय लागहिं मोहि
राम ॥**

यह दशा तो किसले ही भक्त को प्राप्त होती है। भावनामय व्यक्ति को भगवान् की अनुभूति तो होती हो है और वही अनुभूति



▲ जह नाराहण तिवारी द्वारा शिवमूर्तिनगर मुलतानपुर में स्थापित भवं भवानी धाम

जब गहराई पकड़ती है तो हृदय ही मंदिर बन जाता है और वह प्रेम की आगती डतामने लगता है। इस स्थूल जगत में जब वह धोरे-धोरे अपूर्ण प्रेम को पूर्णरूप देने का उपक्रम करता है तो 'श्री हनुमत धाम' का निर्माण स्वयं भगवान् को कृता के प्रसाद स्वरूप हो जाता है। इस साध्य तक पहुँचने के लिए अनेक साधनाएं पर्वं माधन हैं। इश्कुपा से यह लक्ष्य बहुत सहजता से सुलभ हो जाता है। भावना की भूमि पर भगवान् का भवन बनता है। इसमें अद्वा और प्रेम का मंदिर होता है। जिसे भक्ति कहा जाता है। भावना ही भक्ति को जन्म देती है और भक्ति भगवान् का रूप और स्वरूप निर्मित करती है।

जार्का रही भावना जैसी।

प्रभु मूरति तिन्ह देखी तैसी ॥

सोता स्वयंवर में मंडप के नीचे श्रोराम उपस्थित हैं परन्तु वहाँ वे जनसमूह को उसकी भावना के अनुरूप ही दिखाई देते हैं। जबकि

राम एक ही हैं। वह राम, राजाओं को साक्षात् वीर रम के रूप में, राक्षसों को काल के रूप में, स्त्रियों को श्रुंगर रस की अनुपम मृति के रूप में, विहानों को विग्रह रूप में, जनक समेत गणियों को बच्चे के रूप में और भक्तों को सुख देने वाले इष्टदेव के रूप में दिखाई देते हैं। आध्यात्मिक आसक्ति ही भक्ति है और सह भक्ति आनंददाता है। गुरुनानक जी ने इस आनंद को ही सुख कहा है—

नानक की अरदासा,

सुख यादा, सुख यादा।

गोस्वामी तुलसीदास की वाणी शाश्वत संदेश देती है—

मति कीरति गति भूति भलाई।

जब जेहिं जतन जहाँ जेहिं पाई॥

सो जानव सत्संग प्रभाऊ।

लोकहुं वेद न आन उपाऊ॥

बिनु सत्संग विवेक न होई।

राम कृपा बिनु सुलभ न सोई॥



भूत भावक भगवान ने अपनी कृपा में
ही गुज़ा रारे तीर्थों का दर्शन कराया
और कैलाश मानसरोवर की दुर्गम
यात्रा को सुगम कर वहाँ भी पहुंचाया।
आज वह भवं भवनी धाम शिवपर्वतनगर,
मूलतानपुर में संपूर्ण परिवार सहित विश्वभावन
हाकर हमारे परिवार, समाज और जनपद के
ऊपर कृपा बरसा रहे हैं। अनुभूति और आसथा के
स्तर पर जोवन की अनेक यात्राओं में सर्वोच्चक
महत्वपूर्ण मन् २००६ में कैलाश मानसरोवर लो
यात्रा का प्रसंग है। इसमें मेरे सहवात्री अमेरिका
निवासी महान हनुमानधर्म डॉ. रमाशंकर द्विवेदी,
चंडीगढ़ के श्री भारद्वाज और दिल्ली के श्री
आरके शर्मा थे। डॉ. द्विवेदी को मैंने इसी पूरी
यात्रा में देखा कि वह लेटते ही सो जाते हैं।
उनके इसी रीति पर मुझे तुलसीदास याद आते हैं—
तुलसी भरोसे राम कं, निर्भय होकर सोए।
अनहोनी होनी नहीं, होनी होकं होए॥

मुझे लगता है कि भगवान के प्रति वहो
भक्त का पूर्ण समर्पण है। हमारी कैलाश यात्रा
का पहला दिन था। पैदल चलते-चलते दूम
झबड़ गया। पैरों ने जवाब दे दिया। मैं एकदम
हार सा गया। लगने लगा कि अब यात्रा किसी
भी कीमत पर पूरी नहीं कर पाऊंगा। मन हो
मन पश्चात्ताप, आत्मगतानि, क्षोभ से हृदय भर
गया, रुलाई आ गई। वह घटना जिस दिन
घटित हुई उस दिन होटल के एक ही कमरे में
चारों भद्रवात्री स्के थे। मेरी हालत देखकर डॉ.
रमाशंकर द्विवेदी बोले कि चिंता पत कीजिए
जयनारायण जी, आप हर हाल में कैलाश
मानसरोवर पहुंचेंगे। आए केवल श्रीहनुमान जो
से रातभर प्रार्थना कीजिए कि मेरी यात्रा सफल
हो। यदि आप स्वस्य न हुए तो मैं भी कैलाश
मानसरोवर नहीं जाऊंगा और आपके साथ
वापस लौट चलूंगा। द्विवेदी जी के कहे अनुयाय
में हनुमान जी से प्रार्थना करने लगा। मेरे और
डॉ. द्विवेदी के मध्य एक स्तूल पर श्री
हनुमानजी विराजमान थे। जिनकी नित्य वी



► डॉ. रमाशंकर द्विवेदी के साथ कैलाश मानसरोवर पर जात नारायण तिवारी

हनुमान जी ही ने मुझे पहुंचाया कैलाश मानसरोवर

धौनि उस दिन भी पूजा अर्यना कर डॉ. द्विवेदी
जो गहरी नोंद में सो गये। मेरे अंतर्मन में
निराश का अंधकार अंगड़ाई ले रहा था। यात्रा
पूरी न होने की आशंका मुझे रुका रही थी। फिर
ऐसे मैं बेचारी नोंद कहा आता। ऐसा लग रहा
था कि मेरा रुदन हनुमानजी सुन रहे थे। गोकर
मैं थोड़ा हल्का हुआ और जैसे-तैसे सोने का
प्रयास करने लगा। सामं फूलने की व्यथा से
मुक्ति आने के लिए इन्हेलर लिया और लेट
गया। नोंद आई या प्रतीत हुई यह मैं स्पष्ट रूप
से कह नहीं सकता। परन्तु प्राज्ञः याच बजे मैं
स्वसे पहले उठ गया। आश्चर्य! न तो पैरों में
दर्द था और न ही सांस फूल रही थी। मैं कश
के बाहर धूमने लगा गया। धूमने के बाद लगने
लगा कि मैं अपनी यात्रा पूरी कर लूंगा। अब
मुझे विश्वास हो गया था कि रुद्रवतार भगवान
श्री हनुमानजी को कृपा का हो वह परिणाम है।

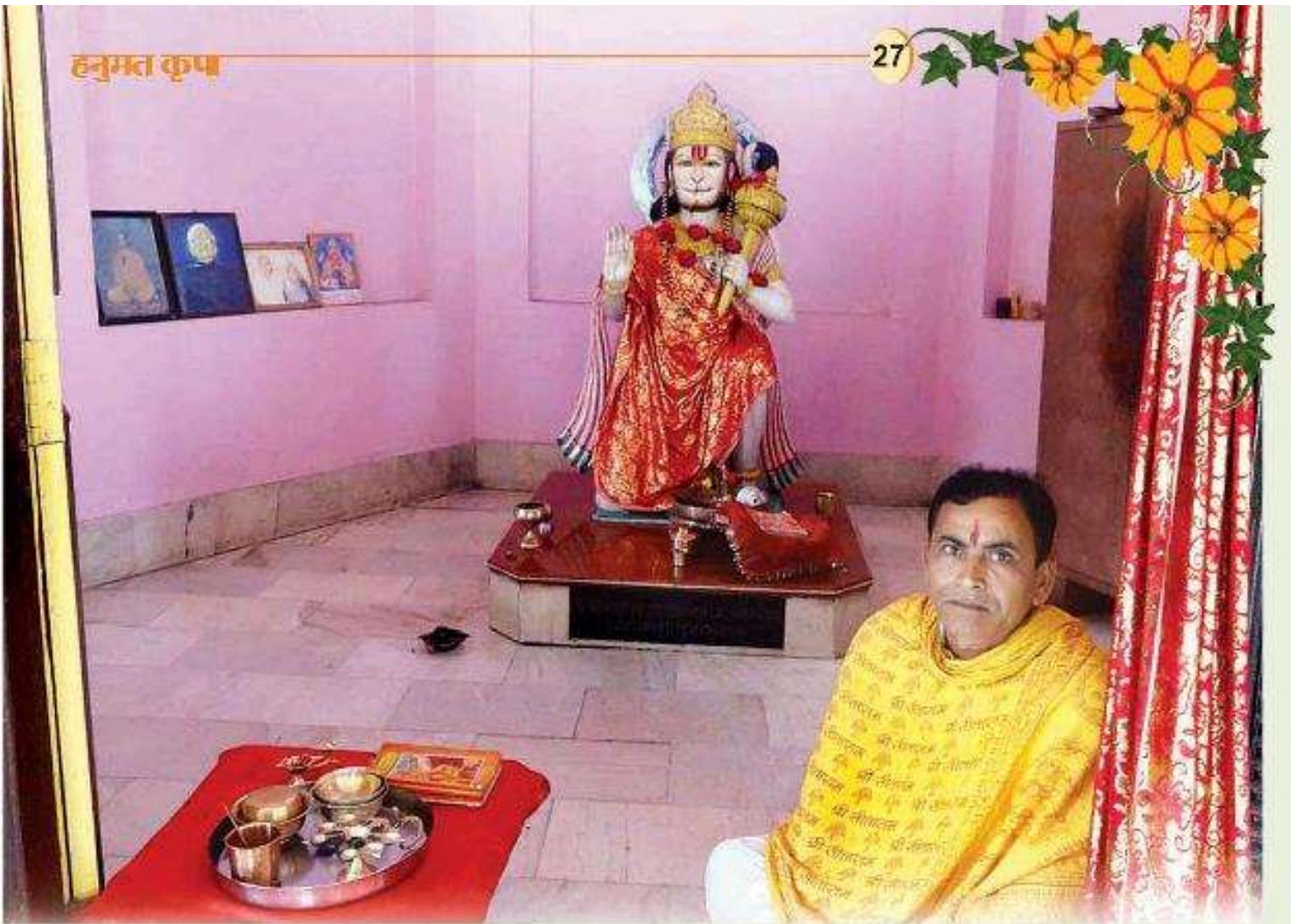
मन ही मन कोटि कोटि प्रणाम करता हुआ ऐं
कैलाश मानसरोवर के लिए निकल पड़ा और
वहाँ पहुंच कर मेरी यात्रा चमत्कारिक रूप से
पूरी हुई। वहीं से भगवान शिव और मां गौरी के
प्रति जिस अटूट आस्था एवं गतिं ने जना
लिया उसकी अभिव्यक्ति स्वयं भगवान शिव
और मां गौरी ने 'भवं भवनी भास' के रूप में
को है। मैं रूपथरूपक लहता हूं कि कैलाश
मानसरोवर की यात्रा के बाद मैंने आजतक
इन्हेलर नहीं लिया है और न ही प्रभु को कृपा
से मुझे इसकी जरूरत यड़ी। इसी के साथ
अनायास वह स्वर तिक्तल पड़ता है—

नमस्ते नमस्ते विभो विश्व मूर्ते, नमस्ते
नमस्ते विदानन्द मूर्ते।

नमस्ते-नमस्ते श्रुति ज्ञान गम्मम्, प्रभो शूल
याणि विभो विश्वनाथ॥

(लेखक जब नारायण तिवारी उप उपकार के पूर्व मंत्री हैं)





प्रभुसेवा-गोसेवा को समर्पित कर दिया जीवन : 'पुजारी जी'

इस मंदिर के अस्तित्व में आने के बाद मे ही सेवक के रूप में श्री अनिल कुमार द्विवेदी 'शास्त्री जी' कार्य कर रहे हैं। प्रभु सेवा और गो सेवा को ही उन्होंने अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया है। वह प्रेरणा इन्हें डॉ. रामांकर द्विवेदी के सत्संग में मिली। किंवद्या था, अनिल जो मैं आया एक क्रांतिकारी परिवर्तन और जीवन को सुखमय बना दिया प्रभु हनुमान जी ने। इनकी दिनचर्या ही बदल गयी। सन् २००५ में जब पुजारी पंडित रविमणि जी ने स्वास्थ्य को लेकर मंदिर की पूजा अर्चना में अममर्थता जाहिर की तो मंदिर ट्रस्ट को लगा कि अब यहां एक नये पुजारी की आवश्यकता है। इसके बाद अनिल जी ने स्वेच्छा से बिना किसी अर्थ को लालसा से हनुमान जी की

सेवा करने का मन बना लिया। तब मे निरंतर वे इस काम में पूरे मनोयोग से लगे हुए हैं। इनको धर्मपत्नी निशा द्विवेदी एवं पुत्राण अभिषेक व अमित तथा पुत्रियाँ-कहना व अंशिका भी निरंतर भक्तिभाव से इस काम में महयोग करती हैं। सुबह चार बजे मैं उनकी दिनचर्या शुरू होती है और रात ९ बजे तक चलती रहती है। प्रातःकाल मंदिर के कपाट खुलने से लेकर रात बंद होने तक वे हनुमान जी की सेवा में लगे रहते हैं। पवनसुत का स्नान, शृंगार, आरती से लेकर मंदिर की गौशाला में जितनी गायें हैं, उनकी सेवा भी पुजारी जी ही करते हैं। हनुमान जी की शरण में आने के बाद पुजारी जी को असाधारण उपलब्धियां हासिल हुईं।



स्वामी रामानंद सरस्वती बने मार्गदर्शक : अशोक द्विवेदी

सौभाग्यवश मेरा जन्य इसी परिचय में वर्ष १९६१ में हुआ। अध्यात्म की दिशा में मेरा दृष्टिकाव डॉ. साहब यानी स्वामी रामानंद सरस्वती की प्रेरणा से हुआ। प्रारंभ में मैं गतिक तो नहीं था किंतु आध्यात्मिक भी नहीं था। शिक्षण काल में ही डॉ. साहब मुझे लहूत ज्यादा प्यार करते थे। पूरे परिवार में मुझे अपने पिताजी, माता जी के बाद डॉ. साहब का अद्भुत प्यार एवं सहयोग मिलता रहता था। उसका वर्णन शब्दों में करता मेरे



लिप संभव ही नहीं है। डॉ. साहब ने शिक्षण काल में मुझे स्नातक करने के बाद एलएल.बी. करने को सलाह दी। इस सलाह के आधार पर ही मैंने पढ़ाई पूरी करने के बाद जनपद मुलतानपुर में बकालत प्रारंभ की। मेरे परिवार में पिताजी, दादा जी, बाढ़ा जी एवं प्रिपितामह, सभी लोग अति आध्यात्मिक थे। यह मेरा सौभाग्य ही था कि संकटमोचन मंदिर के निर्माण का उत्तरदायित्व मुझे माँ पांच गया, जिसका निर्वहन मैंने पूरी क्षमता के साथ किया। इस



मंदिर में आयोजित हवन पूजा में शामिल अशोक कुमार द्विवेदी

पवित्र कार्य में मुझको आदरणीय चानाजी श्री शिवकुमार द्विवेदी जी का पूरा सहयोग मिला। जिसके लिए यह ट्रस्ट उनके प्रति सदैव आभारी रहेगा। कई अन्य लोग भी मंदिर निर्माण से लेकर आज तक धिन धिन प्रकार का सहयोग करते रहते हैं। श्री अनुराग द्विवेदी जी इस ट्रस्ट का मीडिया प्रबंधन देखते हैं, उनका अभूतपूर्व सहयोग मिलता रहता है।

यहां वर्षभर कई भारिक कार्य सम्पन्न होते रहते हैं। सबसे बड़ा अनुष्ठान १३ जून को स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में मनाया जाता है।

हनुमान जयंती का वर्ष भी कई भूमध्यम से मनाया जाता है। इसका आयोजन प्रदीप गित्र एवं उनके परिवारीजन करते हैं। कृष्णजन्माष्टमी, रामनवमी, शिवरात्रि, नवरात्रि के कार्यक्रम भी ब्रह्म भक्ति के साथ मनाए जाते हैं। मंदिर में पूजा-पाठ का दायित्व पूजारी श्री अनिल द्विवेदी जी निशा रहे हैं। मंदिर निर्माण के बाद सम्पूर्ण परिवार में आध्यात्मिक विचारधारा और गहरी हुई है, जिसका श्रेय डॉक्टर साहब को ही जाता है। उनके भर्गारथ प्रयास से ही प्रधु का अगमन इस हनुमतपुरम को धरती पर हुआ।





आकांक्षा

आराधना

मुझे मिली सुख-शांति : आराधना

बथा नाम तथा गुणः की कहावत आराधना पर अक्षरणः लागू होती है। अपने पिता अशोक कुमार द्विवेदी जी तरह वे भी पवन-पुत्र की परम भक्त हैं। वे संस्कार उन्हें परिवर्तिक विशय में ही मिले। इस मंदिर के निर्माण को भी उन्होंने बहुत करीब से देखा। उनका कहना है कि जब से यह मंदिर अस्तित्व में आया है तब से न सिर्फ उनके परिवार में बल्कि पूरे गांव में सुख, शांति और समृद्धि जड़ी है। हनुमान जी की पूर्ति के बारे में उन्होंने बताया कि यह एकदम जीवंत है। गांव या आसपास धृष्टि

बिसी सुख-दुख की घटना पर वैसे ही भाव का आभास देती है। आराधना का कहना है कि यह मंदिर चमत्कारिक है और यहाँ जो सच्चे मन से आता है उसकी हर इच्छा पूरी होती है। वहाँ ऐसे रोगियों को टीक होते उन्होंने स्वयं देखा है जो बड़े-बड़े ढाँकदरों के यहाँ से नियश हो चुके थे। वे बताती हैं कि मंदिर निर्माण के दौरान जब छत ढाली जा रही थी, तब एक मजदूर कपड़ा से नीचे पिर गया लेकिन चमत्कारिक रूप से उसे कोई चोट नहीं आयी। इसी प्रकार जब १३ जून २००३ को मंदिर का उद्घाटन होना था तब आसपास के

इलाकों में दूर-दूर तक बहुत ही भवनक आंशी-तूफान और बरसात ने कहर डाया था लेकिन उस दिन गांव में ऐसा कुछ भी नहीं हुआ और पूरा कार्यक्रम बहुत ही अच्छे मौसम में सम्पन्न हुआ। वे इसे पवनसुत का चमत्कार ही मानती हैं। दूसरी ओर आगमन की बड़ी बहन आकांक्षा भी पवनसुत की परम भक्त है। वे कहती हैं कि मुझे जो भी मिला है, हनुमानजी की कृपा से मिला है। कृपा तो इतनी है कि पात्रता मेरी कम पड़ जाती है। ऐसे प्रधु के विषय में मैं क्या बोल सकती हूँ।





अनुराग द्विवेदी

हमारे प्रेरणा स्रोत हैं हनुमानजी : अनुराग

आमस्था एवं श्रद्धा का केंद्र बने संकट मोचन धार्म की स्थापना (प्राण प्रतिष्ठा) से लेकर होने वाले कार्यक्रमों व आयोजनों को जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास मीडिया के माध्यम से करता रहा है। नाम मात्र की सेवा करने पर ही हनुमानजी की कृपा से वर्ष १९७७ से आज तक मीडिया जगत में कार्य कर रहा है। वैसे तो जीवन के प्रारम्भ से ही हनुमान चालोसा, आरतो व पूजन अर्चन कर रहा

था। जब ने २००३ में हनुमानजी की स्थापना वर्हा हनुमतपूरम् में हुई तब से प्रतिदिन सूबह शाम स्पर्शिवार हनुमान चालीसा, श्रीराम स्तुति व आरती कर हनुमानजी का आशीर्वाद ले रहा हूँ। प्रत्येक मंगलवार को सुंदरकाण्ड का पाठ भी करता हूँ। तब से हनुमानजी को कृपा से हर क्षेत्र में विशेष तौर से अर्धिक क्षेत्र में अभूतपूर्व सफलता मिली है। इसी कृपा से वर्ष २०१० में वकालत के क्षेत्र में भी हूँ और मंदिर के संलग्न

मोचन फाउंडेशन में विधिक सलाहकार भी हूँ। हनुमानजी की कृपा अनवरत मिलती रहे यही कामना है।

जीवन में उतार चढ़ाव तो हमेशा आते हैं लेकिन जो हनुमानजी का ध्यान करते हैं उनकी समस्याएँ धीरे-धीरे समाप्त हो जाती हैं। जिस किसी पर भी हनुमानजी की कृपा हो जाए उसके सफलता के द्वार खुलते जाते हैं और उसके सभी शत्रुओं का नाश भी हो जाता है। ऐसा ही कुछ मेरे साथ हुआ। जब भी कभी जीवन में कठोर समय आया, मैंने हनुमानजी को सदैव अपने समीप पाया। अंजनिपूत्र सिर्फ भक्ति भाव को देखते हैं और जो भक्ति निर्मल मन से उनको आराधना करता है, वह उसके सारे दुखों को हर लेते हैं। मुझे यही कहना है-

सर्व इतना दीनिए जामे कटुम्ब समाव।
मैं भी भूखा ना रहूँ साधु न भूखा जाव॥



हनुमान जी ने दिया नया जीवन : धर्मद सक्सेना

प्रबन्धपत्र की कृपा जिस पर हो जाए, उसे सब कुछ मिल सकता है। उनके एक ऐसे ही भक्त हैं धर्मेंद्र सक्सेना जिनको एकदम नया जीवन मिला। अगले जीवन की चमत्कारिक घटना के बारे में वे जाता हैं कि ८ अगस्त २००८ को अपने गांव पिपरी साईनाथपुर में घर के आंगन में रात में सो रहे थे। उभां अचानक उनके बारे पैर की जांघ में गधुमकड़ी के डंक मारने जैसा अहसास हुआ। लौकिक टार्च के उगाले में कुछ भी दिखाई नहीं पड़ा और मैं फिर गहरी नींद में सो गया। रोज की तरह जब मैं शुब्ह देर तक नहीं जगा तब मेरे बड़े भाई शैलेन्द्र ने मुझे जबरन जगाया। उन्हें मैंने रात में मधुमकड़ी के डंक मारने को घटना बताई। भाई साहब ने गांव के डॉक्टर शमी को बुलाकर दिखाया तो उनका कहना था कि ये गधुमकड़ी के डंक मारने का निशान नहीं है बल्कि सोप के काटने का निशान लगता है। आनन्-फानन में मुझे अशोक द्विवेदी व अनुराग द्विवेदी कार से लेकर सुलतानपुर भूम्हालाय आए। तब तक मेरी बेहोशी और ज्यादा बढ़ने लगी थी। हालात बिगड़ती देख जिला अस्पताल के डॉक्टर ने ग्लूकोज तो बढ़ा दिया लेकिन बोटलेटर की सुविधा न होने की बात कहकर मुझे निजी अस्पताल में ले जाने को मलाह दी। मेरे रिश्तेदार कुचांशकर व मोहिनी श्रीवास्तव ने मुझे स्थानीय गोनली अस्पताल में भर्ती कराया लेकिन वहां न तो सीरियर डॉक्टर मिला और न ही बोटलेटर की सुविधा। तब तक मुझे सांस लेने में परेशानी और बढ़ जुको थी। परिजन व रिस्तेदारों ने मुझे स्टेचर पर लिटाकर बगल के आस्था हासिलाल में भर्ती करा दिया। डॉ. केसी त्रिपाठी ने बड़ी गुश्किल से मेरा गुह



खोलकर ऑक्सीजन पाइप ढाला और बोटलेटर पर पहुंचाया। एटी-पाइजन वैस्तोन देने के ४८ घंटे बीत जाने के बाबजूद जब मुझे होश नहीं आया तब उन्होंने मजबूरी जाते हुए कहा कि एटी पाइजन वैकरीन की तीन चार डोज देने के बाद मरीज को होश आ जाता है लौकिक मेरे २२ डोज देने के बाद भी इसे होश नहीं आ रहा है। मेरा इलाज खत्म हो चुका है। ये मरीज ९९ फीसदी भौति के मुंह में चला गया है। अब इसके जीवन की एक ही प्रतिशत उमरीद बची है। वैसे तो अस्पताल में दुआ का कोई स्थान नहीं होता लेकिन मरीज के लिए वह आखिरी रात है। अतः आप लोग पूजा-पाठ व मान-मनीती कर सकते हैं। मेरी भौति के लड़के कवकू ने अस्पताल में मौजूद सभी परिजनों से यहांपूज्य मंत्र का जाप करने को कहा और फोन से तमाम मित्रों-रिजिस्टरों से ऐसा ही करने को कहा। इनी बीच एक ज्योतियों ने बताया कि ८८८ की तरीख (८८ २००८) इनके लिए जानलेवा है। इसी दैशन मेरे साथ एक

चमत्कारिक घटना घटित हुई। मुझे अहसास हुआ कि मेरे प्राण निकल चुके हैं। मेरा शरीर गृह हो चुका है। मेरी आत्मा मेरे शरीर को आसमान से देख रही है। मेरे सामने नेरा मृत शरीर पड़ा है। चारों ओर लोग बिलख रहे हैं। हनुमान जी, शंकर जी व मेरे गुरु बाबा हरदेव जी की तस्वीर मेरी अंखों के सामने थी। शावद वह मेरा अंतिम समय था। मेरी आत्मा कधी मृत पड़े शरीर को देखती तो कभी इन देवताओं को। इसी दैशन मुझे अहसास हुआ कि हनुमान जी मुझमे कह रहे हैं कि तुम्हारा जीवन समाप्त हो गया है किंतु मैं तुम्हें नया जीवन दे रहा हूँ।

उधर, डॉ. त्रिपाठी ने केजीएग्यू लखनऊ के कई वारिष्ठ डॉक्टरों से संपर्क कर गय ली और उनकी सलाह पर रात में ही एक इंजेक्शन लखनऊ से मंगवाकर गुहे लगा दिया। सुबह डॉ. त्रिपाठी जी गती मंजूला त्रिपाठी मुझे देखने आई और देखा कि मेरे पैर की उंगलियां हिल रही हैं। उन्होंने तूंत डॉक्टर त्रिपाठी को फोन करके जाया कि आपके मरीज को होश आ रहा है। मेरे होश आने को डॉक्टर त्रिपाठी व अन्य मौजूद लोग चमलकर के रूप में ही देख रहे थे। मंगलवार का दिन था। मैं सुंदरकाण्ड का पाठ करता था। मूँह में आकर्षित लगी होने के कारण मैं खुद तो सुंदरकाण्ड का पाठ नहीं कर सकता था लेकिन पास में खड़ी रिश्तेदार पारूल से सुंदरकाण्ड का पाठ करके मुझने का लिखकर संकेत किया। पारूल ने बगल में बैठकर सुंदरकाण्ड का पाठ किया। तभी मुझे लगा कि नया जीवन मिल गया है। तब से मैंने मांसाहार छोड़ दिया और धीरे-धीरे अगले दुर्गुणों को छोड़ने का संकल्प किया। इसके बाद डॉ. रमाशंकर द्विवेदी के संपर्क में आया जो हनुमान जी के परमभक्त हैं। उन्होंने मुझे रोज सुंदरकाण्ड का पाठ करने की प्रेरणा दी। तब से मैं लगातार प्रतिदिन सुंदरकाण्ड का पाठ व मंगलवार को ब्रत करता हूँ।





सूर्य पाल दुबे

करीब १२ साल पहले स्थापित यह मंदिर आस्था व ब्रह्म का केंद्र बन गया है। कई भक्तजन ऐसे हैं जिनके परिवारीजनों ने पहले जाने-माने अस्पतालों में इलाज कराया जहाँ से चिकित्सकों ने यह कहकर जबाब दे दिया कि इश्वर का नाम लें और सेवा करें, अब ये चंद दिनों के मेहमान हैं। इन भक्तों ने मंदिर में गत्या टेका और पन्नते गांगों तो सबके मध्य गूण स्वस्थ होकर टहल रहे हैं। इतना जरूर है कि ये भक्त प्रतिदिन सुंदरकाण्ड का पाठ व दर्शन करना नहीं भूले हैं।

पंदिर के पुजारो अनिल शास्त्री ने बताया कि संकटमोचनधाम में जो भी दर्शनार्थी

संकट मोचन धाम में मत्था टेकने से पूरी होती है हर मनोती

शिक्षा कक्षा छह तक है। उर्दू, हिन्दी और संस्कृत जानते हैं। इनको साल भर पहले हाथ, पैर व मुँह में लकड़ा मार गवा था। चिकित्सकों ने कहा कि आप लोग इनकी सेवा करें। वहाँ कुछ भक्तों ने इन्हें मंदिर आकर हनुमान जी की पूजा-अर्चना को कहा। इन्हें ऐसा करने पर चमत्कारिक लाभ हुआ। वे हनुमानजी का दर्शन कर आज भी स्मरण करते हैं जिससे चलने व बोलने लगे हैं। इनके दो लड़के हैं जिनमें एक लड़के की उम्र ८५ वर्ष है। इनके परिवार में चौथी पीढ़ी इस मंदिर में दर्शन का लाभ उठा रही है।

हनुमतपुरम के देव नरायण दुबे

१९३१ में जन्मे। वे पांच

भाइयों में दूसरे नम्बर के हैं पहले व तीसरे तथा पांचवें नम्बर के भाई का निधन हो चुका है। श्री दुबे दो-दो बार गम्भीर रूप से बीमार हुए। ऐसा लगा मानों अब नहीं बढ़ेंगे फिर भी वह मान्दर में पूजा-अर्चना करना नहीं भूले और आज

१९८० में जन्मे

शिव दुमार दुबे

१९३१ में जन्मे। वे पांच

भाइयों में दूसरे

नम्बर के हैं पहले व तीसरे तथा पांचवें नम्बर के भाई का निधन हो चुका है। श्री दुबे दो-दो बार गम्भीर रूप से बीमार हुए। ऐसा लगा मानों अब नहीं बढ़ेंगे फिर भी वह मान्दर में पूजा-अर्चना करना नहीं भूले और आज

१९८० में जन्मे

चैरिबाजार फैजाबाद के ६८ वर्षों व निवासी

राम नरायण मिश्र लम्बे अरसे से ओमारी से

जूझ रहे थे। आस पास के सभी छाँकरों को

दिखाने के बाद भी श्री मिश्र की समर्पण का

समाधान नहीं हुआ तो उनकी जिंदगी में हताशा

शर करने लगी। तभी उन्हें किसी ने बताया कि वे भूतप्रेर की बाधा ग्रसित हैं। हनुमान जी के प्रति अटूट आस्था रखने वाले मिश्र जी बजरंगबली की नियमित आराधना करने लगे, जिसके फलस्वरूप उन्हें सभी बाधाओं से मुक्ति मिल गई और वे एकदम स्वस्थ हैं।

१९४० में जन्मे शिवकुमार दुबे प्राइनरी विद्यालय से प्रथानाश्यापक के पद से सेवानिवृत्त हुए हैं। इन्हें अचानक २६ नवम्बर २०१४ को ब्रेन हैमोरेज हुआ और वह बेहोश होकर गिर पड़े। गम्भीर हालत को देखते हुए

चिकित्सकों ने उन्हें तत्काल मेडिकल कॉलेज लखनऊ के लिए रिफर कर दिया। सज्जाह भर भत्तों रहे शिवकुमार के लिए चिकित्सकों ने कहा कि यह चंद दिनों के मेहमान हैं और परिवारीजनों को उनकी सेवा करने की मालाही दी। लेकिन दुबे जी के परिजनों ने मंदिर आकर प्रार्थना की तो वे स्वस्थ हो गए। अब दुबे जी भी वहाँ मंदिर में हनुमान जी का दर्शन कर सुन्दरकाण्ड व हनुमत कवच का पाठ करते हैं जिससे बोलने, पहचाने व स्मरण शक्ति पुनः आ गयी। ऐसे भक्तों का मानना है कि संकटमोचन धाम में जो भी मत्था टेकता है, उसकी मनोकामना अवश्य कुरी होती है।



देव नरायण दुबे

१९३१ में जन्मे। वे पांच

भाइयों में दूसरे

नम्बर के हैं पहले व तीसरे तथा पांचवें नम्बर के भाई का निधन हो चुका है। श्री दुबे दो-दो बार गम्भीर रूप से बीमार हुए। ऐसा लगा मानों अब नहीं बढ़ेंगे फिर भी वह मान्दर में पूजा-अर्चना करना नहीं भूले और आज

१९४० में जन्मे

चैरिबाजार फैजाबाद के ६८ वर्षों व निवासी

राम नरायण मिश्र लम्बे अरसे से ओमारी से

जूझ रहे थे। आस पास के सभी छाँकरों को

दिखाने के बाद भी श्री मिश्र की समर्पण का

समाधान नहीं हुआ तो उनकी जिंदगी में हताशा



हनुमत कृपा से मेरा आध्यात्मिक और भौतिक विकास हुआ : शेष नारायण पांडेय



इसे पत्नी के साथ शेष नारायण पांडेय

आदरणीय डॉ. रमाशंकर द्विवेदी जी मेरे बहनोंद्वारा है। उनकी जब शादी हुई उस समय मैं बहुत लोटा था। उनके सानिध्य का लाभ मुझे तब प्राप्त हुआ जब मैं १९८८ में लखनऊ आध्यात्मिक विकास करने ले गया था। उस समय तक मेरी समझ द्विवेदी जी के प्रति एक बड़े ही संवेदनशील और समाजित रितों को सीमाओं तक ही सीमित थी। १९८५ में मैं पुर्विलास सेवा में आया और डॉ. द्विवेदी जी संयोगवश इसी साल विदेश चले गये। कुछ समय बाद बहन जी भी बच्चों के साथ विदेश चली गयी। इस मध्य डॉ. साहब जब भी स्वदेश आते, उसे मिलने की उत्सुकता अनी रहती और कदाचित अवकाश लेकर मैं उसे मिलने आता था। उन मूलाकातों के बीच उनके अंदर प्रखर आध्यात्मिक चेतना को मैंने पहचाना। लखनऊ में जब मैंने अगना भक्ति बनवाया, संयोगवश उसके कुछ दिन बाद ही डॉ. द्विवेदी भारत प्रमण पर आए और पहली बार उनकी छवि मैंने गेली, बस्त्र में देखी। भक्ति पर कुछ समय रुक कर उन्होंने जो गुणे प्रभु श्री हनुगान जी गहराज

की भक्ति एवं शक्ति की प्रेरणा दी, उससे मैं बहुत प्रभावित हुआ और हर मंगलवार को सुंदरकाण्ड का पाठ तथा हनुमानजी की पूजा-अर्चना को जीवन में समाहित कर लिया। इस प्रबाह को मैंने अपने बच्चों तक भी पहुंचाया है। इससे मेरा आध्यात्मिक विकास भी हुआ तथा भौतिक जीवन में शांति व सम्मान अद्भुत तरीके से प्राप्त हुआ। अब मेरे डॉ. द्विवेदी से संबंध रितों की सीमाओं से पैरे एक मार्गदृष्टा और देवदूत के रूप में हैं।

एक संस्मरण मेरे मित्र श्री अरुण मिश्र जो वर्तमान में सोनीआइ में मेरे साथ नियुक्त हैं, उनके द्वारा सुनाया गया है, उसे मैं सम्मिलित कर रहा हूं जो उनके पूर्वज के माथ धृति घटना पर आधारित है...

करीब ४०-५० बायं पूर्व जनपद प्रतापगढ़ के थाना हथिगांव क्षेत्र में नरसिंह धाम में गंगा जी के किनारे एक मंदिर में बाबा सीताराम जी पूजा-अर्चना किया जाता था। इसी क्षेत्र के ग्राम परसीपुर निवासी श्री भगवत् प्रसाद मिश्र को उनका बड़ा ही आशोर्वाद प्राप्त था। बाबा जी की अवस्था जब काफी अधिक हो गयी और पूजा-पाठ करने में उन्हें अति कठिनाई आने लगी तो उन्होंने एक दिन भगवत् प्रसाद मिश्र को बुलाया और अपने यास रखा। एक प्रत्यर की हनुमानजी की मूर्ति प्रदान करते हुए कहा कि मैं अब नियमित पूजा नहीं कर पारहूं। इसलिए यह मूर्ति आपने घर ले जाएं और नियमित पूजा करें। बाबा जी के कथनात्मक भगवत् प्रसाद जी उस मूर्ति को घर से आए और उसकी

नियमित पूजा करने लगे। लेकिन मूर्ति आने के कुछ दिन बाद उन्हें सपने आने लगे कि मेरी मूर्ति को घर की सीमा में न बांध कर इसे मंदिर में पहुंचाया। भगवत् प्रसाद जी ने इस सपने पर ध्यान नहीं दिया। कुछ दिनों बाद उनके पुत्र बजरंग प्रसाद के एक बड़ा फोड़ा निकला। उसे तमाम चिकित्सकों को दियाया गया लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। इमीं बीच भगवत् जी को फिर सपना आया कि बाद आपने मेरी मूर्ति मंदिर में नहीं पहुंचायी तो और परेशानियाँ आएंगी। थक हार कर उन्होंने हनुमानजी की मूर्ति गांव के मंदिर में स्थापित करवा दी। उसके दूसरे ही दिन में टीक हो गया। भगवत् जी नियमित रूप से मंदिर जाकर उस मूर्ति को पूजा करते थे। एक दिन अचानक मूर्ति मंदिर से चोरी हो गयी। बजरंग जी बहुत चिंतित हो गये। अपने पुत्र को देख भगवत् जी ने कहा कि बेटा परेशान मत हो जिसने मूर्ति चुरायी है, वह उसे संभाल नहीं पाएगा और उसे मंदिर में वापस रख देगा। उनकी बात मच हुई और कुछ ममत बाद चोरों ने मूर्ति को वापस यथास्थान लाकर रख दिया। कालांतर में मिश्र परिचार प्रतापगढ़ से डलाहालाबाद आ गया। इसी बीच भगवत् जी का देहांत हो गया था। १९८६-८५ में बजरंग जी को सपना आया कि मेरी पूजा नहीं हो गई है और आसपास बहुत गंदगी है। मुझे यहां से ले जाओ। बजरंग जी ने गांव जाकर देखा तो मंदिर के आसपास बास्तव में बहुत ज्यादा गंदगी थी, मंदिर जीर्ण-शीर्ण हो गया था और वहां पूजा भी बंद थी। यह देख बजरंग जी बहुत आहत हुए और हनुमान जी की मूर्ति को अपने साथ ले आए और डलाहालाबाद में एक मंदिर में उसे स्थापित कर दिया। उसके बाद मिश्र परिचार और भी सुख शांति से रहने लगा।



हिमालय से ऊंचा है डॉ. द्विवेदी का व्यवित्रित्व : दयाराम अटल



14 जून 2007 को भारत यात्रा पर आये प्रवासी भारतीय वैज्ञानिक डा. आर.एस. द्विवेदी एवं धर्मपल्नी श्रीमती अरुणा द्विवेदी को मध्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम का विघ्रह भैंट करते दयाराम अटल

सुन कथि तोहिं समान उपकारी ।
नहिं कोउ सुर, नर, मुनि तनु धारी ॥
प्रति उपकार करड़ का तोरा ।
सनमुख होइ न सकत मन मोरा ॥
करि विचार देखा मनमाहीं ।
तोसे उरिन तात मैं नहीं ॥

साक्षात् भगवान विष्णु के अवतार मध्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम जिसके प्रति ऐसे भाव व्यक्त करते हों ऐसे महाबली संकट मोचन मां अंजनी के लाल आंजनेय श्री हनुमान जी के अनन्य उपासक एवं कृपा पात्र मूलतः जनपद सूलतानपुर के निवासी परम श्रद्धेय डा. रमाशंकर द्विवेदी जी के सम्बंध में कुल लिखना क्रम से कम मुझ अकिञ्चन के बास की बात नहीं है।

बात माह जून वर्ष २००३ की

है। मैंने कुछ ही दिन पूर्व जनपद सूलतानपुर में दैनिक जागरण के व्यूरो प्रमुख/जिला प्रधारी के द्वायित्व का कार्यभार ग्रहण किया था। इसी मध्य श्रद्धेय डा. रमाशंकर द्विवेदी जी नगर सूलतानपुर में स्थित उ.प्र. सरकार के पूर्व मंत्री आदरणीय श्री जयनारायण तिवारी के आवास पर पहुंचे और वहाँ से उन्होंने दैनिक जागरण कार्यालय में फोनकर मुझसे मिलने की इच्छा ग्रहण की। हालांकि कार्यालयी कार्य निवासने के चक्रकर में मैं जब तक उनसे मिलने पहुंच गाता तब तक वे मेरे कार्यालय सहयोगी श्री इंद्र नारायण तिवारी आदि लोगों के साथ स्वयं मेरे पास पहुंच गये। वहाँ उन्होंने मुझे न सिफ़े अपने अद्भुत स्नेह पाश में सदैव सदैव के लिए बांध लिया बल्कि अपनी कृपावृष्टि में मेरे

उ अंतर को भी धिगो दिया।

इस भेंट के गश्नात मैं डा. साहब से ऐसे जुड़ा कि दिन प्रतिदिन संत्रिधों में प्रगाढ़ता बढ़ती ही जा रही है। २७ अगस्त २००५ को अमेरिका में आयोजित होने वाले स्वतंत्रता दिवस समारोह के लिए डा. साहब ने मुझे एक गीत लिखने का आदेश दिया। आदेशानुसार गीत लिखकर मैंने डा. साहब को अमेरिका भेज दिया। 'जवाब दो' शोधक से रचित वह गीत डा. साहब को इतना भा गया कि उन्होंने मुझे काव्यपाठ के लिए अमेरिका से आमंत्रण भेज दिया। हालांकि कुछ अपरिहार्य कारणों से मैं अमेरिका नहीं आ सका लेकिन, मेरे गीत को वहाँ पर आयोजित स्वतंत्रता दिवस समारोह में पढ़ा गया। कालांतर मैं हौं। साहब ने 'जवाब दो' गीत सूजन के लिए मुझे वशाई संदेश/सम्मान पत्र भी प्रेसित किया। डा. साहब से जुड़े इतने संस्मरण हैं कि जिन्हें यदि लिखने लगूंगा तो पूरा एक ग्रंथ तैयार हो जायेगा जो इस लेख में सम्भव नहीं है लेकिन, कुछ प्रसंग ऐसे हैं कि जिनके यहाँ उल्लेख करने के लोभ का संवरण नहीं कर पा रहा हूँ।

बात १४ जून २००७ की है। डा. साहब अमेरिका से भार्या आदरणीया श्रीमती अरुणा द्विवेदी जी के साथ सूलतानपुर आये और अपनी अति व्यस्तता के पश्चात भी उन्होंने न सिफ़े मुझे भरपुर समय दिया बल्कि मुझ पर अपनी कृपावृष्टि भी की। यही नहीं उन्होंने मेरे अनुरोध को स्वीकार करते हुए अल्पांत सहज भाव से मध्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम का श्री विघ्रह भी ग्रहण किया और उसे अमेरिका ले गये। कालांतर मैं दैनिक स्वतंत्र चेतना फैजाबाद संस्करण के प्रभारी के रूप में जब मैंने अयोध्या-फैजाबाद में कार्यभार ग्रहण किया तो वहाँ भी अपने अति व्यस्त कार्यक्रम के बावजूद डा. साहब मुझ जैसे अति साधारण



प्राणी को दर्शन देने स्वतंत्र चेतना कार्यालय पहुँचे। यहां पर भी डॉ. साहब ने अपने स्वजनों के साथ न मिके मुझे दर्शन देकर धन्य किया बल्कि मेरे आतिथ्य को भी अत्यंत सहज भाव से स्वीकार किया।

इसी कड़ी में २४ नवम्बर २०११ के प्रसंग का भी उल्लेख करना आवश्यक है। २४ नवम्बर २०११ को डॉ. साहब ने अपने जन्म स्थान ग्राम हनुमतपुरम्, पिपरी साईनाथपुर-सुलतानपुर (उ.प्र.) में निरांत भक्ति एवं आध्यात्मिक कार्यक्रमों के अतिरिक्त विशाल संत सम्मेलन का आयोजन किया। ग्राम पिपरी साईनाथपुर के लिए विशाल संत सम्मेलन जैसा कार्यक्रम क्षेत्र वासियों के लिए किसी आश्चर्य से कम नहीं था। संत महात्माओं के दर्शन के लिए बड़ी संख्या में क्षेत्रवासी उपस्थित थे। मैं भी इस अविस्मरणीय घटना का साक्षी बनने एवं संतों के श्री चरणों में शीश नवाने के लिए इस विशिष्ट कार्यक्रम में उपस्थित था। इसी विशाल संत सम्मेलन में विश्व प्रसिद्ध भक्ति साहित्य साधिका एवं प्रथम राष्ट्रीय महिला छन्दकार सम्मान से सम्मानित आचार्या लीला यादव (राजाजीपुरम्, लखनऊ) द्वारा रचित भक्तिरस से सरांबोर तीन काव्य कृतियों, 'ब्रजरसः', 'ब्रजसुधा' एवं 'ब्रज माधुरी' के सृजन के लिए गंचर्य संत महात्माओं ने उनकी एक स्वर से सराहना करते हुए, न सिर्फ उन्हें आशीर्वाद, साक्षुदाद दिया, बल्कि श्रीमती लीला यादव द्वारा रचित भक्ति रस के छंदों को मंच से पढ़ने के लिए मुझ अकिञ्चन को भी संत महात्माओं ने आंग वस्त्र आदि भेंट कर सम्मानित किया। यह सब कुछ संत सदृश परम श्रद्धेय डॉ. रमाशंकर द्विवेदी जी की परम अनुकम्मा से ही सम्भव हुआ। मैंने पूर्व में ही कहा है कि डॉ. साहब जैसे हिमालयी व्यक्तित्व पर कुछ लिखना मेरे जैसे अति



दयाराम अठल

साधारण मन-भास्तुष्क वालों के लिए कदाचित् सम्भव नहीं है, लेकिन पिछले एक दशक से डॉ. साहब जिस प्रकार मुझ पर अनवरत अपने स्नेह आशीष की वृहि कर रहे हैं उसके लिए मैं जीवन पर्वत उनका आभारी रहूँगा।

डॉ. साहब के संबंध में चरि मुझसे एक वाक्य में लिखने को कहा जात तो मैं यही कहूँगा कि डॉ. साहब वास्तव में उस संत के समान हैं जो अहनिश-आदेयान लोक कल्याण की साधना में रत हैं। डॉ. साहब की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे सात समादर पार जाने के बाद भी जन्म भूमि की पावन माटी का लगाव विस्मृत नहीं कर सके। इतनी लम्बी अवधि बीत जाने के बाद भी माटी से लगाव हो डॉ. साहब की विशेषता प्रदान करता है।

वास्तव में देखा जाव तो डॉ. साहब प्रवासी भारतीयों के लिए प्रेरणास्रोत हैं। वे उस निझीर झरने के समान हैं जो हर जिजासु की पिपासा शान्त करता है। यह डॉ. साहब के हृदय को विशालता ही है कि

उसमें मेरे जैसा अति साधारण व्यक्ति भी आश्रय पाने में सफल रहा। मैं जब भी विकट परिस्थितियों के दौर से गुजरा डॉ. साहब देवदूत की भाँति प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष उपस्थित हुए और मुझे अपने स्नेह का सम्बल देकर निश्चिन्त किया। डॉ. साहब के बारे में मैं सिर्फ इतना ही कहूँगा कि यदि उनका व्यक्तित्व हिमालय से कंचा है तो उनके अंतःकरण में सिंधु की गंभीरता भी है। वे सहजता सरलता की प्रतिमूर्ति हैं। अपनी विद्रोह पाण्डित्य के बारे चर्चा करना तो दूर रहा उन्होंने मेरे जैसे अति साधारण व्यक्ति को भी अपने विराट व्यक्तित्व का अनुभव नहीं होने दिया। यही है डॉ. साहब के हृदय की विशालता, उनके व्यक्ति की महानता। जो उनसे जुड़ा वह सदैव सदैव के लिए उनका हो गया। परमात्मा उन्हें सर्वोत्तम स्वास्थ्य एवं दोषाश्रु प्रदान करें। वे सदैव स्वस्थ रहें, प्रसन्न रहें ताकि वे हमारे जैसे लघुतर श्रेणी के लोगों का सदैव मार्ग दर्शन करते रहें।

देखूँ अच्छा, बोलूँ अच्छा, मानूँ मैं अच्छा होगा।

सोचूँ अच्छा, करता अच्छा, जानूँ मैं अच्छा होगा ॥

मुझपे भरोसा करने वालों, तुम निश्चिन्त रहो मुझसे ।

फिरता नहीं हूँ बात से अपनी, बस मैं यही कहूँ तुझसे ।

हुआ जो अब तक अच्छा ही था, आगे भी अच्छा होगा ॥

इन्हों गंगल कामनाओं के साथ आदरणीय परम श्रद्धेय डॉ. रमाशंकर द्विवेदी जी को पुनः सादर प्रणाम करते हुए उनके प्रति कोटिः आभार ।



हनुमान जी के नाम से विघ्न कट जाते हैं : डॉ. पीके सेठ



भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह से प्रतिष्ठित डॉ. पीमी राध मेमोरिटल अवार्ड ग्रहण करते डॉ. पीके सेठ। डॉ. सेठ को यह पुरस्कार विश्वायापटनम में हुई इंडिहन माइंस कांग्रेस के दीर्घन प्रदान किया गया था

बरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. पीके सेठ की अंजनिपुत्र में अदृढ़ आस्था है। वे भारत सरकार के लखनऊ स्थित संस्थान वायोटेक पार्क के मंडिओ हैं। वे मानते हैं कि विज्ञान और धर्म में काफी समानताएँ हैं। वे बिना किसी लाग लपेट के कहते हैं कि ईश्वर के प्रति आस्थावान व्यक्ति और भी अच्छा वैज्ञानिक हो सकता है। उत्तर प्रदेश के लखनऊपुर खीरी बिले के मूल निवासी डॉ. सेठ को व्यवसन से ही हनुमानजी से खास लगाव था। उनके परिवार द्वारा गमलीला आवोजित की जाती थी। उसमें वे देखते थे कि हनुमान जी तो बहुत ही शक्तिशाली हैं। वे समृद्ध लोब जाते थे, परंतु उन्होंने लक्ष्मण जी को गुनजीवन भी उन्होंने ही दिया था। इन सब बातों का डॉ. सेठ के बाल मन पर गहरा प्रभाव पहा और वे ज्ञानपुत्र के प्रति आस्थावान होते चले गये। हनुमानजी के परम्पराल और सिद्ध पुराण बाबा नीम करोते जी से मिल कर उनकी आस्था और गहरी हो गयी। एक बट्टा का जिक्र करते हुए वे बताते हैं, 'एक बाबा बाबा नीम करोते जी लखनऊ में आए थे, कुछ बरिष्ठ अधिकारियों के बाहं उनसे निलगे का कार्यक्रम था। मेरे पिता जी को निमंत्रण था। पिता जी व्यस्त थे और उन्होंने कह दिया कि जब बाबा जो से मिलना होगा तो मुलाकात हो ही जाएगा।'

इस प्रकार वे वहां नहीं जा सके लेकिन बाबा जी से मैं मिलने चला। गदा सभी का परिचय हुआ। मेरा धी बाबा जी

से परिचय कराया गया तो बाबा जी आले कि इसके पिता जी तो बहुत व्यस्त हैं और उन्होंने वही शब्द आले जो मेरे पिता जी ने कहे थे। मैं आश्चर्यचकित रह गया कि बाबा जी यह सब कैसे जान गये जो मेरे पिता जी ने कहा था। इसके बाद बाबा जी से कई बार मुलाकात हुई। वे मेरे घर भी आए।' डॉ. सेठ बताते हैं कि उनका हर कार्य हनुमानजी की कृपा से पूरा होता रहा है। ज्ञानपुत्र के नाम से हर विज्ञ कट जाता है।

डॉ. पीके सेठ जो डॉ. रमाशंकर द्विवेदी से मुलाकात आईटीआरपी में हुई। वे बताते हैं, 'डॉ. द्विवेदी शुरू से ही औरौं से अलग थे। अपने काम को पूरी लगान, निषा और ईमानदारी से पूरा करते थे। यही गुण उनको अमेरिका तक ले गए। जहां वे विज्ञान और अध्यात्मा दोनों क्षेत्रों में

समान रूप से सफल हैं। एक बार मेरा अमेरिका जाना हुआ। व्यस्तता के कारण मैं उनसे नहीं मिल सका। जाते समय मैंने उन्हें फोन किया कि मैं शिकाये एयरपोर्ट से दिल्ली को फ्लाइट पकड़ कर जाऊंगा। इसके बाद डॉ. द्विवेदी अगले घर से खाना बनवा कर मेरे लिए लाए। उनको रेसो आत्मीयता देख मैं अभिभूत हो गया। मैं डॉ. द्विवेदी के पूरे परिवार से मिला हूं। वे अद्वितीय प्रतिभा के धनी हैं। एक बार उनके लखनऊ आने पर हम लोगों ने उन्हें वहां वायोटेक पार्क में छात्रों को संबोधन के लिए आवंत्रित किया था। उन्होंने छात्रों को बहुत ही सरल शब्दों में बताया कि हर काम में लगान और ईमानदारी रखो। परिणाम को धिता धर्मान्वय पर ढोड़ दो। जीवन में ऊपर नीये तो होता ही रहता है।'





हनुमान जी बहुत ही शक्तिशाली देवता हैं : डॉ. एन श्रीवास्तव

किंग जार्ज मेडिकल विश्वविद्यालय में पैथालोजी विभाग के वरिष्ठ प्रोफेसर रहे डॉ. एन श्रीवास्तव का डॉ. रमाशंकर द्विवेदी से परिचारिक रिपोर्ट है। यहाँ तक कि डॉ. द्विवेदी के दृश्यनीय पिता जी जब भी बीमार होते तो उनका इलाज डॉ. एन श्रीवास्तव ही करते थे। हनुमान जी के प्रति आस्था के संग्राहक उनको विश्वास में मिले हैं। डॉ. श्रीवास्तव के पिताजी श्री कल्याण लाल श्रीवास्तव हनुमान जी के परम भक्त हैं। युग सुंदरकाण्ड उन्हे कंठस्थ था जिसका वे नियमित याठ करते थे। इतना ही नहीं उन्हें पूरी गीता भी कंठस्थ थी। अपने परिवार के साथ वे नियमित नैनीताल स्थित हनुमान गढ़ी जाते रहे हैं। अपने जोवन की एक अहम घटना का उल्लेख करते हुए डॉ. श्रीवास्तव बताते हैं,



विश्वविद्यालय में रीडर पद पर नियुक्त हुआ। उसी शाम मैं अपने दोनों बच्चों सहित और श्रुति को लेकर शाम को निकला था। उसी समय

धर्मेन्द्र आधी-तुफान आवा और तेज बरसात होने लगी। मैं निशातर्गंज चौराहे पर दोनों बच्चों सहित चिर गया। पानी चारोंओर भरने लगा और बरसात रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी। सन्ध्या में नहीं आ रहा था कि क्या किया जाए। थोड़ी ही दूर पर हनुमान जी का मंदिर था। मैंने अपने दोनों बच्चों से कहा कि पवनगुड़ से प्रार्थना करो कि बरसात रुक जाए और हर लोगों को निकलने का रास्ता मिल जाए। इसके थोड़ी ही दूर बाद चमत्कार हुआ। बच्चों रुक गयी और निकलने का रास्ता भी मिल गया। तब से लेकर आज तक परिवार में जब भी कोई महत्वपूर्ण डफलाव्य होती है तो निशातर्गंज के हनुमान मंदिर जहर जाते हैं। ऐसी ही अपने पिता जी से जुड़ी १९६१ दर की एक घटना का उल्लेख करते हुए डॉ. श्रीवास्तव बताते हैं कि लखनऊ के एक अहुत प्रांतिष्ठित डॉक्टर का पुत्र अमेरिका में गंधीर रूप से दुर्घटनाग्रस्त हो गया था। वहाँ के डॉक्टरों ने उसके ठीक होने की बहुत कम संभावना बतायी। ऐसे में उन डॉक्टर ने मेरे पिता जी से इस बारे में बताया तो उन्होंने आश्वासन दे दिया कि आपका पुत्र ठीक हो जाएगा। पिताजी चांकि हनुमानजी के पास भक्त थे। अतः उन्होंने यवनसुत से उस लड़के के लिए विशेष प्रार्थना की। आखिरकार ३६ घंटे बाद चमत्कार हुआ और अमेरिका से सूनना आई कि वह लड़का खतरे से बाहर निकल आया है। बाद में वह पूरी तरह ठीक हो गया। हाँ, श्रीवास्तव का मानना है कि भगवान को चाने के लिए श्रद्धा, आस्था और विश्वास का होना बहुत जरूरी है। मेडिकल कॉलेज के प्रोफेसर के रूप में वे बताते हैं कि नवीं योगी में भी ईश्वर के प्रति आस्था कम नहीं है। खास तौर पर हनुमान जी के बारे में उनका कहना है कि अंजनिगुड़ बहुत ही शक्तिशाली देवता है। वहि सच्चे गण से उनसे प्रार्थना को जाए तो मनोकामना अवश्य पूर्ण होती है।





डॉ. एससी राय

हनुमान जी की मेरे ऊपर असीम अनुकरण : डॉ. एससी राय

१ दिसंबर १९८५ से २३ फरवरी २००२ तक लखनऊ के मेयर रहे पदमश्री डॉ. एससी राय ख्याति प्राप्त सर्वन होने के अलावा हनुमान जी के प्रस भक्त हैं। जब उन्हें डॉ. उगाशंकर श्रीवास्तव के मध्यम से पता चला कि सुलतानपुर के हनुमतपुरम में जवनमृत के एक नये मंदिर का निर्माण हुआ है तो वे उसके उद्घाटन समारोह में पहुंचे थे। उनके जीवन में ऐसो कई घटनाएँ घटीं जिनसे हनुमान जी के प्रति उनके मन में आस्था और गहरी होती गयी। वे बताते हैं कि १९८९ में उनकी माँ के कूलहे को हड्डी टूट गयी थी और वे आस्था रहने लगीं। उन समय उनका इलाज तो चल ही रहा था, पूरा परिवार भगवान गे प्रार्थना कर रहा था कि वे जल्द ठीक हो जाएं। माँ के जल्द स्वस्थ होने की कामना लिए डॉ. राय अलोगर्ज के हनुमान मंदिर गये। सुबह का समय था और बेहद ठंड थी। उन्हें अहसास हुआ कि यदि वर से इस्ताने लाए होते तो हाथों को ठंड कम लगती। तभी ऐसा चमत्कार हुआ कि जिसे वे आज तक नहीं भूले। डॉ. राय के कोट की जेब में दो गेरुआ रंग के दस्ताने न जाने कहां से आ गये। यह दस्ताने आज भी उनके पास

सुरक्षित हैं। इस वे हनुमान जी की कृपा ही मानते हैं। ऐसी एक और घटना का जिक्र करते हुए डॉकर राय बताते हैं कि लखनऊ के मेयर पद पर रहते हुए २००६ में वे ऑल इंडिया कार्डिसिल ऑफ मेयर के अध्यक्ष थे। लखनऊ में तमाम मेयर जुटे थे। बरंती के तत्कालीन मेयर सुधार पटेल और भोपाल के तत्कालीन मेयर उगाशंकर गुप्ता ने अयोध्या घूमने की इच्छा अक्त की। तीनों लोग एक ही गढ़ी से गये और हनुमान गढ़ी, श्रीराम जन्मभूमि आदि तीथ स्थलों के दर्शन किए। लौटे समय लखनऊ पहुंचने से जुर्व चिनहट में उनकी गढ़ी सामने से आ रहे ट्रक के ग्रीक सामने आ गयी। सिर्फ इक इच की दूरी से तीन पेंगरों को जिंदगी बच गयी। डॉ. राय यह सब हनुमान जी कृपा ही मानते हैं। एक और घटना का उल्लेख करते हुए डॉ. राय बताते हैं कि करीब ४० साल महले उपर सरकार में तत्कालीन मंत्री कृष्णबिहारी मिश्र को देखने वे उनके घर बहराड़य गये थे। लौटे समय तेज पानी बरस रहा था। उसी दौरान कार १५ फुट नीचे खड़ी में गिर गयी। लेकिन सभी लोग हनुमत कृपा से सकुशल बच गये। डॉ. राय की गणवान के प्रति अदृष्ट अस्था हैं। एक सर्वं

होने के नाते उनका साफ कहना है कि धर्म से बांद पांखंह को हटा दिया जाए तो विज्ञान और धर्म दोनों एक दूसरे के पूरब बन सकते हैं। स्वामी विवेकानन्द ने इस बारे में गहन विवेचन किया है। डॉ. एससी राय गनकृष्ण मिशन प्रबन्धन समिति के पिछले १० साल से अध्यक्ष हैं। अपने जीवन से जुड़ी एक और चमत्कारिक घटना के बारे में वे बताते हैं कि उन्होंने आचार्य श्रीराम शर्मा से दीक्षा ली थी और उन्हें अपना गुरु मानते थे। एक बार उन्हें फैक्टरी में फोड़ा हो गया और गुर्दे के आसपास गांठे हो गये। गंधीर रूप से बीमार होने पर उन्होंने आचार्य जी की धर्मपत्नी (माँ गायत्री देवी) को तबियत खराब होने का पत्र लिखा। माता जी ने उस पत्र के जवाब में भभूत दो एक पुड़िया भेजीं और उसे खा लेने को कहा। शाम को जांच होनी थी, सुबह उन्होंने पुड़िया खाई तो तत्काल बतागम आदि निकल गया। जब जांच हुई तो उपर्युक्त बीमारियों के कोई लक्षण नजर नहीं आए। तब से उन्हें नैसा कोई रोग नहीं है। दो बार हृदयाचात होने और लंबे समय से मधुमेह होने के बावजूद लगभग ८५ वर्ष की आयु में भी वे अग्ने को स्वस्थ गहमूस करते हैं।



बात १९८० के दशक के शुश्रावी वर्षों की है। हॉ. रमाशंकर द्विवेदी के पिताजी के जीएमसी के सर्जिकल बाड़ नम्बर-१ में भर्ती थे। उसी दौरान डॉ. हिंदेंदी से मरा परिवर्त दूआ। उसके बाद मिलना जूलना शुरू हुआ। १९८६ में मेरा आईटीआरसी में एक काम पड़ा जो नहीं हो पा रहा था। मैंने नब डॉक्टर साहब से संपर्क किया और उन्होंने शोश्र हो मेरा कार्य करवा दिया। उसके बाद मेरा उनके प्रति विश्वास बढ़ा। कुछ समय के बाद डॉक्टर साहब के नानाजी के पैर में गैंगरिन हो गयी और चिकित्सकों ने कह दिया कि उनका पैर काटना पड़ेगा तब डॉक्टर हिंदेंदी ने मुझे इस बारे में बताया। मैंने कहा कि कोशिश करता हूं कि ऐसा न करना पड़े। उसी दौरान के जीएमसी में रेजिस्टर डॉक्टरों की हड्डताल हो गयी। फलस्वरूप उनके चाचा जी को घर ले जाना पड़ा। मैंने उनके घर पर ही इलाज किया और भगवान को कृपा से उनका पैर बच गया। इसके बाद हम लोगों में आपसी विश्वास और गहरा हो गया।

तब तक मैं डॉक्टर द्विवेदी के बारे में जान चुका था कि एक वैज्ञानिक होने के साथ अध्यात्म के प्रति भी उनका गहरा झुकाव है। मेरों भी कुछ ऐसी ही प्रवृत्ति थी। इसी सिलसिले में मैं, डॉ. हिंदेंदी और डॉ. एससी गाय सपरिवार वित्रकूट घमने गए। वहाँ नीका विहार करते समय हर कोई कुछ न कुछ सुना रहा था। जब मेरी लालों आवी तो मैंने समुद्र मंथन का प्रसंग सुनाया.....एक बार अमृत को ग्राहि के लिए देवता और राक्षस समुद्र मंथन में जुटे। जब अमृत से पहले विष निकला तो समया आई कि इसका यान कौन करे? दोनों पक्षों को ओर से विष पान को कोई तैयार नहीं हुआ। देवतागण समस्या लेकर इन्द्र के पास गए। इन्द्र ने देवताओं को बताया कि हिमालय पर बाबा भोलेनाथ निवास करते हैं। तुम लोग जाकर उन्हें यह विष पिला आओ। देवता विष का बड़ा लेकर शिव भगवान के पास पहुंचे तो उन्होंने कहा कि मैं इसे पी लूंगा, तुम लोग जाओ। लोकिन देवतागण अपने सामने ही उन्हें विष पान कराना चाहते थे। अतः उनके बहुत अनुरोध पर भोले आबा ने विष पी लिया और देवता इन्द्र के पास लौट गए। इन्द्र ने पूछा कि तुम लोग इतनी जल्दी क्यों लौट आए? देखना चाहिए कि विष पान के बाद भोले आबा का क्या हाल हुआ? देवता तो डर गए थे। बोले, हाल तो पता ही है, विष पोने के बाद जो होता है, वही हुआ होगा। इन्द्र ने देवताओं से कहा कि आओ और भोले आबा का हाल देखकर आओ। देवता किन हिमालय पर पहुंचे तो देखा कि भोले आबा एकदम रुक्ष हैं। फलते-हारते उन्होंने पूछा कि आप विष पान के बाद भी एकदम रुक्ष हैं? भोले आबा ने उत्तर दिया कि मैं राम का नाम लेता रहता हूं। राम का नाम कठ से निकलता है। इसलिए विष पिया तो कठ के नेचे नहीं उतरा और विष-राम ही गया और अब मैं यहाँ हिमालय पर विश्राम कर रहा हूं। देवताओं को उनके प्रश्न का उत्तर मिल चुका था और वे संतुष्ट हो कर चले गये। कहने का अर्थ यह कि इसी प्रकार हम लोग अपने दैनिक जीवन में



अपने परिवार के साथ डॉ. विलोद जैन

शक्तिपुंज हैं डॉ. रमाशंकर द्विवेदी : डॉ. विनोद जैन

तरह तरह के विष पान करते हैं चाहे वे समस्याएं हों, कुमांगति हो या कोई और प्रकार का विष। ऐसे में यदि राम का मत्संग थोड़ी देर किया जाए तो वे विष हमारे जल असर नहीं करेंगे। डॉक्टर द्विवेदी सहित सभी ने इस प्रयोग को अहृत साराहा।

मैं मानता हूं डॉ. रमाशंकर द्विवेदी शक्तिपुंज हैं, मंस्ता हैं। उनके जीवन से मैं बहुत ही अधिक प्रभावित हूं। एक बार की बात है। मुझे अमेरिका कॉलेज ऑफ सर्जन की फेलोशिप मिली थी और उसे लेने मुझे २०१२ में शिकाया जाना था। साथ में डॉ. समीर मिश्रा को भी जाना था। उनका बीजा आ गया लेकिन मेरा बीजा नहीं आया। मैं बहुत परेशान था। अपेक्षित लोकिन पारंगाम नहीं निकला रहा था। तभी डॉक्टर द्विवेदी से अमेरिका बात करके मैंने उन्हें अपनी समस्या बतायी। उन्होंने बड़ा ही सरल सा उपाय बताते हुए कहा कि शनिवार को हनुमान संतु वाले मंदिर में जाकर प्रयाद चढ़ा देना, मंगल तक बीजा आ जाएगा। मैंने ऐसा ही किया और सोमवार को मेरे ई-मेल पर बीजा मिलने की सूचना आ गयी और मंगलवार को बीजा मिल गया। यह एक चमलकार जैसा ही था। आज हमारा पूरा परिवार हनुमान भजत है। मेरी पत्नी धर में होने वाले हर शुभ कार्य से पूर्ण सप्तरिवार हनुमान मंदिर जाना नहीं भूलती हैं। मैं ऐसा मानता हूं कि हमारे परिवार के ऊपर भी बरंगचली की असीम कुप है।

(डॉ. विनोद जैन किंग जार्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी, लखनऊ में सर्जरी विभाग के प्रोफेसर हैं)

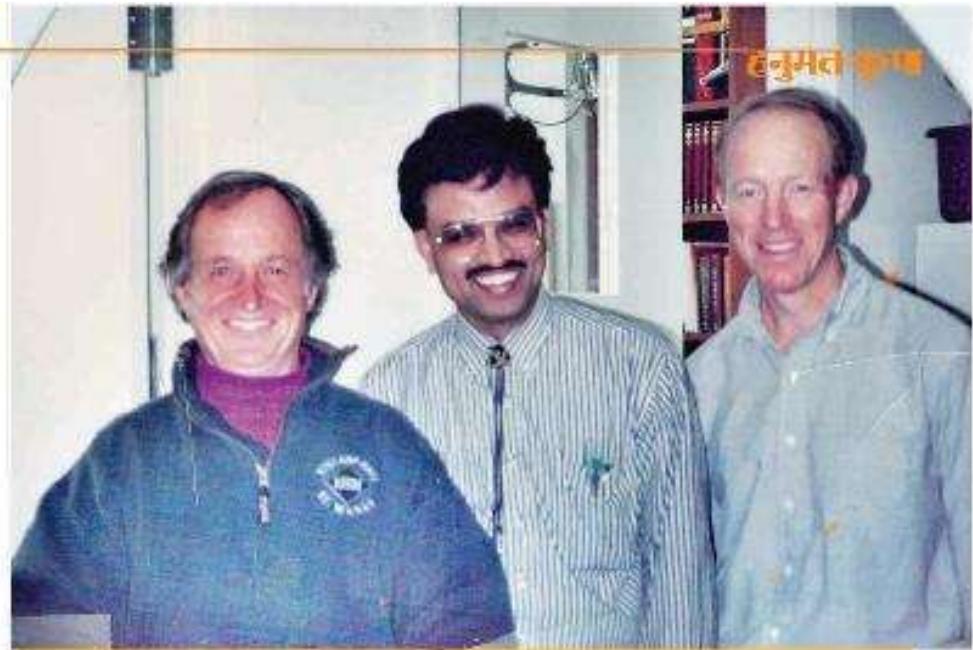


किंग जार्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी के नेत्र विभाग में प्रोफेसर रहे डॉ. वीबी प्रताप कई दशकों से डॉ. रमाशंकर द्विवेदी से जुड़े हैं। १९७६ में हूई मूलाकात निरंतर प्रगाढ़ होती गयी। आज दोनों के रिश्ते एक परिवार जैसे हैं। हनुमतपुरम में जब मंदिर का प्राण प्रतिष्ठा ममारोह हुआ तो उसमें डॉ. वीबी प्रताप भी गये थे और वहाँ निशुल्क नेत्र शिविर का आयोजन किया था। डॉ. प्रताप का कहना है, 'डॉ. द्विवेदी धर्म और विज्ञान का अद्भुत संगम हैं। अमेरिका में जो के काम कर रहे हैं, वह अभूतपूर्व है। वहाँ एक वैज्ञानिक के साथ-साथ धर्म का इतने लड़ स्तर पर काम करना मामूली बात नहीं है। ऐसे बहुत से वैज्ञानिकों को मैं जानता हूं जो बाद में संत बन गये लेकिन ऐसे लोग खोजना बहुत मुश्किल है जो वैज्ञानिक भी हैं और संत भी। द्विवेदी जो यह कर पा रहे हैं वो इसके पीछे हनुमान जी की ही कृपा है। मुझे द्विवेदी जी ने कई बार अमेरिका बुलाया लेकिन संयोग से अभी तक वहाँ जाना नहीं हो पाया। भौचता हूं कि जब भगवान को इच्छा होगी तो दुनिया के अन्य देशों की तरह वहाँ भी जाना हो जाएगा।'

डॉ. वीबी प्रताप अपने को पूरी तरह से समाज के प्रति समर्पित किए हुए हैं। वे लग्ननक की कल्याण करोति संस्था के अध्यक्ष हैं जो जनहित के तमाम कार्यों में संलग्न है। ग्राम तौर पर अंधता निवारण के क्षेत्र में उनकी संस्था का काम अभूतपूर्व है।

श्रीराम जन्मभूमि न्यास के अध्यक्ष महंत नृत्यगोपाल दास की सद्प्रेरणा एवं श्री मणिरामदास जी की लावनी सेवा ट्रस्ट के बहुमूल्य व्योगदान से कल्याण करोति द्वारा अनोद्योग में संस्थापित श्री दीनबंधु नेत्र चिकित्सालय हजारों लोगों के नेत्र विकार दूर करने में लगा हुआ है। अहुत ही नाम

मात्र के शुल्क पर डस्ट्रिक्ट सालालय में नेत्र रोगियों का इलाज



जोबेल लॉरिअट मारिओ कापेकी (बाएं) और कक्ष धमस (दाएं) के साथ डॉ. रमाशंकर द्विवेदी (साल्ट लेक सिटी ऊटा, अमेरिका, 1996)

धर्म-विज्ञान का अद्भुत संगम हैं डॉ. रमाशंकर द्विवेदी : डॉ. वीबी प्रताप

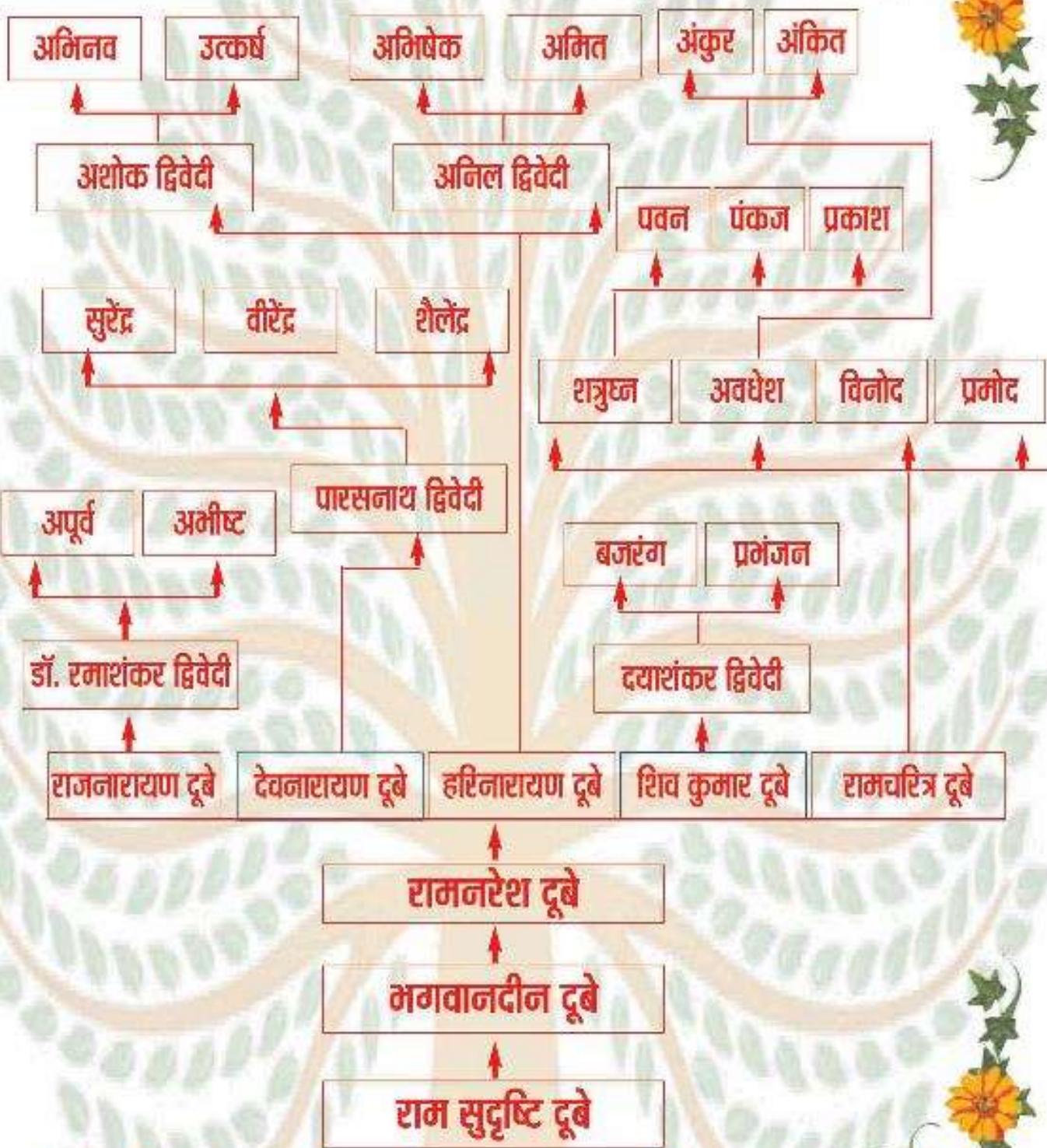


प्रमंजनी आजाद प्रताप के साथ डॉ. वीबी प्रताप

किया जाता है। वहाँ नेत्र चिकित्सकों की कुशल टीम है जो रोगियों की हर प्रकार से देखभाल करती है। बहुत दूर दूर से मरीज यहाँ इलाज कराने आते हैं। डॉ. प्रताप कहते हैं कि मैं धार्मिक हूं, धर्मी नहीं। मंदिर जाने से मन-मस्तिष्क में बदलाव आता है। हनुमान का गीर्ह अनुकूल है। इसमें पानी का खान बहुत ही कम है और यह पर्यावरण के पूरी तरह अनुकूल है। इसमें पानी का खान बहुत ही कम होता है। यह न सिर्फ वर्षों के लिए बैलिक जी के बारे में वे कहते हैं कि पवनसुत के बारे में व्याकृति भी बहुत उपयोगी है।



दूबे परिवार का वंशावृक्ष



परहित सरिस धरम नहि भाई : रमेश चंद्र यादव

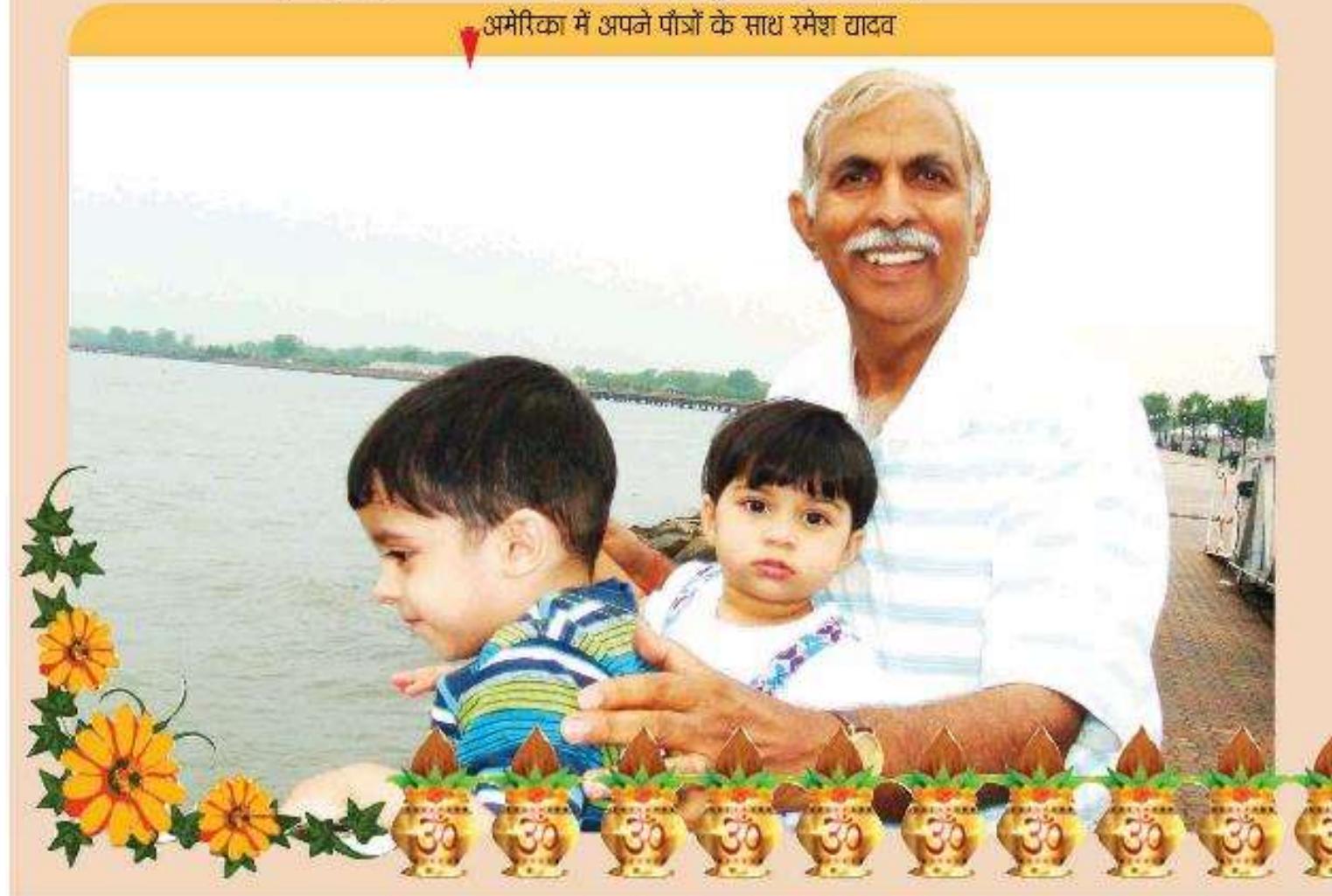
हनुमान जी के पाम भक्त हैं अमेरिकावासी रमेश चंद्र यादव। वैसे तो भारिंग संस्कार उन्हें विरसत में पिले लैंबिन स्वामी रामानंद जी यानी डॉ. रमाशंकर द्विवेदी के संपर्क में आने के बाद उन्होंने पूरा जीवन नर नरायण की सेवा में लगा दिया है। हनुमतापुरम के मंदिर में वे कई बार दर्शनार्थ गए हैं। हनुगान जी के भक्ति पार्टी और सेवा धावना से प्रेरणा लेकर वे आगे बढ़ रहे हैं। उनका कहना है कि जनहिताय जितना मैं खुर्च करता हूँ उसका १० गुना भुजे भगवान दे देते हैं और १००० गुना खुशी मिलती है। खुशी के लिए कोई भी कीमत दी जाए, वह सस्ती ही होगी।

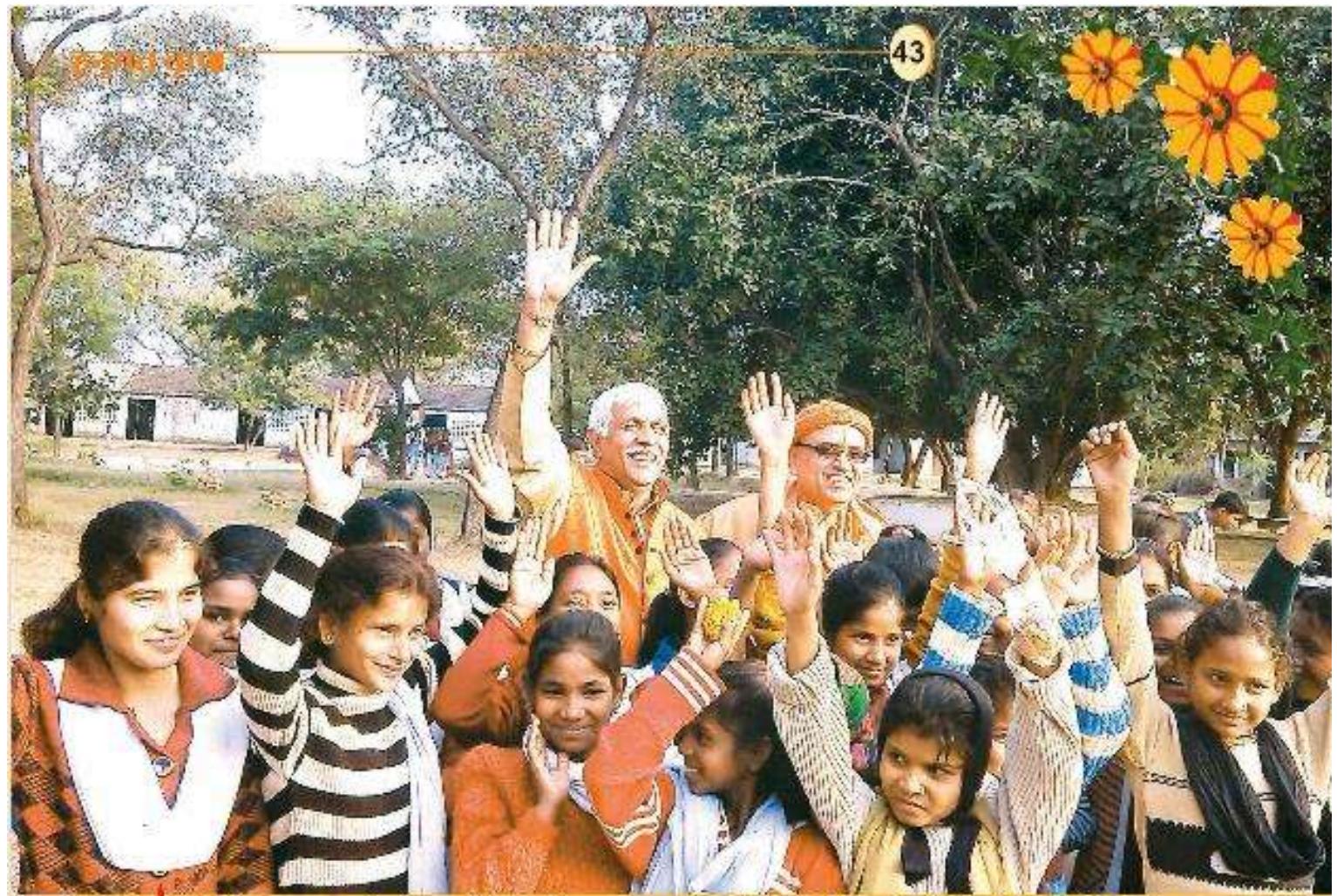
कूं तो अपने ही लिए परती है सारी
दुनिया, जो किसी और की खातिर
जिये इनसां है बही।

अपने पिता हिंदी माहित्य गत गम सुंदर बादव 'गम' की इन्हीं पक्षियों को अपने जीवन का मूल मंत्र बना लिया है रमेश जी ने। आपका जन्म ३ अगस्त १९५० को उत्तर प्रदेश के ब्रालिया जिले में उनकी ननिहाल में हुआ। इनका गैरुक गांव देवरिया जिले का कुशहां है जहाँ की गिरदी से उन्हें इतना लगाव है कि अमेरिका से साल में दो बार वे जरूर यहाँ आते हैं। इतना ही नहीं यहाँ आकर वे जरूरतमंदों के लिए कुछ न कुछ करने का प्रथम भी करते हैं। वहाँ वे अचतक कई बार निशुल्क नेत्र चिकित्सा शिवर आयोजित कर चुके हैं, सामृहिक रूप से लोगों को कपड़े आदि जरूरी चीजें भी वितरित करते रहते हैं। वे कहते हैं कि उन्हें भरती का ऋण नुकाना है। इसलिए

अब उनकी योजना यहाँ विभिन्न प्रकार के एक हजार पौधे लगाने की है जो बड़े होकर वृक्ष बनकर लोगों के काम आएं। इनकी देखभाल का दायित्व वे स्थानों लोगों पर हो लोड़ना चाहते हैं। साथ ही गांव में वे एक सार्वजनिक शौचालय का भी निर्माण कराना चाहते हैं। रखाए रामानंद से प्रेरित होकर वे हर सप्ताह अमेरिका में जगह-जगह निशुल्क सुंदरकाण्ड का पाठ करते करते हैं। भगवान कृष्ण के ब्रति भी उनकी अदृष्ट आस्था है और जब भी अमेरिका से भारत आते हैं तो गश्ता-बुंदाबन में बांकेविहारी के दर्शन करने जरूर जाते हैं। वे कहते हैं कि मुझे जो भी मिला, वह सब ईश्वरीय अनुकम्भा से मिला। वे ईमानदारी और लगातार कहिन

अमेरिका में अपने पौत्रों के साथ रमेश यादव





श्री शोभाराम राजकीय इंटर कॉलेज चंदीपुर (सुलतानपुर) में विद्यार्थियों के बीच डॉ. रमाशंकर द्वियेदी व स्मेश यादव

परिश्रम को सफलता को दो चाबियों मानते हैं क्योंकि वही हमारे हाथ में है। फल देना तो ईश्वर के हाथ में है। वे कहते हैं कि हमें दूसरों को जानने से पहले अपने बो जानना चाहिए। इससे जीवन का रास्ता बहुत आसान हो जाएगा। लम्बनक के औद्योगिक विषय विज्ञान अनुसंधान केंद्र में नौकरी करने के बाद १९९६ में जब वे अमेरिका गए तो उन्हें कठिन मंथर्ष करना पड़ा लेकिन सच्चाइ और दैनन्दियों के रस्ते पर चलकर लगातार कठिन परिश्रम से सफल हुए। आज उनके तीनों पुत्र-अपित, आनंद और अजय यूस्सरे में ही सपरिवार रह रहे हैं।



अपने गांव में जरूरतमंद महिलाओं को साड़ियों का वितरण करते स्मेश यादव



मुझे ऐसा लगता है कि हनुमान जी ने अपनों भक्ति में कई जन्मों से लगा रखा है। हम लोग मूल रूप से इंद्रीर के रहने के बाले हैं। वहाँ के तराना गांव में जन्म हुआ। बनपन से ही गांव के मंदिरों में भजन, आरती, कोर्तन सुनने का सौंभाग्य मिलता रहा। आज लगता है कि यह बाल्यावस्था में मिले संस्कारों का ही परिणाम है जो जीवन पवन-पुत्र की आरथना में लगा है। पिता जो इंजीनियर थे और एक लम्बे समय तक उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर ज़िले के ओबरा में निवृत्त रहे। वहाँ से अवधी के प्रति लगाव शुरू हुआ जो बाद में रामचरित मानस और हनुमान चालीसा की ओर ले गया। शिशा पूरी करने के बाद वहाँ अमेरिका में आईंही क्षेत्र में आ गया तो जीवन की आपाधारी में आत दस साल तक भगवान को भूल ही गया। वहाँ शिकागो में हमारे एक मित्र जय प्रकाश जो हैं जो ललिता माता (दिव्यांशु भारत में पूजी जाने वाली देवी) के परमाभक्त हैं। वह हर शुक्रवार को अपने यहाँ देवी का पाठ करते हैं। एक बार उनके बहुत आग्रह पर मैं उस पाठ में शामिल होने चला गया। पहले दिन ही लगा कि मुझे तो यहाँ नियमित आना चाहिए। पिर सिलसिला चलने लगा। जयप्रकाश जी ने ही जनिवार को सुंदरकाण्ड का पाठ आयोजित करवाया। उसी कार्यक्रम में मेरी स्वामी रामानंद जी सरस्वती (डॉ. रमाशंकर हिंदेंदी) से मुलाकात हुई। उसके बाद हम लोग शर्मसार के सहयोगी हो गये। आज उन्होंने का प्रभाव है कि गहले मुझे हनुमान चालीसा की प्रथम पवित्र भी बाद नहीं थी लेकिन आज पूरा सुंदरकाण्ड तक कंठस्थ है।

मेरे जीवन में ऐसों कई घटनाएँ हुई हैं जिनसे हनुमान जी के प्रति आस्था और गहरी होती गयी। एक बार की बात है, मैं शम को घर से कार्यालय निकला। मेरा कार्यालय डेटाइट शहर में है जो घर से करोब साढ़े चार घंटा

मौत के मुंह में जाने से बचाया हनुमान जी ने : इंद्रजीत सिंह



अपने बच्चों राजउंगढ़ सिंह और अरनीत कौर के साथ महिलाव में इब्रे इन्द्रजीत सिंह

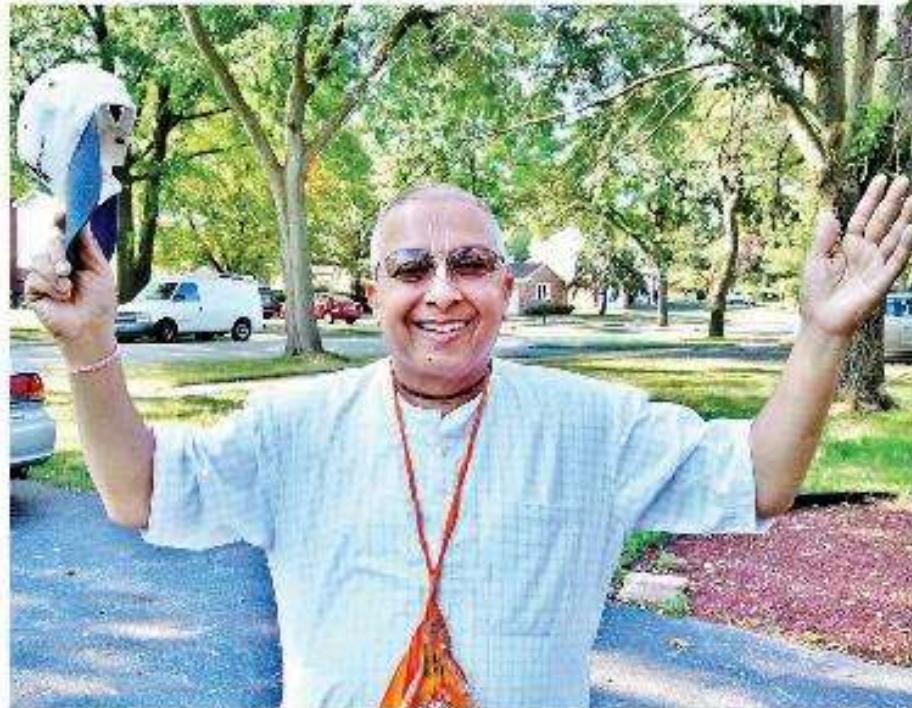
दूर है। वहाँ रात में ही काम होता है। उस दिन मैं गाड़ी को आराम से चला रहा था। गाड़ी में प्रतिदिन की तरह हनुमान चालीसा, सुंदरकाण्ड और महामृत्युजय के जाप का पाठ चल रहा था। उस दिन अच्छो खासी फंकेबारी हुई थी। कीरीब ११० किलोमीटर प्रतिघण्टा की गति से चलती हुई गाड़ी अचानक तेजी से फिसल कर ५० फुट नीचे स्लोब पर चली गयी और बाड़ में जाकर फंस गयी। मेरे तो कुछ समझ में ही नहीं आया कि यह हुआ क्या? संयोग से जहाँ मेरी गाड़ी फिसली उससे कीरीब १०० मीटर पहले बगल में पहाड़ी थी और १०० मीटर बाद पानी की खाई थी। ऐसी घटनाओं में जहाँ जीवन नहीं बचता, मुझे या मेरी गाड़ी को एक खरोंच तक नहीं आई। मुझे ऐसा लगा कि साथात हनुमान जी ने सामने आकर मुझे बचा लिया। अब मैं और मेरा पूरा परिवार बवरंगबली को आरथना में समर्पित है। मैं इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर स्प्रिंग्स अल

एडवांसपेंट (आईएसएसए) का चीफ को आडिनेट हूँ। हमलोग हर शनिवार कहाँ न कहाँ निशुल्क सुंदरकाण्ड का पाठ करने अवश्य जाते हैं। वैसे घर पर तो रोज ही पाठ करते हैं। मेरी बेटों को भी सुंदरकाण्ड पूरा बाद है। बेटा भी धार्मिक गतिविधियों में बढ़चढ़ कर भाग लेता है। मेरी पत्नी इन कार्यों में पूरा सहयोग करती है। डॉ. रमाशंकर हिंदेंदी से पिलने के बाद मेरे जीवन में बहुत बदलाव आया है। उनके दोनों पुत्र अपूर्व और अशोक बहुत ही संस्कारवान हैं। अमेरिका में इन्हें दिनों से गहरे हुए भी वे मूरी तरह से अपनी संस्कृति में रचे-बसे हैं। तमाम असलताओं के बीच जब भी मौका पिलता है, दोनों धार्मिक कार्यक्रमों में भाग लेते रहते हैं। दोनों रामचरित मानस का बहुत अच्छा पाठ करते हैं। मेरा तो मध्ये से यही निवेदन है कि हमें भगवान से सम्पर्क बनाए, रखना चाहिए। यदि ईश्वर से नाता रहेगा तो हम भटक भी रहे होंगे तो वह हमें सही गति पर ला देगा।



हर संकट दूर करते हैं

हनुमान जी : मिथिलेश शर्मा



लगभग आठ नौ साल पहले की बात है कि प्रियांगों में भवानक तृफान आया। उसी रात मैं हाइवे पर रास्ते में फँस गया। अपने घर लौट रहा था। रात का करीब एक बजा था। वहां अमेरिका में ठंड बहुत पड़ती है। तापमान शून्य से लगभग २० से २२ डिग्री सेल्सियस नीचे था। मेरी गाड़ी खराब हो गयी। तेज हवाएं चल रही थीं। बाहर सुखक पर निकलने का मतलब मौत से सामना करना था। मैंने गाड़ी किनारे खड़ी की और एक सेवादाता एजेंसी को फोन लगाया कि मैं अमुक स्थान पर हूँ। मेरी गाड़ी खराब हो गयी है। उस एजेंसी को ओर से जबाब आया कि कप से कम चार रुपये पांच रुपये में वहां मैकेनिक महुंच सकेगा क्योंकि ऐसे मौसम में हमारे पास पहले से ही खराब गाड़ियों को ठीक करने के लिए बहुत ज्यादा काल आ चुकी हैं। मैं एकदम असहाय हो गया। ऐसे खतरनाक मौसम में कुछ कर भी नहीं सकता था। इतना लम्बा इंतजार नहीं किया जा सकता था क्योंकि यदि गाड़ी का छतोंआर बंद हो जाता तो उसी ठंड में मैं कहां जाता। मजबूरी में मैं खुद गाड़ी से उतर कर नट-बोल्ट खोलने लगा लेकिन सफल नहीं हो सका। उंगलियां कांप रही थीं और कान फ्रीज होने लगे थे। थक हार कर गैंग गाड़ी के अंदर आकर बैठ गया और हनुमान जी से प्रार्थना करने लगा कि किसी प्रकार इस संकट से मुक्ति दिलाएं। मेरे पास इसके सिवाय और कोई चारा भी नहीं था। थोड़ी ही देर में मेरे पीछे आकर एक गाड़ी रुकी। मैं डर गया कि वहां कोई लुटेरा न हो क्योंकि अक्सर ऐसे मौके का फायदा उठाने में अपराधी प्रकृति के लोग भी सक्रिय रहते हैं। उसमें से एक व्यक्ति नोचे उतरा और मेरे पास आकर पूछने लगा कि क्या गाड़ी खराब हो जाने की बजाह से यहां खड़े हो? तब तक मैं समझ गया था

कि यह कोई अपराधी नहीं है। मैं गाड़ी में नीचे उतरा और पूरी समस्या बतायी। उसने मुझसे कहा कि यिंता न कीजिए, मैं अभी आपको गाड़ी ठीक बर दे रहा हूँ। मैं भी उसकी मदद करने लगा तो उसने कहा कि आप गाड़ी के अंदर ही बैठिए। आप का काम हो जाएगा। उसने अपनी ही गाड़ी से औजार निकाल कर मेरी गाड़ी को थोड़ी देर में महीं कर दिया और मुझसे कहा कि अब आप जा सकते हैं। मुझे लगा कि यह कोई मैकेनिक होगा जो ऐसे मौसम में ग्राहकों की तलाश में निकला होगा। इसलिए, मैंने उसे उसका पारिश्रमिक देने को कोशिश की तो उसने साफ मना कर दिया। इसके बाद

वह चला गया। मुझे समझ में नहीं आया कि वह कौन व्यक्ति था जो मेरी परेशानी को चुटकियों में दूर करके बला गया। बाद में मेरी समझ में आया कि यह सब श्री हनुमान जी की कृपा से सम्भव हुआ। मैंने जब भी सच्चे मन से नहीं याद किया और उन्होंने मेरा संकट तत्काल दूर कर दिया। इस घटना के अलावा भी मेरे जीवन में ऐसे कई अवसर आए जब मैंने संकट में हनुमान जी को बाद किया और मेरा काम चल गया। मैं तो ऐसा मानता हूँ कि ऐसा कोई संकट नहीं हो सकता जिसको श्री हनुमान जी दूर न कर सकते हैं। हमें सिफ सच्चे मन से उन्हें याद करना चाहिए।



It was truly the blessing of Lord Hanuman Ji that I got a job opportunity in Lucknow at about the same time when Dr. Rama Shankar Dwivedi joined the same institution in the year 1984. My first interaction with Dr. Dwivedi was just like a 'Bharat Milaap' with two brothers with similar professional, social and spiritual resonating with each other. I found a spiritual guru to guide me to salvation for the rest of my life.

My journey afterwards with him was very pleasant. Our research interests were alike, our spiritual beliefs were alike and both of us had common friends like Dr. Uma Shankar Ji. Dr. Dwivedi closely is a true disciple of lord Hanuman Ji and as his ambassador he is spreading his message narrated in the holy book Ramayana not only at home, India but also all over the world. Dr. Dwivedi used his own resources to establish a Hanuman Mandir in his hometown and ensures its full maintenance. He moved to USA to spread Lord Hanuman Ji's philosophy to a society lost in a materialistic world and in dire need of directions to make

I do not leave home without a picture of Hanuman Ji

Dr. Prakash Chandra Joshi (USA)



from left Dr. Prakash Chandra Joshi, his wife Garima and Dr. Umashankar (right), his wife Nirmal

their life even more eventful life fully dedicated to Lord through the path of spirituality. Hanuman Ji. He gives me His 'International Society for Spiritual Advancement' is confidence whenever I needed. I do not leave home without a picture of Hanuman Ji in spreading Lord Hanuman Ji's message to those who needed it to focus their polarized life to enjoy a better future.

It is only due to Dr. Dwivedi's blessings that I and am enjoying a peaceful and contended



I am very proud to be a part of this noble team

Jayaprakash Balakrishnan (USA)



prayer. I remember visiting a huge Temple in Mysore a few years ago. After seeing almost all of it I suddenly realized that how come there is no statue Hanuman Ji in this Temple. The very next statue I saw was that of Hanuman Ji. Once I had to go to Agra for my Ph.D. viva voce examination in the month of June. I was very nervous and the heat as such was unbearable. While I was traveling in a rickshaw with my Ph.D. guide to the Registrar's office I passed through a Hanuman Mandir, I bowed down to the lord and he took care of rest. I always follow the message of Hanuman Chalisa 'Jo sat bar path kar koi, Chhutahi bandi maha sukh hoi'. If you pray with dedication, there is no need to go to a Doctor. I try my very best to chant 'Sundarkand' almost everyday. Inspired by Swami Dr. Dwivedi, we have started chanting Sundarkand Paath at the Hindu Temple of Capital District, Albany, NY every last Saturday of the month from 5-7 PM. I strongly urge devotees to find time to chant this chapter of sampoorn Ramayana and feel enlightened. Jai Hanuman.

Let me extend my sincere prayers to Lord Hanuman and Ram Parivar to continue to provide blessings at all levels to all of you. The work done by Dr. Rama and his team across the world is immense and immeasurable. I am very proud to be a part of this noble team.

About Guruji

Dr. Jayachandra Raj, respectfully called as Gurujji is an economist by profession, has five masters degree and a Ph.D in Economics.

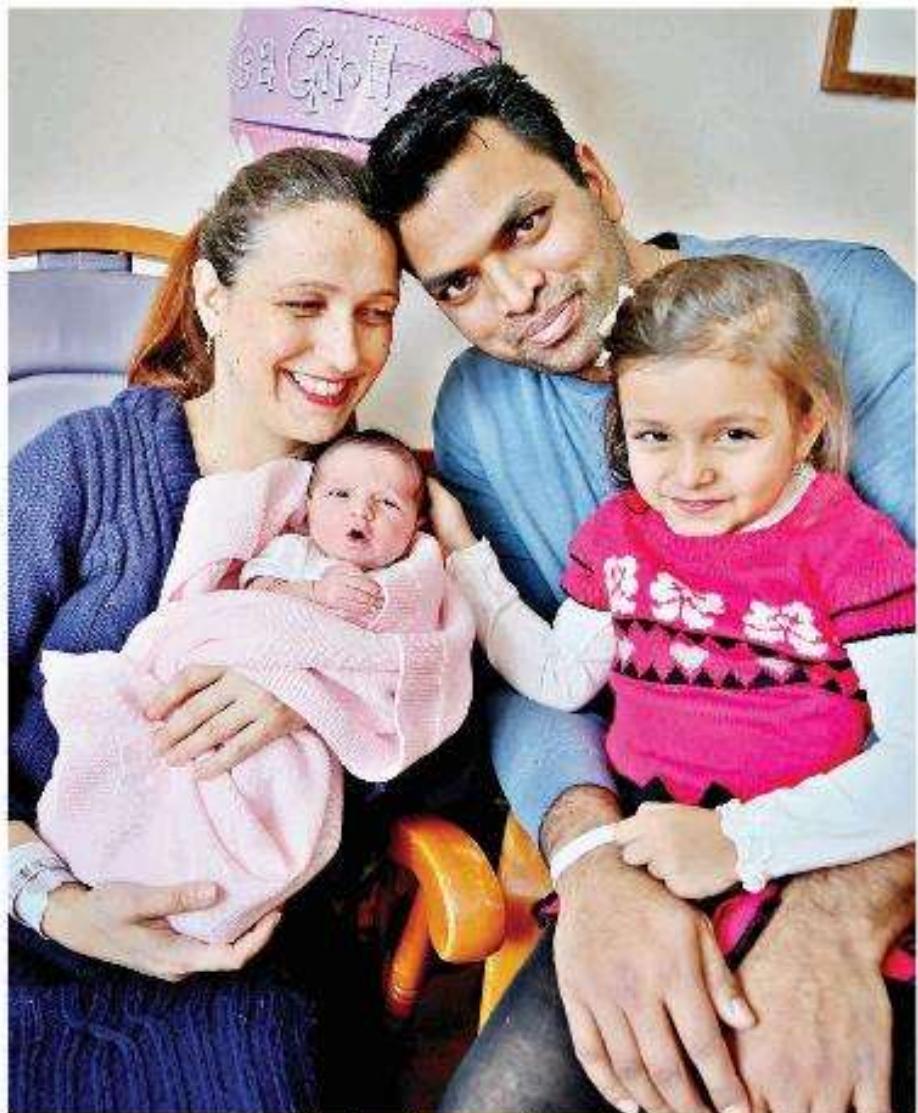
Dr. Jayachandra Raj
Through the blessings of his Guru he is applying the Vedic mathematical calculations with Mantra-sound energy to see the "Energy" status of an individual, family or a business firm and suggest remedial measures. He has established Panchatheertha temple in Kerala a decade ago (www.panchatheertha.org). He has done over 500,000 astrological readings as a public service and is known for his precise and accurate predictions.



डॉ. रमाशंकर द्विवेदी के दोनों पुत्र अपूर्व और अभीष्ठ अपने पिता की तरह हनुमान भक्त हैं। अमेरिका में रहते हुए भी वे अपनी जड़ों को नहीं भूले हैं। अपूर्व का कहना है कि हनुमान जी की कृपा हमारे परिवार पर हमेशा से चली आ रही है। हम लोग सुलतानपुर के देवेपुर से अमेरिका हनुमानजी को कृजा से हो पहुंचे हैं। हमारी सफलता, हमारा सुखी परिवार, हमारा स्वास्थ्य और दोस्तों व गिरोदारों का ध्वार यह सब प्रभु हनुमान जी को कृपा से ही है।

हमारे पूर्वज चिरकाल से हनुमान जी की भक्ति में लोग रहे हैं और हनुमान जी की प्रतिमा प्रयोगल काल से घर में प्रतिष्ठित थी। उसी कड़ी में मेरे दादा (आशा) की इच्छानुसार उनकी मृत्यु के बाद पिता जी ने प्रभु हनुमान जी की नवीन ढंग से विघ्रह प्रतिमा की स्थापना का धर्मीश्वर प्रयास किया जिसे हनुमान जी ने सफल किया। १३ जून २००३ को अयोध्या के महात नृत्य गोपाल दास की उपस्थिति में हनुमान जी की विघ्रह प्रतिमा का आनावरण हुआ। हम लोगों पर पवनमुत की अनुपम कृपा सदैव बनी रहती है, भले ही हम लोगों को पात्रता कम हो। जीवन में मैं जब भी परेशान हुआ और परेशानी से निकलने का कोई रास्ता नजर नहीं आया तो मैं प्रभु हनुमान जी को जाद कर उनकी शरण में नला गया। किर भता ही नहीं चला कि मेरी परेशानी कब और कैसे दूर हो गयी। यहि जीवन का हर कार्य हनुमान जी या भगवान श्रीराम को समर्पित वर किया जाए तो उसको सफलता में संदेह नहीं रहता है। हर व्यक्ति को जीवन में कभी भी हनुमान जी को नहीं भूलना चाहिए। उनका नाम लेकर शुरू किये गये कार्य अपने आप पूरे हो जाते हैं। जीवन में कई बार ऐसे मौके आते हैं जब लगता है कि हनुमान जी खुद मनुष्य के रूप में आकर ऐसी सहायता कर देते हैं जो सनझ से परे होती है।

हनुमान जी की हमारे परिवार पर असीम अनुकंपा है : अपूर्व शंकर द्विवेदी



अपने परिवार के साथ अपूर्व शंकर द्विवेदी

I have been very thankful to my parents, for instilling religious sense into me

Abhist S. Dwivedi

For the longest time, my father has always asked me to play the Hanumat Kavach every morning when I start my car, and for the past 10 years, it is always the first thing that plays in the morning. For most of my life, I did this because it was an automatic reaction and did not really recognize its benefit.

Last year, I was driving home late at night in January and for some reason, still had the Hanumat Kavach playing in my car. It had been a couple of cold days and the roads were very slippery. I was going around a corner when I lost control of my car. Although I was travelling at only 30 miles per hour, I hit the curb very hard and smashed my car into the guard rail. My airbag popped and luckily I had my seat belt on so I didn't hit it that hard. When I stepped outside, I could see that the damage on the car was very severe, but then when I walked around, I felt nothing. No scratch, no bruises, absolutely nothing had happened to me.

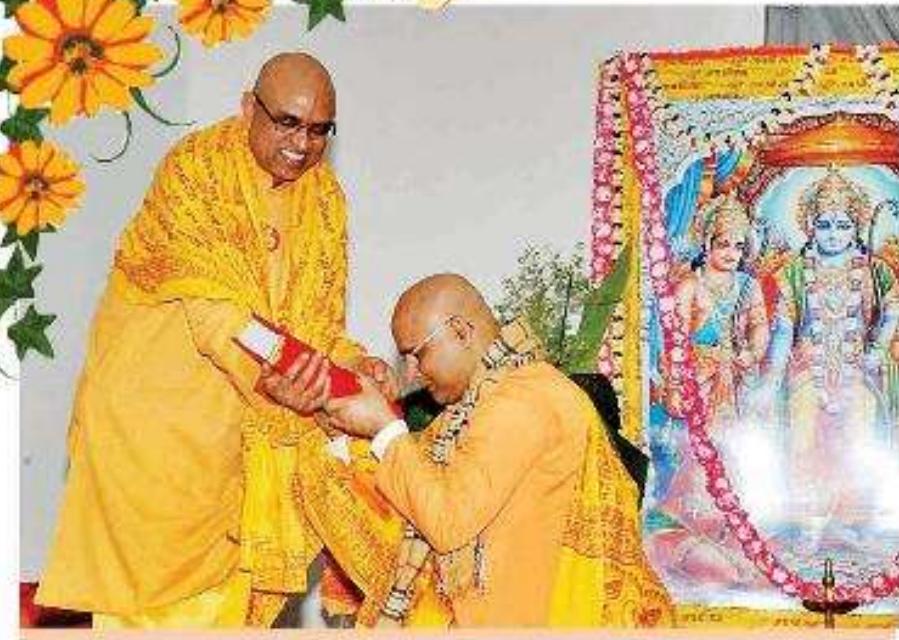
That incident made me realize just how lucky I was and how it was only through Hanuman Ji's blessing that I was able to make it out without any injuries. Since then I have been very thankful to my parents, for instilling this religious sense into me. Having grown up surrounded by religious teachings, it was difficult to balance that life with my everyday life. As I have

Having grown up surrounded by religious teachings, it was difficult to balance that life with my everyday life. As I have grown older though, I seem to have found that perfect balance where my religious and everyday life blend together seamlessly and am proud and thankful for it.



grown older though, I seem to have found that perfect balance where my religious and everyday life blend together seamlessly and am proud and thankful for it.





અનેરિલા કે ઇંકાગો સિહિ વિલખ નિશાજ મેં રમલવામી કે અયસ્સ પર ઝાંદિવાર 28 માર્ચ 2015 કો સુંદરલક્ષ્ણ નથાટ્ડ કા આદ્યોજન કિટા ગયા તિસરે બહુટ બધી સંદ્રભ ને ભાયોજનો દે ગાલ્ફ ગેતા છો. ઇંટરનેશનલ સોસાઈટી કાર્સ સિદ્ધુઅલ એઢ્વાન્જર્મેન્ટ (અઈસ્પેસસર) કી ઓર તે અસ્ટોરિઝન ઇન્સ્ટ્રુક્શન મેં ભાયોજનો કો સ્થાની ર રહાન્દ જી મહારાજ ઓર સ્થાને ગમન્દ જી સંસ્કૃતી કા આશીર્વાદ પ્રસ કુઆ. આદ્યોજન લો સફળ બનાને મે ઇંદ્ર ગ્રુ (દીક પ્રેણમ કો-અ ડેન્યેટ આઇએસસ), વંદા ડિગ્જન (ટીવી રાણી), જરાપ્રવાણ એમુ (આઇએસસ નેડ્ઝ મેનેજમેન્ટ), જેંજુ સ્મેશ જી (મ્હાયનાકુ), વિષાસાદ જી, પેની તી, સેંશ વંડ જી (યાશિંટન હંતી), અરૂપા જી (આઇએસસ), અલિલ અભિવાલ જી, સંચાટ શાના જી (લાઇવ ટેલીકાસ્ટ), પ્રીણ ગદ્દ (અનન સંગીત), રની જી (પ્રોગ્રામ સેકેર્ટરી), ઊરાંકન જી (નોંધ એર, મારત) ને વિશેષ સહયો દેલ્ય લટાકુમ લો સફળ બજાવા.



એમુ કા ગુણગાન કરતે
ગિરીશ ભટ્ટ

द्वादश त्रिपुरा



51



कार्यक्रम का सीधा प्रसारण
करती हुई टीवी एशिया की
प्रतिनिधि वंदना शिंगन



52



प्राप्ति दृष्टि



जिन्हे ढोलक के साथ
रामशत्रु प्रभु



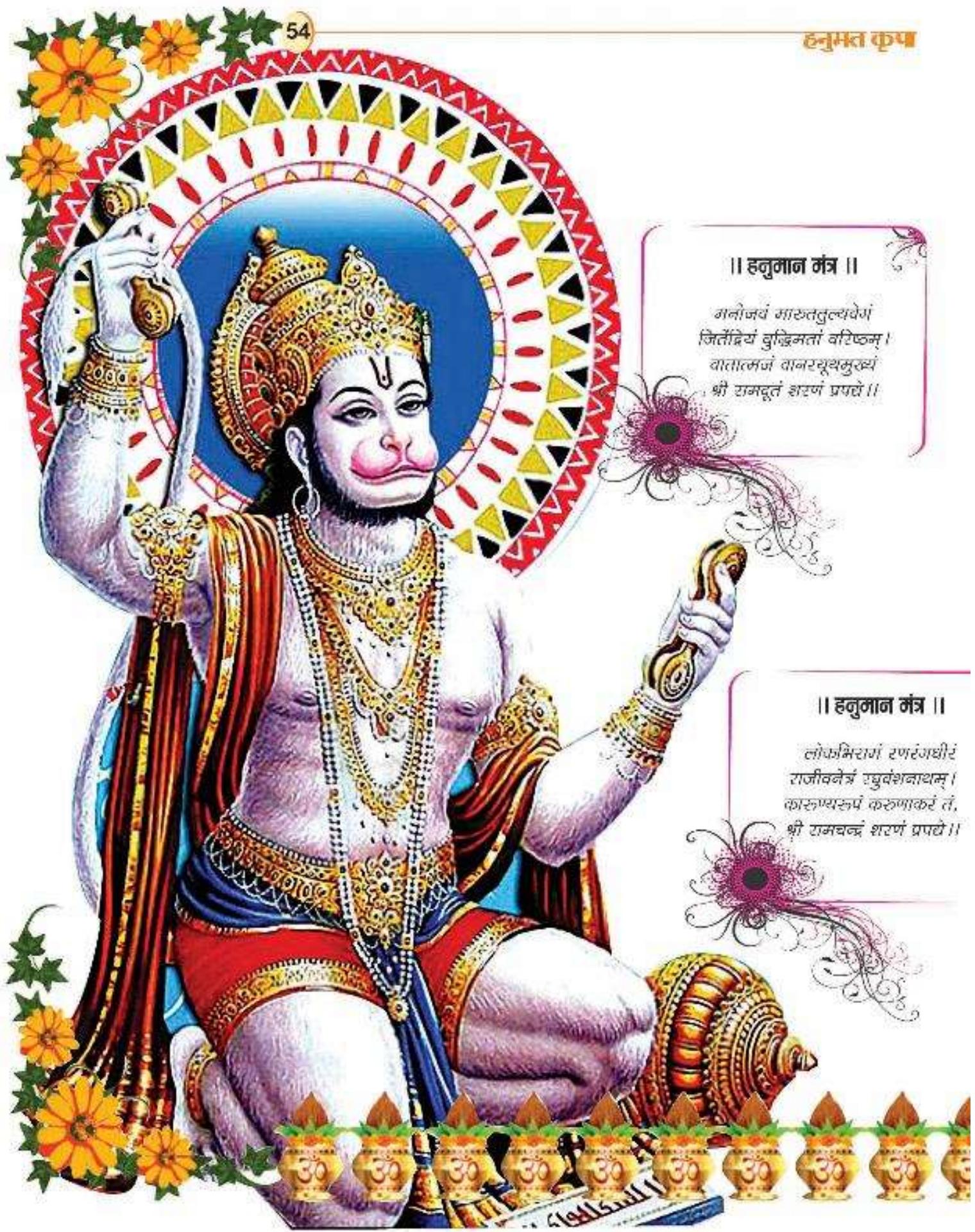


पुनु भवित में लील
जन्हीं करीन

स्वामी रामानंद जी का
साकाशकार करती टीवी एशिया
प्रतिनिधि वंदना शिंगल

दिन्दिय मिशन शिक्षागो में
मुंदरकाण्ड ला पाठ करने में
लीज भज्जग्ज





॥ हनुमान नंत्र ॥

गतोजवं मारुततुल्यवेगं
जितीद्रेष्यं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातालजं वानरवृथमुखं
श्री रामदूतं शरणं प्रपदे ॥

॥ हनुमान नंत्र ॥

तोषभिरागं रघुरंगधीरं
राजीवनेत्रं उद्भवंशकाथम् ।
कारुण्यस्तुपं करुणाकरं तं,
श्री रामचन्द्रं शरणं प्रपदे ॥

हनुमान चालीसा

॥ श्री हनुमते नमः ॥

दोहा

श्रीगुरु घरण स्तोज रज, निज मनु मुकुल सुधारि।
बरनउ रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल वारि॥
बुद्धिलीन तनु जानिके, सुमिरौ पवन कुमार।
बल बुद्धि विद्या देहु माहि, हरहु कलेस विकार॥

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहु लोक ऊगर॥
राम दूत अतुलित बल धामा। अंजनिपुत्र पवन सुत नामा॥
महावीर बिक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमिति के संगी॥
कंपन बरन बिराज सुबेसा। कानन कुंडल कुंधित केसा॥
हथ बज औ धजा बिराजै। काथे मूज जनेऊ साजै॥
संकर सुवन केसरीनंदन। तेज प्रताप महा जग बंदन॥
विद्यावान गुनी अति चारु। राम काज करिबे को आतुर॥
प्रभु चाहित्र सुनिबे को रसिया। राम लखन सीता मन बसिया॥
सूर्यम रूप धरि सियहि दिखावा। बिकट रूप धरि लंक जराव॥
गोम रूप धरि असुर संहरे। रामचंद्र के काज संवारे॥
लाय सजीवन लखन जियाये। श्री रघुबीर हरषि उट लाये॥
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ई। तुम मन प्रिय भरत सम भाई॥
सहस बदन तुम्हरो जस गावै। अस कहि श्रीपति कंठ लगावै॥
सजनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा। नारद सारद सहित अहीसा॥
जम कुबेर दिगपाल जहां ते। कबि कोविद कहि सके कहां ते॥
तुम उपकार सुवीकहि कीन्हा। राम मिलाय राज पट दीन्हा॥
तुम्हरो गंत्र बिमीषन माना। लंकेस्वर मये सब जग जाना॥
जुग सहस जोजन पर भानू। लील्यो ताहि मधुर फल जानू॥
प्रभु गुद्रिका गेलि मुख गाही। जलधि लाधि गये अवरज नाही॥

दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते॥
राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे॥
सब सुख लहै तुम्हारी सरना। तुम रछक काहू को डर ना॥
आपन तेज सम्हारो आपै। तीनों लोक लंक ते कापै॥
भूत पिसाच निकट नहिं आपै। महावीर जब नाम सुनावै॥
नासै रोग है सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा॥
संकट ते हनुमान लुड़ावै। मन क्रम वरन ध्यान जो लावै॥
सब पर राम तपस्वी राजा। तिन के काज सकल तुम साजा॥
और मनोरथ जो कोइ लावै। सोई अमित जीवन फल पावै॥
चारों जुग परताप तुम्हारा। है परसिद्ध जगत उजियारा॥
साधु संत के तुम रखवारे। असुर निकंदन राम दुलारे॥
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता। अस बर दीन जानकी माता॥
राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहे रघुपति के दासा॥
तुम्हरे भजन राम को पावै। जनम जनम के दुख बिसरावै॥
अंत काल रघुबर पुर जाई। जहां जन्म हरि भवत कहाई॥
और देवता पित न धर्दई। हनुमत सेइ सर्व सुख कर्दई॥
संकट कटै मिटै सब पीरा। जो सुमिरौ हनुमत बलबीरा॥
जै जै जै हनुमान गोसाई। कृपा करहु गुरु देव की नाई॥
जो शत बार पाठ कर कोई। छूटे बदि महा सुख होई॥
जो यह पढ़े हनुमान चलीसा। होय सिद्धि सार्वी गौरीसा॥
तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय मंह डेरा॥

दोहा

पवनतनय संकट हटन, मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप॥

लियावर रामचंद्र भज जय क्षरण सीताराम
श्री राम जय राम जय जय राम।



संकट मोचन हनुमान अष्टक

बाल समय रवि भक्षि लियो तब, तीनहुं लोक भयो अधियारो।
 ताहि सो त्रास भयो जग को, यह संकट काहु सों जात न टारो॥

देवन आनि करी बिनती तब, छाड़ि दियो रवि कष्ट निवारो।
 को नहि जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो॥

बालि की त्रास कपीस बसै गिरि, जात महाप्रभु पंथ निहारो।
 धौकि कहामुनि साप दियो तब, चाहिए कौन बिघार बिघारो॥

कै दिज रूप लिवाय महाप्रभु, सो तुम दास के सोक निवारो।
 को नहि जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो॥

अंगद के संग लेन गए सिय, खोज कपीस यह बैन उचारो।
 जीवत ना बघिही हम सो जु, बिना सुधि लाये इहाँ पगु धारो॥

हेरि थके तट सिन्धु सबै तब, लाय सिया-सुधि प्राज उचारो।
 को नहि जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो॥

रावन त्रास दई सिय को सब, राक्षसि सो कहि सोक निवारो।
 ताहि समय हनुमान महाप्रभु, जाय महा रजनीधर मारो॥

चाहत सीय असोक सो आगि सु, दै प्रभु गुदिका सोक निवारो।
 को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो॥

बान लग्यो उट लछिमन के तब, प्राण तजे सुत रावन मारो।
 लै गृह बैद्य सुषेन समेत, तबै गिरि द्रोन सु बीर उपारो॥

आनि संजीवन हाथ दई तब, लछिमन के तुम प्राज उचारो।
 को नहि जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो॥

रावन जुद्ध अजान कियो तब, नाग कि फौस सबै सिर डारो।

श्रीरघुनाथ समेत सबै दल, मोह भयो यह संकट भारो।
 आनि खगेस तबै हनुमान जु, बधन काटि सुत्रास निवारो।
 को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो॥

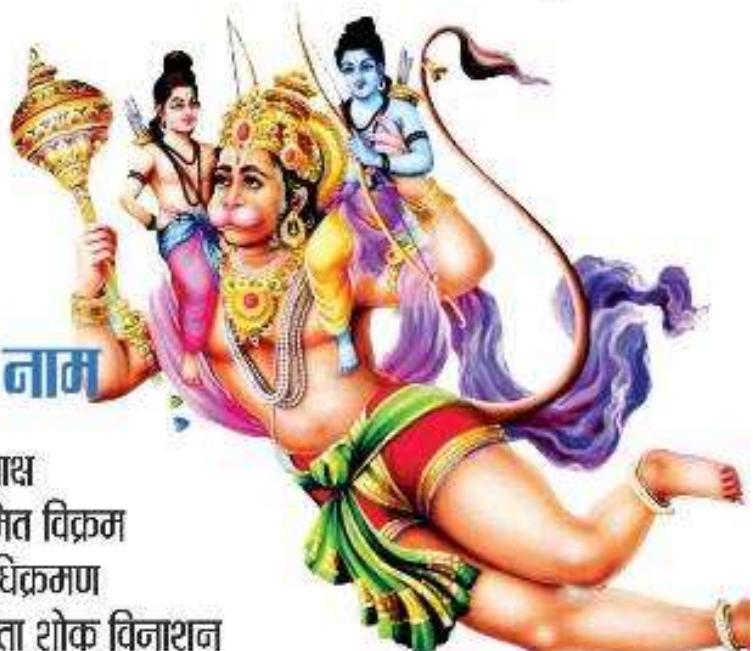
बधु समेत जबै अहिरावन, लै रघुनाथ पताल सिधारो।
 देविहि पूजि भलि विधि सो बलि, देउ सबै मिलि मन्त्र विधारो।
 जाय सहाय भयो तब ही, अहिरावन सैन्य समेत सहारो॥

को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो॥

काज किये बड़ देवन के तुम, बीर महाप्रभु देखि बिघारो।
 कौन सो संकट गोर गरीब को, जो तुमसे नहिं जात है टारो।
 बेगि हरो हनुमान महाप्रभु, जो कलु संकट होय हमारो।
 को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो॥

दोहा

लाल देह लाली लसे, अरु धरि लाल लंगूर।
 वज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपि सूर॥



हनुमान जी के 12 चमत्कारी नाम

- | | |
|-------------------|---------------------------|
| 1 : ॐ हनुमान | 7 : ॐ पिंगाथ |
| 2 : ॐ अंगनी सुत | 8 : ॐ अमित विक्रम |
| 3 : ॐ वायुपुत्र | 9 : ॐ उदधिक्रमण |
| 4 : ॐ महाबल | 10 : ॐ सीता शोक विनाशन |
| 5 : ॐ रामेष्ट | 11 : ॐ लक्ष्मण प्राण दाता |
| 6 : ॐ फाल्गुण सखा | 12 ॐ दशग्रीव दर्पहा |



"Hanuman Chalisa" computes this distance with great simplicity.

जुग सहस्र योजन पर भानु / लील्या
ताहि मधुर कल जानु ॥

This means that Sun ('पर्व') is at a distance of Jug Sahasra Yojans (जुग सहस्र योजन - Distance Unit in Hindi)

According to following conversion practices that are in use as per Hindu Vedic Literature-

1 Jug = 12000 Year

1 Sahasra= 1000

1 Yojan = 8 Miles

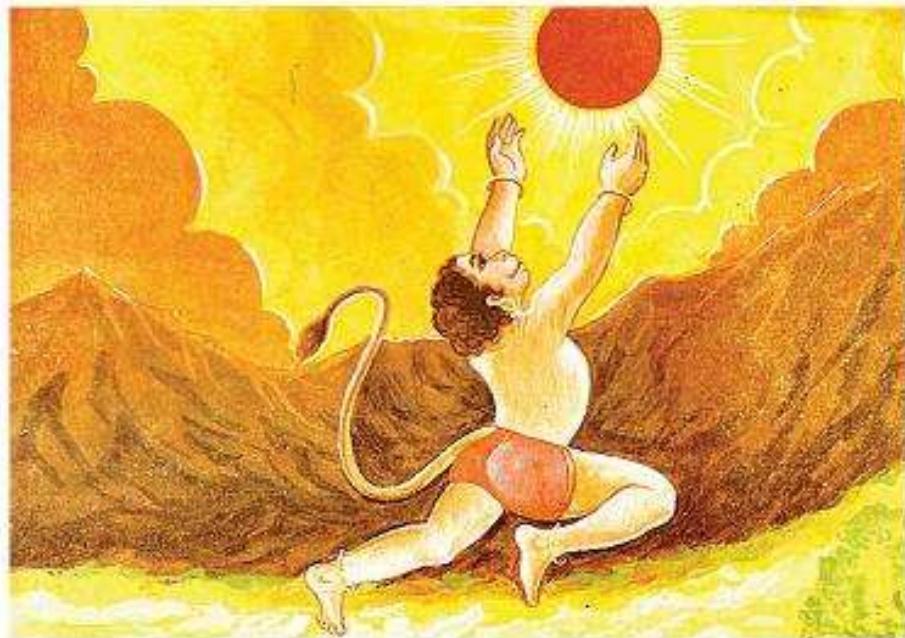
Thus $12000 \times 1000 \times 8 = 96,000,000$ miles

1 mile = 1.6 kms

This further implies that distance is $96,000,000 \times 1.6$ kms = 153,600,000 Kms..

Hanuman chalisa was written by Goswami Tulsidas (born 15th century) in Awadhi language who belongs to 15th century. which means the distance between Sun and earth has been calculated much more accurately than the 17th century scientists even before 2 centuries. The Question here is not how Tulsidas calculated this distance or how he came to know about this distance. But what we have to observe is the people of that age have more knowledge, capabilities and much more advanced that is beyond the imagination of our present day technologies.

History is not presented to us in a way it should be. There are still many elements and precious jewels of information that are being kept hidden from us. Ocean of history is before you, dive in and dig the jewels out. The gleaming beam of knowledge from these jewels will not only enrich our country but will also keep bestowing direction to our future generations. We hope that this post will help you to understand the significance of our ancient principles, technology and culture.

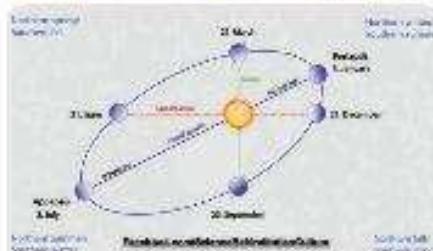


According to Modern Astronomy and Science, we know that the earth's orbit around the sun is not a circle and is slightly elliptical. Therefore, the distance between the earth and the sun varies throughout the year.

At its nearest point on the ellipse that is the earth's orbit around the sun, the earth is 91,445,000 miles (147,166,462 kms) from the sun. This point in the earth's orbit is known as Periapsis (perihelion) and it occurs around January 3.

The earth is farthest away from the sun around July 3 when it is 94,555,000 miles (152,171,522 km) from the sun. This point in the earth's orbit is called Apoapsis (aphelion).

The average distance from the earth to the sun is 92,955,807 miles



(149,597,870.691 km).

According to Records, For the first time in 1672, Jean Richer and Giovanni Domenico Cassini measured the distance between Earth and Sun as 22,000 times of Earth Radius.(Earth's Radius is 6,371 Kms). i.e 22000×6371 kms = 140,162,000 kms (140 Million Kms).

Two lines of Hindu Prayer"



स्वामी रामबली सरस्वती की प्रेरणा से कई व्यक्ति ही नहीं बल्कि पूरे के पूरे परिवार हनुमत भक्ति में रहे हैं। सुलतानपुर में ऐसा ही एक परिवार स्वतंत्रता सेनानी और पूर्व विद्यायक पं. रामबली मिश्र का है जो हनुमतपुरम के मंदिर के प्रति पूर्ण समर्पण का भाव रखता है। प्रति वर्ष हनुमान जयंती पर मंदिर प्रांगण में विशाल धार्मिक आयोजन इस परिवार की ओर से होता है। वास्तव में इस परिवार को नर और नारायण की सेवा के संस्कार विरासत में मिले हैं। पं. रामबली मिश्र के पुत्र योगेंद्र प्रताप मिश्र के साथ डॉ. रमाशंकर द्विवेदी की बड़ी बहन कमला मिश्र का विवाह हुआ है।

पं. रामबली मिश्र का जन्म विधानसभा क्षेत्र धनपतरांज के ग्राम मायांग में २० सितंबर १९११ को पं. गोकुल प्रसाद मिश्र के घर हुआ था। पंडित जी तीन धाई बहनों में सबसे छोटे थे। वे छात्र जीवन से ही मेधावी और प्रतिभावान थे। पिता का साया पांच साल की उम्र में ही उठ गया था लेकिन परिवार ने उनकी पढ़ाई-लिखाई पर कुप्रभाव नहीं पड़ने दिया और हाइस्कूल तक शिक्षा ग्रहण की। उसी दौरान भारत माता को आजादी दिलाने के लिए आंदोलन चरम पर था। पं. रामबली मिश्र भी छोटी सी उम्र में १९२६ में इस आंदोलन में कूद पड़े। १९३२ में विकासनी का नेतृत्व करते हुए जगदीशपुर में लगानबंदी की अगुवाई की। १९३६ में निकटनीरा याक़ी जो कि बत्तमान में नगरपालिका भवन है, उस पर लगे अंग्रेजी झंडे को उतार कर पं. रामबली मिश्र ने तिरंगा फहराया था। परिणाम स्वरूप अपने १६ साथियों के साथ गिरफ्तार कर लिए गये। उन्हीं दिनों उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण की थी। आप १९४२ से १९४६ तक सेंट्रल जैल नैनी में नजरबंद रहे। उस दौरान पंडित जी का पूरा परिवार अंग्रेजों की यातना का शिकार

पं. रामबली मिश्र : नर सेवा नारायण सेवा रहा मूल मंत्र

होता रहा। कई बार उन्हें जैल में ढाला गया। उन्होंने जैल में डॉम्हर विशाल धार्मिक आयोजन इस परिवार की ओर से होता है। वास्तव में इस परिवार को नर और नारायण की सेवा के संस्कार विरासत में मिले हैं।

पं. रामबली मिश्र के पुत्र योगेंद्र प्रताप मिश्र के साथ डॉ. रमाशंकर द्विवेदी की बड़ी बहन कमला मिश्र का विवाह हुआ है। पंडित जी तीन धाई बहनों में सबसे छोटे थे। वे छात्र जीवन से ही मेधावी और प्रतिभावान थे। पिता का साया पांच साल की उम्र में ही उठ गया था लेकिन परिवार ने उनकी पढ़ाई-लिखाई पर कुप्रभाव नहीं पड़ने दिया और हाइस्कूल तक शिक्षा ग्रहण की। उसी दौरान भारत माता को आजादी दिलाने के लिए आंदोलन चरम पर था। पं. रामबली मिश्र भी छोटी सी उम्र में १९२६ में इस आंदोलन में कूद पड़े। १९३२ में विकासनी का नेतृत्व करते हुए जगदीशपुर में लगानबंदी की अगुवाई की।

१९३६ में निकटनीरा याक़ी जो कि बत्तमान में नगरपालिका भवन है, उस पर लगे अंग्रेजी झंडे को उतार कर पं. रामबली मिश्र ने तिरंगा फहराया था। परिणाम स्वरूप अपने १६ साथियों के साथ गिरफ्तार कर लिए गये। उन्हीं दिनों उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण की थी। आप १९४२ से १९४६ तक सेंट्रल जैल नैनी में नजरबंद रहे। उस दौरान पंडित जी का क्षेत्र में एरो कंपनी का वाहन भर उनका आशियाना रहा। पंडित जी के पुत्र योगेंद्र प्रताप मिश्र उनके हैं जिनकी जब उनके परिवार के लोग उनसे पकान न होने की बात कहते हो वह कह कर ठाल जाते थे कि

पास घास फूस की झोपड़ी भी नहीं है। पहले उनका मकान बनेगा, तब अपना नम्बर दिए ताकि उनका हौसला हूट जाए लेकिन पं. रामबली मिश्र जूके नहीं। १९४७ में देश आजाद होने के बाद पिपरगांव क्षेत्र से जिला पंचायत सदस्य चुने गए।

१९४८ में विधायक मनोनीत हुए।

स्वतंत्र भारत के प्रथम चुनाव १९५२ में वे नूलतानपुर पूर्व से जीते। फिर १९६२ और १९६७ में इसी तो विधानसभा क्षेत्र से विधायक रहे। इन्होंने लाले समय तक विधायक रहते हुए भी जीवनभर वे अति याधारण व्यक्ति की तरह रहे। पुराने खपैल व छप्पर का वही पैतृक दूध फूटा पकान

हनुमान जयंती पर प्रति वर्ष सिद्ध श्री संकटमोहन हनुमान मंदिर पीठ में विशेष धार्मिक कार्यक्रम आयोजित करता है मिश्र परिवार है। २८ अगस्त १९८० को पंडित जी के असाधारण निधन से जीवन भर उनका आशियाना रहा। पंडित जी के इस क्षेत्र में जो शून्य पैदा हुआ वह आज तक नहीं भरा जा सका है। हालांकि उनके परिवार के सदस्य उसी तरह समाज सेवा में लगे हैं और उनके द्वारा दिखाए मार्ग का अनुसरण कर रहे हैं।



1911-1980



हनुमान जयन्ती पर मंदिर में सपरिवार हवनपूजन करते हुए योगेन्द्र प्रताप मिश्र माथेंग

सुलतानपुर



हनुमान जयन्ती में पूरी हुई लाइका।
द्वारांगबली को नमन करते एवं
(आए से) रजन सिंह, डॉ. अनुप यादवी,
ज्ञेश दंडेहार, अनित मिश्र

